



हिंदी कोर (विषय कोड - 302)

सत्र- 2026-2027

कक्षा ग्यारहवीं

विद्यार्थी सहायक सामग्री

STUDENT SUPPORT MATERIAL



क्षेत्रीय कार्यालय आगरा संभाग, आगरा



संरक्षक

श्रीमती इंदिरा मुद्गल, उपायुक्त, क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा संभाग

सह –संरक्षक

श्रीमती रानी डांगे, सहायक आयुक्त, क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा संभाग

श्री राजकुमार, सहायक आयुक्त, क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा संभाग

समन्वयक

श्री उपेन्द्र कुमार, प्राचार्य, पीएम श्री के०वि०न० 3 आगरा छावनी

श्री मुकेश शर्मा, उपप्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय बुलंदशहर, प्रथम पाली

संपादक मंडल

डॉ वेदप्रकाश गर्ग, स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी,

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय कमला नेहरू नगर गाजियाबाद (प्रथम पाली)

श्री राजेश कुमार, केन्द्रीय विद्यालय झांसी क्रमांक 03

श्री राजेश कुमार मीना, केन्द्रीय विद्यालयक मथुरा छावनी

सहायक सामग्री निर्माण कर्ता सूची

क्रम संख्या	शिक्षकों के नाम श्री/श्रीमती	पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय	सामग्री
1.	श्रीमती पूनम गुप्ता	बुलंदशहर शिफ्ट 1	कबीर, मीराबाई
2.	श्रीमती नविता मीना	के.वि. क्रमांक 3 आगरा छावनी	रजनी, पत्रकारिता के विभिन्न आयाम
3.	श्री प्रेमीचंद शर्मा	हजरतपुर	नमक का दारोगा, चंपा नमक का चीन्हाती
4.	श्री चूड़ामणि	ललितपुर	मियाँ नसीरुद्दीन, लता मंगेशकर
5.	श्रीमती गीता रानी	बुलंदशहर शिफ्ट 2	औपचारिक पत्र लेखन
6.	श्री अमरपाल सिंह	बबीना कैंट	अप्पू के साथ ढाई साल
7.	श्रीमती मृदु त्रिपाठी	झांसी कैंट 1	विदाई संभाषण
8.	श्री हीरालाल	हाथरस	गलता लोहा
9.	श्रीमती अर्चना	मुजफ्फरनगर, प्रथम पाली	डायरी लेखन, कथा पटकथा स्ववृत्त लेखन
10.	श्री हरि ओम	एन.टी.पी.सी दादरी	घर की याद
11.	श्रीमती सूर्या अग्रवाल	एटा	अपठित गद्यांश एवं पद्यांश
12.	श्रीमती अमिता सलोनिया	मुजफ्फरनगर, द्वितीय पाली	गजल, आओ मिलकर बचाएँ
13.	श्री पवन कुमार समीर	अलीगढ़	राजस्थान की रजत बूँदें
14.	श्री शिवराम मीणा	मुरादाबाद	रोजगार संबंधी आवेदन पत्र, शब्दकोश

15.	श्री उमेश कुमार शर्मा	चांदीनगर	कार्यालय लेखन, प्रतिवेदन, परिपत्र, प्रेस विज्ञप्ति, कार्यवृत्त
16.	श्रीमती शोभा रानी	क्रमांक 3 आगरा छावनी	जामुन का पेड़, हे भूख मत मचल
17.	श्री ओमवीर	ए.एफ. एस हिंडन नंबर-2	सबसे खतरनाक
18.	श्रीमती पूनम त्यागी	सूरजपुर	आलो आँधारि
19.	श्री बी एन मिश्रा	ग्रेटर नोएडा	प्रतिदर्श प्रश्न पत्र सेट. 1
20.	श्री संजय कुमार सिंह	के.वि. सरसावा	प्रतिदर्श प्रश्न पत्र सेट -2
21.	श्री राजेश कुमार	झांसी कैंट 3	वृत्ति संशोधक: पठित -अपठित गद्यांश एवं पद्यांश
22.	श्री राजेश कुमार मीना	मथुरा कैंट	वृत्ति संशोधन: वितान, अभिव्यक्ति और माध्यम
23.	श्री वेद प्रकाश गर्ग	के. एन. एन. गाजियाबाद - प्रथम पाली	संकलनकर्ता

विषय सूची

क्रम संख्या	पाठ विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	मुख्य पृष्ठ आदि	01-06
2.	पाठ्यक्रम विनिर्देशन	07-08
3.	अपठित बोध (गद्य)	09-19
4.	अपठित बोध (पद्यांश / काव्य)	20-30
	अभिव्यक्ति और माध्यम	
1.	पाठ-1 जनसंचार माध्यम	31-35
2.	पाठ-2 पत्रकारिता के विभिन्न आयाम	36-38
3.	पाठ-9 डायरी लेखन	39-41
4.	पाठ-10 कथा पटकथा	42-44
5.	पाठ- 14 कार्यालय लेखन, प्रतिवेदन परिपत्र, प्रेस विज्ञप्ति, कार्यवृत्त	45-50
6.	पाठ- 15 स्ववृत्त लेखन, रोजगार संबंधी आवेदन पत्र	51-64
7.	पाठ- 16 शब्दकोश	65-68
	आरोह भाग-1 (गद्य खंड)	
1.	नमक का दरोगा- प्रेमचंद	69-83
2.	मियाँ नसीरुद्दीन- कृष्णा सोबती	84-87
3.	अपू के साथ ढाई साल - सत्यजित राय	88-93
4.	विदाई संभाषण - बालमुकुंद गुप्त	94-98
5.	गलता लोहा- शेखर जोशी	99-103
6.	रजनी- मन्नू भंडारी	104-108
7.	जामुन का पेड़ - कृष्णचंदर	109-115
8.	भारत माता- जवाहरलाल नेहरू	116- 119
	आरोह भाग-1 (काव्य खंड)	
1.	हम तौ एक एक करि जाना (पद-1) कबीर	120-124
2.	मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई (पद-1) मीरा	125-129
3.	घर की याद- भवानी प्रसाद मिश्र	130-140
4.	चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती -त्रिलोचन	141- 148
5.	गजल - दुष्यंत कुमार	149- 152
6.	हे भूख मत मचल, हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर- अक्क महादेवी	153- 157
7.	सबसे खतरनाक - अवतार सिंह संधू	158- 170
8.	आओ, मिलकर बचाएँ - निर्मला पुतुल	171- 174
	पूरक पाठ्य पुस्तक वितान भाग-1	
1.	भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ लता मंगेशकर -कुमार गंधर्व	175- 178
2.	राजस्थान की रजत बूँदें- अनुपम मिश्र	179- 183
3.	आलो आँधारि -बेबी हालदार	184- 189
	आदर्श प्रश्नपत्र	190- 205

हिंदी (आधार)
विषय कोड - 302
कक्षा 11वीं (2026-27)
परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

- प्रश्न - पत्र तीन खण्डों - खंड- क, ख और ग में होगा।
- खंड- क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे। सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।
- खंड- ख में अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे।
- खंड- ग में आरोह भाग - 1 एवं वितान भाग - 1 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे।

भारांक-80

निर्धारित समय - 03 घंटे

वार्षिक परीक्षा हेतु भार विभाजन

	खंड-क (अपठित बोध)	18 अंक
1	01 अपठित गद्यांश (लगभग 250 शब्दों का) पर आधारित बोध, चिंतन, विश्लेषण पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। (बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक x 03 प्रश्न = 03 अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 1 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 3 प्रश्न = 6 अंक)	10 अंक
2	01 अपठित पद्यांश (लगभग 100 शब्दों का) पर आधारित बोध, सराहना, सौंदर्य, चिंतन, विश्लेषण आदि पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। (बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक x 03 प्रश्न = 03 अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 01 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 02 प्रश्न = 04 अंक)	08 अंक
	खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर) पाठ संख्या 1, 2, 9, 10, 14, 15 तथा 16 पर आधारित	22 अंक
3	दिए गए 03 अप्रत्याशित विषयों में से किसी 01 विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (06 अंक x 01 प्रश्न)	06 अंक
4	औपचारिक पत्र लेखन। (विकल्प सहित) (05 अंक x 01 प्रश्न)	05 अंक
5	पाठ संख्या 1, 2, 9, 10, 14, 15 तथा 16 पर आधारित 04 प्रश्न (विकल्प सहित) (02 अंक x 04 प्रश्न = 8 अंक) (लगभग 40 शब्दों में), (03 अंक x 01 प्रश्न = 3 अंक) (लगभग 60 शब्दों में)	11 अंक

-

	खंड- ग (आरोह भाग - 1 एवं वितान भाग-1 पाठ्य पुस्तकों के आधार पर)	40 अंक
6	पठित काव्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक x 05 प्रश्न)	05 अंक
7	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक x 02 प्रश्न)	06 अंक
8	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
9	पठित गद्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक x 05 प्रश्न)	05 अंक
10	गद्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक x 02 प्रश्न)	06 अंक
11	गद्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
12	वितान के पाठों पर आधारित 03 में से 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (05 अंक x 02 प्रश्न)	10 अंक
13	(अ) श्रवण तथा वाचन (ब) परियोजना कार्य	10+10 = 20 अंक
कुल अंक		100 अंक

निर्धारित पाठ्यपुस्तकें :

1. आरोह, भाग-1, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
2. वितान भाग-1, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
3. अभिव्यक्ति और माध्यम, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

नोट - पाठ्यक्रम के निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं ।

आरोह भाग - 1	काव्य खंड	• कबीर (पद 2) - संतो देखत जग बौराना • मीरा (पद 2) - पग घुंगरू बांधि मीरा नाची • रामनरेश त्रिपाठी - पथिक (पूरा पाठ) • सुमित्रानंदन पंत - वे आँखें (पूरा पाठ)
	गद्य खंड	• कृष्णनाथ - स्पीति में बारिश (पूरा पाठ) • सैयद हैदर रज़ा - आत्मा का ताप (पूरा पाठ)

अपठित बोध

(गद्य)

अभ्यास

अपठित गद्यांश - 1

निम्नलिखित अपठित अंशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे पूछे प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

दुनिया इस समय एक अजीब दौर से गुजर रही है। कहीं युद्ध चल रहे हैं, कहीं युद्ध की तैयारी है और कहीं बिना युद्ध के भी सब कुछ प्रभावित हो रहा है। पहले ऐसा माना जाता था कि अगर बाजार खुला रहेगा तो अर्थव्यवस्था चलती रहेगी। हालांकि अब यह भरोसा कमजोर पड़ रहा है, क्योंकि आज का संकट केवल व्यापार का नहीं है, बल्कि सप्लाई, सुरक्षा और भरोसे का भी है। ऐसे समय में भारत को यह समझना होगा कि वह सिर्फ एक बड़ा बाजार बनकर आगे नहीं बढ़ सकता। तब तो और नहीं जब बाजार एक ताकत के कब्जे में रहे। इससे अर्थव्यवस्था कभी भी डगमगा सकती है। भारत केवल एक बड़ा उपभोक्ता देश बनता जा रहा है। हमारे पास युवा आबादी है, तेजी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था है और दुनिया की बड़ी कंपनियों के लिए एक बड़ा बाजार है, लेकिन क्या केवल उपभोक्ता बनकर कोई देश मजबूत बन सकता है? अगर उत्पादन, तकनीक, ऊर्जा और अन्य जरूरी संसाधनों के मामले में हमारी बाहरी निर्भरता बनी रहेगी तो थोड़ी सी वैश्विक हलचल भी हमें हिला सकती है और इसका उदाहरण आज हमारे सामने है।

युद्धों का सबसे पहले असर ऊर्जा पर पड़ता है। तेल और गैस की कीमतें बढ़ती हैं। सप्लाई में रुकावट आती है। इसका प्रभाव आम आदमी की जेब पर पड़ता है, लेकिन संकट यहीं खत्म नहीं होता। एक और बड़ा खतरा है डिजिटल ढांचे का। आज हमारी जिंदगी का बड़ा हिस्सा इंटरनेट, डाटा और क्लाउड पर टिका है। बैंकिंग से लेकर सरकारी सेवाएं, पढ़ाई से लेकर व्यापार सब कुछ डिजिटल हो चुका है। ऐसे में अगर युद्ध के कारण डाटा सेंटर प्रभावित होते हैं, इंटरनेट के रास्ते बाधित होते हैं या साइबर हमले बढ़ते हैं, तो पूरी व्यवस्था ठप हो सकती है। स्वास्थ्य सेवाएं भी इससे अछूती नहीं हैं। हम अक्सर सोचते हैं कि अस्पताल केवल डाक्टर और दवाओं से चलते हैं, लेकिन सच यह है कि वे वैश्विक सप्लाई चेन पर निर्भर होते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. वर्तमान समय को गद्यांश में किस रूप में बताया गया है?

- (क) शांतिपूर्ण दौर
- (ख) अजीब और संकटपूर्ण दौर
- (ग) विकास का स्वर्णकाल
- (घ) केवल आर्थिक उन्नति का समय

उत्तर: (ख) अजीब और संकटपूर्ण दौर

2. डिजिटल ढांचे में सबसे बड़ा खतरा क्या है?

- (क) बिजली की कमी
- (ख) साइबर हमले और डेटा बाधा
- (ग) जनसंख्या वृद्धि
- (घ) परिवहन की समस्या

उत्तर: (ख) साइबर हमले और डेटा बाधा

3. अस्पताल किस पर निर्भर होते हैं?

(क) केवल डॉक्टरों पर

(ख) केवल दवाओं पर

(ग) वैश्विक सप्लाई चेन पर

(घ) केवल मशीनों पर

उत्तर: (ग) वैश्विक सप्लाई चेन पर

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

4. भारत की सबसे बड़ी ताकत क्या बताई गई है?

उत्तर: भारत की सबसे बड़ी ताकत उसकी युवा आबादी और तेजी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. वर्तमान वैश्विक संकट की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर: वर्तमान वैश्विक संकट केवल व्यापार तक सीमित नहीं है, बल्कि सप्लाई चेन, सुरक्षा, ऊर्जा और आपसी भरोसे से भी जुड़ा हुआ है।

6. युद्ध का आम आदमी पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: युद्ध के कारण ऊर्जा और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कीमतें बढ़ जाती हैं, जिससे महंगाई बढ़ती है और आम आदमी की जेब पर सीधा असर पड़ता है।

7. भारत को मजबूत बनने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर: भारत को उत्पादन, तकनीक, ऊर्जा और आवश्यक संसाधनों में आत्मनिर्भर बनना चाहिए, ताकि बाहरी निर्भरता कम हो और देश अधिक सशक्त बन सके।

अपठित गद्यांश - 2

निम्नलिखित अपठित अंशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे पूछे प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनन्द नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता है, जो दूसरों के पास हैं। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके हृदय पर दंश मारते रहते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर, ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पड़ती है। ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निन्दा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही बुरे किस्म का निन्दक भी होता है। दूसरों की निन्दा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार, दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों से गिर जायेंगे और जो स्थान रिक्त होगा, उस पर मैं अनायास ही बैठा दिया जाऊँगा।

मगर ऐसा न आज तक हुआ है और न होगा। दूसरों को गिराने की कोशिश तो अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती। एक बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निन्दा से नहीं गिरता। उसके पतन का कारण सद्गुणों का हास होता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दूसरों की निन्दा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाए तथा अपने गुणों का विकास करे।

ईर्ष्या का काम जलाना है, मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी ऐसे बहुत-से लोगों को जानते होंगे, जो ईर्ष्या और द्वेष की साकार मूर्ति हैं और जो बराबर इस फिक्क में लगे रहते हैं कि कहाँ सुननेवाला मिले और अपने दिल का गुबार निकालने का मौका मिले। श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक-एक काण्ड इस ढंग से सुनाते हैं, मानो विश्व-कल्याण को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं हो।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. ईर्ष्या का “अनोखा वरदान” किसे कहा गया है?

(क) सुख देना

(ख) दूसरों से प्रेम करना

(ग) अपनी वस्तुओं से आनंद न लेना और दूसरों की वस्तुओं से दुःख पाना

(घ) मेहनत करना

उत्तर: (ग) अपनी वस्तुओं से आनंद न लेना और दूसरों की वस्तुओं से दुःख पाना।

2. ईर्ष्यालु मनुष्य किससे दुःखी रहता है?

(क) अपनी सफलता से

(ख) दूसरों की वस्तुओं से

(ग) अपने मित्रों से

(घ) प्रकृति से

उत्तर: (ख) दूसरों की वस्तुओं से।

3. निन्दा करने का मुख्य उद्देश्य क्या बताया गया है?

(क) दूसरों की सहायता करना

(ख) दूसरों को गिराकर स्वयं ऊपर उठना

(ग) समय बिताना

(घ) ज्ञान बढ़ाना

उत्तर: (ख) दूसरों को गिराकर स्वयं ऊपर उठना।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

4. उन्नति के लिए क्या आवश्यक बताया गया है?

उत्तर: चरित्र को निर्मल बनाना और गुणों का विकास करना।

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. ईर्ष्यालु व्यक्ति को अपनी वस्तुओं से आनंद क्यों नहीं मिलता?

उत्तर: क्योंकि वह हमेशा अपनी तुलना दूसरों से करता है और अपने अभावों पर ध्यान देता है, जिससे वह अपनी वस्तुओं का आनंद नहीं ले पाता।

6. मनुष्य का वास्तविक पतन किससे होता है?

उत्तर: मनुष्य का वास्तविक पतन उसके सद्गुणों के नष्ट होने से होता है।

7. गद्यांश में “ग्रामोफोन” शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है?

उत्तर: यह दिखाने के लिए कि ईर्ष्यालु व्यक्ति अवसर मिलते ही लगातार दूसरों की निन्दा करता रहता है, जैसे ग्रामोफोन बिना रुके बजता रहता है।

अपठित गद्यांश - 3

निम्नलिखित अपठित अंशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे पूछे प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

हर सफल संस्था की रीढ़ ईमानदार और परिश्रमी लोगों से बनती है। किसी दफ्तर, विद्यालय या शासन व्यवस्था की गाड़ी उन गिने-चुने लोगों के श्रम, निष्ठा और जिम्मेदारी से चलती है, जो अपने कर्तव्य को धर्म समझते हैं। ऐसे लोग बिना किसी पुरस्कार या प्रशंसा की अपेक्षा के अपने हिस्से का काम पूर्ण मनोयोग से करते हैं। इन्हीं लोगों के परिश्रम के कारण ही कई छोटे सिक्के भी सहजता से चल जाते हैं। वे जानते हैं कि संस्था की साख इन ईमानदार लोगों से बनी है, इसलिए छोटे कर्मचारियों के दोष उसी उज्ज्वल साख की परछाई के पीछे छिप जाते हैं।

एक कहावत है कि छोटे सिक्के खरे सिक्कों की आड़ में चल पाते हैं। यह तथ्य केवल बाजार या मुद्रा तक सीमित नहीं, यह तो जीवन के हर क्षेत्र में लागू होती है। यहाँ असंख्य खरे सिक्के भी हैं, ईमानदार, कर्मठ, जिम्मेदार कर्मचारी, पर इनको अक्सर छोटे सिक्कों के साथ सहअस्तित्व बना कर चलना पड़ता है। ये राष्ट्र की सेवा का भाव लेकर काम करते लोग, अपने काम को साधना समझते लोग, सुबह समय पर पहुँचते लोग, समय से फाइलें निपटाते लोग, घर लौटते समय यह संतोष रखते हैं कि आज का दिन निष्कलंक गया, फलदायी गया। मगर यथार्थ में ऐसे लोग ही धीरे-धीरे सबसे अधिक अकेले पड़ जाते हैं, क्योंकि वे व्यवस्था के 'गैरलिखित नियमों' को नहीं जानते। वह नियम, जो कहता है कि यहां काम से नहीं, जनसंपर्क से, कुशल व्यवहार से हर गति है।

धीरे-धीरे ये खरे सिक्के यह महसूस करते हैं कि उसकी चमक आसपास के लोगों की आँखों को चुभती है। उसके खिलाफ एक अनकही अस्वीकार्यता का वातावरण तैयार हो जाता है। नतीजतन, उसे अलग-थलग कर दिया जाता है। उसके उत्साह को 'दिखावा' उसके परिश्रम को बेमानी कहा जाता है। मनुष्य का मनोविज्ञान यही है, जिसके श्रम के कारण हमारी सुस्ती प्रकाश में आए, उसके श्रम को ही असहज बना दिया जाए। धीरे-धीरे वही होता है, जो नहीं होना चाहिए।

औसतपन एक आदर्श बन जाता है और जिस आदर्श कार्यशैली से सबको प्रेरणा लेनी चाहिए थी, वह बुझती हुई खंभा बत्ती बन कर रह जाती है। इस प्रवृत्ति की वजह से किसी भी संस्थान के संवेदनशील न होने का पता चलता है, एक विचित्र दांवपेच को बढ़ावा मिलता है, योग्य और सक्षम लोगों को दरकिनार होना पड़ता है, लेकिन इसका खमियाजा समूचे संस्थान को उठाना पड़ता है। इसके बावजूद समाज को इस प्रकृति से बहुत ज्यादा गुरेज नहीं होता।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. किसी भी संस्था की “रीढ़” किन लोगों को कहा गया है?

- (क) केवल अधिकारियों को
- (ख) ईमानदार और परिश्रमी लोगों को
- (ग) अमीर लोगों को
- (घ) प्रसिद्ध लोगों को

उत्तर: (ख) ईमानदार और परिश्रमी लोगों को।

2. “खोटे सिक्के” किसका प्रतीक हैं?

- (क) अच्छे कर्मचारी
- (ख) आलसी और गैर-जिम्मेदार लोग
- (ग) धनवान लोग
- (घ) विद्यार्थी

उत्तर: (ख) आलसी और गैर-जिम्मेदार लोग।

3. “औसतपन एक आदर्श बन जाता है” से क्या अभिप्राय है?

- (क) उत्कृष्टता बढ़ती है
- (ख) सामान्य स्तर को ही आदर्श मान लिया जाता है
- (ग) मेहनत बढ़ती है
- (घ) प्रतिस्पर्धा बढ़ती है

उत्तर: (ख) सामान्य स्तर को ही आदर्श मान लिया जाता है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

4. खरे सिक्कों की चमक से लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: उनकी चमक लोगों को चुभती है और असहजता पैदा करती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. “खोटे सिक्के खरे सिक्कों की आड़ में चलते हैं” का क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि बुरे या अयोग्य लोग अच्छे और ईमानदार लोगों की प्रतिष्ठा के सहारे अपना काम चला लेते हैं।

6. गद्यांश में ‘गैरलिखित नियम’ से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: इसका अभिप्राय उन अनौपचारिक तरीकों से है, जिनमें काम की बजाय संपर्क और व्यवहार को अधिक महत्व दिया जाता है।

7. औसतपन के आदर्श बनने से क्या हानि होती है?

उत्तर: इससे उत्कृष्टता और प्रेरणा समाप्त हो जाती है तथा संस्था की प्रगति रुक जाती है।

अपठित गद्यांश - 4

निम्नलिखित अपठित अंशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे पूछे प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप का चाहे, उस रूप का करे-चाहे राक्षस बनावे, चाहे देवता। ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं: क्योंकि हमें उनकी हर एक बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ करना और बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं, क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई दबाव रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है। दोनों अवस्थाओं में जिस बात का भय रहता है, उसका पता युवा पुरुषों को प्रायः बहुत कम रहता है।

विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाये, उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया। विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषधि है। हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों में हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचायेंगे हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे, तब वे हमें उत्साहित करेंगे। कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्गति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढे में गिराती जायगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देनेवाली बाह के समान होगी, जो उसे निरंतर उन्नति की ओर उठाती जाएँगी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. मनुष्य को “कच्ची मिट्टी की मूर्ति” क्यों कहा गया है?

- (क) क्योंकि वह कमजोर है
- (ख) क्योंकि वह जैसा चाहे वैसा बन सकता है
- (ग) क्योंकि वह सुंदर है
- (घ) क्योंकि वह स्थिर है

उत्तर: (ख) क्योंकि वह जैसा चाहे वैसा बन सकता है।

2. अधिक दृढ़ संकल्प वाले लोगों का साथ क्यों हानिकारक हो सकता है?

- (क) क्योंकि वे कमजोर होते हैं
- (ख) क्योंकि उनकी हर बात माननी पड़ती है
- (ग) क्योंकि वे मित्र नहीं होते
- (घ) क्योंकि वे दूर रहते हैं

उत्तर: (ख) क्योंकि उनकी हर बात माननी पड़ती है।

3. अच्छी संगति को किसके समान बताया गया है?

(क) बोझ

(ख) सहारा देने वाली बाह

(ग) पत्थर

(घ) अंधकार

उत्तर: (ख) सहारा देने वाली बाह।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

4. विश्वासपात्र मित्र क्या करता है?

उत्तर: वह हमें सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है और गलतियों से बचाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. अत्यधिक प्रभावशाली या अत्यधिक सहमत रहने वाले लोगों का साथ क्यों हानिकारक है?

उत्तर: एक स्थिति में व्यक्ति अपनी स्वतंत्र सोच खो देता है और दूसरी स्थिति में उसे उचित मार्गदर्शन नहीं मिलता। इसलिए दोनों ही परिस्थितियाँ उसके व्यक्तित्व के विकास के लिए हानिकारक होती हैं।

6. कुसंग को ज्वर क्यों कहा गया है?

उत्तर: क्योंकि कुसंग धीरे-धीरे व्यक्ति के नैतिक गुणों और बुद्धि को नष्ट कर देता है, जैसे ज्वर शरीर को कमजोर कर देता है।

7. अच्छी संगति से क्या लाभ होते हैं?

उत्तर: अच्छी संगति व्यक्ति को उन्नति की ओर ले जाती है, उसका आत्मबल बढ़ाती है तथा उसे सही मार्ग पर बनाए रखती है।

अपठित गद्यांश -5

निम्नलिखित अपठित अंशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे पूछे प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

संस्कृति और सभ्यता की अवधारणाओं का अक्सर परस्पर उपयोग किया जाता है , जबकि ये मानव अस्तित्व के अलग-अलग पहलुओं को दर्शाती हैं । संस्कृति हमारे व्यक्तिगत और सामुदायिक अस्तित्व के सार को समाहित करती है , जबकि सभ्यता समाज के रूप में हमारे द्वारा निर्मित मूर्त उपलब्धियों और संरचनाओं को संदर्भित करती है ।

संस्कृति से तात्पर्य उन साझा मान्यताओं , मूल्यों, रीति-रिवाजों , परंपराओं, व्यवहारों, भाषा, कला और अन्य तत्वों से है जो किसी विशेष समूह की पहचान होते हैं, चाहे वह समूह राष्ट्रीयता, जातीयता, धर्म, सामाजिक वर्ग या किसी अन्य समानता के आधार पर परिभाषित हो। संस्कृति में समाज या समुदाय के व्यक्तियों द्वारा अपने आसपास की दुनिया को समझने और उससे बातचीत करने का तरीका शामिल होता है। यह एक जटिल और बहुआयामी अवधारणा है जो लोगों के विश्वदृष्टिकोण , व्यवहार और पहचान को प्रभावित करती है । यह वह आधार है जिस पर मानवीय पहचान का निर्माण होता है। इसमें वे मान्यताएँ , मूल्य, रीति-रिवाज, परंपराएँ और साझा ज्ञान शामिल हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते हैं । संस्कृति मानवीय अनुभव में गहराई से निहित है और यह हमारे विचारों , व्यवहारों और दूसरों के साथ हमारी बातचीत को आकार देती है । यह एक गतिशील और निरंतर विकसित होने वाली शक्ति है जो विश्व भर के मानव समाजों की विविधता और जटिलता को दर्शाती है ।

दूसरी ओर, सभ्यता मानव उपलब्धियों का बाह्य प्रकटीकरण है। यह इतिहास भर में समाजों द्वारा किए गए भौतिक और संरचनात्मक विकास को संदर्भित करती है। सभ्यता में प्रौद्योगिकी, अवसंरचना, शासन और उन संस्थाओं का विकास शामिल है जो मानव प्रगति और संगठन को सक्षम बनाती हैं । यह एक जटिल और बहुआयामी अवधारणा है जो मानव सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के एक उन्नत चरण को संदर्भित करती है , जिसमें विभिन्न विशिष्ट विशेषताएं होती हैं। यह जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने वाले महत्वपूर्ण तकनीकी नवाचारों द्वारा चिह्नित है। इन नवाचारों में कृषि, परिवहन, चिकित्सा, संचार और कई अन्य शामिल हैं। इन्होंने हमारे जीने, काम करने और दुनिया के साथ बातचीत करने के तरीके को बदल दिया है । यह जटिल सामाजिक पदानुक्रम और राजनीतिक प्रणालियों वाले संगठित समाजों को जन्म देती है। सरकारें , कानूनी ढाँचे और शिक्षा प्रणाली जैसी संस्थाएँ सभ्यताओं के कामकाज के लिए अभिन्न अंग हैं ।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. संस्कृति और सभ्यता में मुख्य अंतर क्या है?

- (क) दोनों एक ही हैं
- (ख) संस्कृति आंतरिक, सभ्यता बाह्य है
- (ग) संस्कृति केवल भौतिक है

(घ) सभ्यता केवल विचार है

उत्तर: (ख) संस्कृति आंतरिक, सभ्यता बाह्य है।

2. संस्कृति का क्या कार्य है?

- (क) केवल आर्थिक विकास
- (ख) मानव पहचान का निर्माण
- (ग) युद्ध करना
- (घ) शासन चलाना

उत्तर: (ख) मानव पहचान का निर्माण।

3. संस्कृति किन तत्वों से मिलकर बनती है?

- (क) केवल तकनीक
- (ख) केवल शासन
- (ग) मान्यताएँ, मूल्य, परंपराएँ
- (घ) केवल आर्थिक गतिविधियाँ

उत्तर: (ग) मान्यताएँ, मूल्य, परंपराएँ।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

4. संस्कृति किन माध्यमों से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती है?

उत्तर: संस्कृति मान्यताओं, मूल्यों, परंपराओं और रीति-रिवाजों के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. संस्कृति की परिभाषा अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: संस्कृति वह समष्टि है जिसमें किसी समाज की मान्यताएँ, मूल्य, परंपराएँ, भाषा और व्यवहार शामिल होते हैं, जो उसकी पहचान बनाते हैं।

6. सभ्यता को बाह्य प्रकटीकरण क्यों कहा गया है?

उत्तर: क्योंकि सभ्यता मानव द्वारा निर्मित भौतिक विकास, तकनीकी प्रगति और सामाजिक संरचनाओं को व्यक्त करती है, इसलिए इसे बाह्य प्रकटीकरण कहा जाता है।

7. संस्कृति और सभ्यता का आपसी संबंध स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: संस्कृति समाज के आंतरिक मूल्यों, विचारों और आदर्शों का प्रतिनिधित्व करती है, जबकि सभ्यता उन मूल्यों पर आधारित बाहरी विकास और उपलब्धियों का स्वरूप है। दोनों परस्पर संबंधित और एक-दूसरे के पूरक हैं।

अपठित बोध

(पद्य)

अभ्यास

अपठित पद्यांश – 1

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए – 8 अंक

कहाँ से आए होंगे शब्दों के आततायी
जाने किस खोह में पले होंगे
कैसी हवा में ली होंगी साँसें
अकेले में रोते होंगे क्या
हँसना याद रहा होगा उन्हें
किसने थमाए होंगे उनके हाथों में
फूलों की जगह नुकीले पत्थर
अज्ञात है यह सब कुछ
उन आततायियों की तरह
लेकिन वे आते हैं
झुण्ड के झुण्ड

उनके हाथों में होते हैं शब्दों के लहलुहान कर देने वाले पत्थर
बेदम हो जाने तक करते हैं प्रहार
सोचते हैं नष्ट हो जाएगी
— वह फिर से पनप जाती है

अपने मज़बूत पैरों से रौंदते हैं अरमान
सोचते हैं अब भूल जाएगी सपने देखना
वह नए सपने उगा लेती है
जहान की सारी रोशनियाँ उसके लिए बुझा कर
मान लेते हैं वे कि अब अन्धेरो से नहीं निकल पाएगी
वह खेलने लगती है चकमक पत्थरों से
सारी नसें दबा कर
खुश हैं वे कि निकल गए होंगे प्राण
वह हवाएँ नथुनों में भर लेती है
वे नोंच लेते हैं सारे पंख
सोचते हैं भूल जाएगी सारी उड़ान
वह आकाश हो जाती है
बुझा कर सारी बाहरी आग
वह भूख पर जड़ देते हैं ताला
वह अक्षरों को घोट कर पी जाती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. “शब्दों के आततायी” से क्या अभिप्राय है?

(क) कवि

(ख) क्रूर और नकारात्मक लोग

(ग) बच्चे

(घ) शिक्षक

उत्तर: (ख) क्रूर और नकारात्मक लोग।

2. “फूलों की जगह नुकीले पत्थर” का अर्थ क्या है?

(क) उपहार देना

(ख) कठोर और चोट पहुँचाने वाले शब्द देना

(ग) खेलना

(घ) निर्माण करना

उत्तर: (ख) कठोर और चोट पहुँचाने वाले शब्द देना।

3. “वह नए सपने उगा लेती है” पंक्ति क्या दर्शाती है?

(क) हार मान लेना

(ख) निराशा

(ग) संघर्ष और पुनः प्रयास की शक्ति

(घ) आलस्य

उत्तर: (ग) संघर्ष और पुनः प्रयास की शक्ति।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

4. आततायी किस चीज़ से प्रहार करते हैं?

उत्तर: आततायी शब्दों के लहलुहान कर देने वाले पत्थरों से प्रहार करते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. कवि ने “शब्दों के आततायी” किसे कहा है?

उत्तर: कवि ने उन लोगों को “शब्दों के आततायी” कहा है जो कठोर, नकारात्मक और चोट पहुँचाने वाले शब्दों से दूसरों को पीड़ा पहुँचाते हैं।

6. आततायी अरमानों को रौंदकर क्या सोचते हैं और उसका परिणाम क्या होता है?

उत्तर: वे सोचते हैं कि वह व्यक्ति सपने देखना छोड़ देगा, लेकिन वह नए सपने फिर से उगा लेता है।

अपठित पद्यांश – 2

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (8 अंक)

भारत माता का मंदिर यह
समता का संवाद जहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

जाति-धर्म या संप्रदाय का,
नहीं भेद-व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर
सबका सम सम्मान यहाँ।
राम, रहीम, बुद्ध, ईसा का,
सुलभ एक सा ध्यान यहाँ,
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के
गुण गौरव का ज्ञान यहाँ।

नहीं चाहिए बुद्धि बैर की
भला प्रेम का उत्साह यहाँ।
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।

सब तीर्थों का एक तीर्थ यह
हृदय पवित्र बना लें हम।
आओ यहाँ अजातशत्रु बन,
सबको मित्र बना लें हम।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. “भारत माता का मंदिर” किसका प्रतीक है?

- (क) किसी विशेष धर्म का
- (ख) राष्ट्र की एकता का
- (ग) युद्ध का स्थान
- (घ) केवल पूजा का स्थान

उत्तर: (ख) राष्ट्र की एकता का।

2. कविता में “समता का संवाद” से क्या अभिप्राय है?

(क) असमानता

(ख) झगड़ा

(ग) समानता की भावना

(घ) प्रतियोगिता

उत्तर: (ग) समानता की भावना।

3. कविता में किन-किन महापुरुषों का उल्लेख है?

(क) राम, कृष्ण, अर्जुन

(ख) राम, रहीम, बुद्ध, ईसा

(ग) गांधी, नेहरू, पटेल

(घ) शिव, विष्णु, ब्रह्मा

उत्तर: (ख) राम, रहीम, बुद्ध, ईसा।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

4. कविता में किस प्रकार के भेदभाव को नकारा गया है?

उत्तर: कविता में जाति, धर्म और संप्रदाय के आधार पर होने वाले भेदभाव को नकारा गया है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. कविता में समता और एकता का संदेश कैसे दिया गया है?

उत्तर: कवि ने बताया है कि यहाँ सभी धर्मों, जातियों और संप्रदायों का समान सम्मान किया जाता है तथा सभी का स्वागत होता है। इसी के माध्यम से समता और राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया गया है।

6. “सबका स्वागत, सबका आदर” पंक्ति का क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति का समान सम्मान होना चाहिए तथा किसी के साथ जाति, धर्म या संप्रदाय के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए।

अपठित पद्यांश – 3

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (8 अंक)

अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाए।
जिसमें इंसान को इंसान बनाया जाए।

जिसकी खुशबू से महक जाय पड़ोसी का भी घर
फूल इस क्रिस्म का हर सिम्त खिलाया जाए।

आग बहती है यहाँ गंगा में झेलम में भी
कोई बतलाए कहाँ जाके नहाया जाए।

प्यार का खून हुआ क्यों ये समझने के लिए
हर अँधेरे को उजाले में बुलाया जाए।

मेरे दुख-दर्द का तुझ पर हो असर कुछ ऐसा
मैं रहूँ भूखा तो तुझसे भी न खाया जाए।

जिस्म दो होके भी दिल एक हों अपने ऐसे
मेरा आँसू तेरी पलकों से उठाया जाए।

गीत उन्मन है, गज़ल चुप है, रूबाई है दुखी
ऐसे माहौल में 'नीरज' को बुलाया जाए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कवि किस प्रकार के मज़हब की स्थापना की बात करता है?

- (क) जो केवल एक समुदाय को मानता हो
- (ख) जो इंसान को इंसान बनाए
- (ग) जो परंपराओं पर आधारित हो
- (घ) जो केवल पूजा-पाठ सिखाए

उत्तर: (ख) जो इंसान को इंसान बनाए।

2. “फूल इस क्रिस्म का हर सिम्त खिलाया जाए” का क्या अर्थ है?

- (क) हर जगह फूल उगाए जाएँ
- (ख) केवल अपने घर को सजाया जाए
- (ग) प्रेम और सद्भाव हर दिशा में फैलाया जाए
- (घ) बागवानी को बढ़ावा दिया जाए

उत्तर: (ग) प्रेम और सद्भाव हर दिशा में फैलाया जाए।

3. कवि 'नीरज' को क्यों बुलाने की बात करता है?

- (क) क्योंकि वे प्रसिद्ध कवि हैं
- (ख) क्योंकि माहौल दुख और निराशा से भरा है
- (ग) क्योंकि उन्हें गीत सुनना है
- (घ) क्योंकि वे सभा का संचालन करेंगे

उत्तर: (ख) क्योंकि माहौल दुख और निराशा से भरा है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

4. कवि के अनुसार सच्चा मज़हब क्या सिखाता है?

उत्तर: सच्चा मज़हब इंसान को इंसान बनाना तथा आपसी प्रेम, भाईचारे और सद्भाव का संदेश देता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. “आग बहती है यहाँ गंगा में झेलम में भी” पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस पंक्ति में कवि समाज में फैली हिंसा, द्वेष और अशांति की ओर संकेत करता है। गंगा और झेलम जैसे पवित्र स्थान भी अब शांति के स्थान पर संघर्ष और नफरत से प्रभावित दिखाई देते हैं।

6. कवि ने ‘जिस्म दो होके भी दिल एक हों’ कहकर क्या संदेश दिया है?

उत्तर: कवि का संदेश है कि लोगों के बीच सच्चा प्रेम, एकता और आत्मीयता होनी चाहिए। शरीर अलग-अलग होने पर भी सभी के हृदय एक-दूसरे के सुख-दुःख को समझने वाले होने चाहिए।

अपठित पद्यांश – 4

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (8 अंक)

बंद अगर होगा मन
आग बन जाएगा
रोका हुआ हर शब्द
चिराग बन जाएगा।

सत्ता के मन में जब-जब पाप भर जाएगा
झूठ और सच का सब अन्तर मिट जाएगा
न्याय असहाय, ज़ोर-जब्र खिलखिलाएगा
जब प्रचार ही लोक-मंगल कहलाएगा।

तब हर अपमान
क्रान्ति-राग बन जाएगा
बंद अगर होगा मन
आग बन जाएगा।

घर की ही दीवार जब जलाने लगे घर-द्वार
रोशनी पलट जाए बन जाए अन्धकार
पर्दे में भरोसे के जब पलने लगे अनाचार
व्यक्ति मान बैठे जब अपने को अवतार।

फिर होगा मन्थन
सिन्धु ज्ञाग बन जाएगा
बंद अगर होगा मन
आग बन जाएगा।

घटना हो चाहे नई बात यह पुरानी है
भय पर उठाया भवन रेत की कहानी है
सहमति नहीं है मौन, विरोध की निशानी है
सन्नाटा बहुत बड़े अंधड़ की वाणी है।
टूटा विश्वास अगर
गाज बन जाएगा
बंद अगर होगा मन
आग बन जाएगा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. “बंद अगर होगा मन, आग बन जाएगा” पंक्ति का आशय क्या है?

- (क) मन को शांत रखना चाहिए।
- (ख) दबे हुए भाव क्रोध और विद्रोह में बदल सकते हैं।
- (ग) मन को बंद कर देना चाहिए।
- (घ) आग से बचना चाहिए।

उत्तर: (ख) दबे हुए भाव क्रोध और विद्रोह में बदल सकते हैं।

2. “न्याय असहाय, ज़ोर-जब्र खिलखिलाएगा” से क्या तात्पर्य है?

- (क) न्याय हमेशा मजबूत होता है।
- (ख) अन्याय समाप्त हो जाएगा।
- (ग) अन्याय और अत्याचार बढ़ जाएँगे, न्याय कमजोर हो जाएगा।
- (घ) न्याय और अन्याय बराबर हो जाएँगे।

उत्तर: (ग) अन्याय और अत्याचार बढ़ जाएँगे, न्याय कमजोर हो जाएगा।

3. “सन्नाटा बहुत बड़े अंधड़ की वाणी है” का क्या अर्थ है?

- (क) सन्नाटा शांति का प्रतीक है।
- (ख) सन्नाटा किसी बड़ी घटना या तूफान का संकेत है।
- (ग) सन्नाटा हमेशा अच्छा होता है।
- (घ) सन्नाटा डर को दर्शाता है।

उत्तर: (ख) सन्नाटा किसी बड़ी घटना या तूफान का संकेत है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

4. कवि के अनुसार “मौन” क्या दर्शाता है?

उत्तर: कवि के अनुसार मौन सहमति नहीं, बल्कि विरोध का संकेत है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. “घर की ही दीवार जब जलाने लगे घर-द्वार” पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस पंक्ति में कवि बताता है कि जब अपने ही लोग या संस्थाएँ अपने समाज और व्यवस्था को नुकसान पहुँचाने लगे, तब स्थिति अत्यंत गंभीर और विनाशकारी हो जाती है।

6. “भय पर उठाया भवन रेत की कहानी है” से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर: कवि कहना चाहता है कि भय और असत्य के आधार पर बनी व्यवस्था स्थायी नहीं होती। वह रेत के महल की तरह शीघ्र ही ढह जाती है।

अपठित पद्यांश – 5

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (8 अंक)

ठन गई!

मौत से ठन गई!

जूझने का मेरा इरादा न था,
मोड़ पर मिलेंगे इसका वादा न था,

रास्ता रोक कर वह खड़ी हो गई,
यों लगा ज़िन्दगी से बड़ी हो गई।

मौत की उमर क्या है? दो पल भी नहीं,
ज़िन्दगी सिलसिला, आज-कल की नहीं।

मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूँ,
लौटकर आऊँगा, कूच से क्यों डरूँ?

तू दबे पाँव, चोरी-छिपे से न आ,
सामने वार कर फिर मुझे आजमा।

मौत से बेख़बर, ज़िन्दगी का सफ़र,
शाम हर सुरमई, रात बंसी का स्वर।

बात ऐसी नहीं कि कोई ग़म ही नहीं,
दर्द अपने-पराए कुछ कम भी नहीं।

प्यार इतना परायों से मुझको मिला,
न अपनों से बाक़ी हैं कोई गिला।

हर चुनौती से दो हाथ मैंने किये,
आँध्रियों में जलाए हैं बुझते दिए।

आज झकझोरता तेज़ तूफ़ान है,
नाव भँवरों की बाँहों में मेहमान है।
पार पाने का क़ायम मगर हौसला,
देख तेवर तूफ़ान का, तेवरी तन गई।
मौत से ठन गई।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कवि “मौत से ठन गई” कहकर क्या व्यक्त करना चाहता है?

- (क) मृत्यु से डर
- (ख) मृत्यु से संघर्ष और निर्भीकता
- (ग) जीवन से निराशा
- (घ) भाग्य पर विश्वास

उत्तर: (ख) मृत्यु से संघर्ष और निर्भीकता।

2. “मौत की उमर क्या है? दो पल भी नहीं” का आशय क्या है?

- (क) मृत्यु बहुत लंबी होती है।
- (ख) जीवन छोटा है।
- (ग) मृत्यु क्षणिक है, जीवन निरंतर चलता है।
- (घ) मृत्यु का कोई अस्तित्व नहीं।

उत्तर: (ग) मृत्यु क्षणिक है, जीवन निरंतर चलता है।

3. “आँधियों में जलाए हैं बुझते दिए” पंक्ति से क्या अभिप्राय है?

- (क) कठिन परिस्थितियों में हार मान लेना।
- (ख) विपरीत परिस्थितियों में भी संघर्ष और साहस बनाए रखना।
- (ग) केवल शांति में कार्य करना।
- (घ) अंधकार से डरना।

उत्तर: (ख) विपरीत परिस्थितियों में भी संघर्ष और साहस बनाए रखना।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

4. कवि मृत्यु का सामना कैसे करना चाहता है?

उत्तर: कवि मृत्यु का सामना निर्भीकता, साहस और सीधे रूप में करना चाहता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. “तू दबे पाँव, चोरी-छिपे से न आ” पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कवि चाहता है कि मृत्यु छिपकर नहीं, बल्कि सामने आकर उसका सामना करे, ताकि वह निडर होकर उसका मुकाबला कर सके।

6. कविता में कवि के जीवन-दृष्टिकोण का वर्णन कीजिए।

उत्तर: कवि जीवन को साहस, संघर्ष, आत्मविश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ जीने में विश्वास रखता है। वह कठिनाइयों से घबराता नहीं, बल्कि हर चुनौती का डटकर सामना करता है और विपरीत परिस्थितियों में भी अपना हौसला बनाए रखता है।

अभिव्यक्ति

और

माध्यम

अभ्यास

अभिव्यक्ति और माध्यम

अध्याय-1

जनसंचार माध्यम

जनसंचार

जनसंचार का अर्थ है - एक स्रोत द्वारा एक साथ बड़ी संख्या में लोगों तक संदेश, सूचना, विचार या मनोरंजन पहुँचाना। इसमें संदेश देने वाला एक होता है, लेकिन प्राप्त करने वाले लाखों-करोड़ों हो सकते हैं।

उदाहरण: अखबार, टीवी समाचार, रेडियो, यूट्यूब वीडियो। इसे अंग्रेजी में Mass Communication कहते हैं।

जनसंचार के प्रकार

जनसंचार को मुख्य रूप से 4 प्रकारों में बाँटा जाता है:

1. मुद्रित जनसंचार / Print Media

कागज पर छपकर सूचना देने वाले माध्यम।

उदाहरण: अखबार, पत्रिका, पुस्तक, पोस्टर, पर्चे।

विशेषता: स्थायी होते हैं, बार-बार पढ़े जा सकते हैं।

सीमा/दोष:- केवल साक्षर लोग ही इसका लाभ ले पाते हैं।

2 प्रसारण जनसंचार / Broadcast Media

ध्वनि और चित्र के माध्यम से एक साथ लाखों लोगों तक पहुँचने वाले माध्यम।

उदाहरण:- रेडियो, टेलीविजन।

विशेषता:- त्वरित सूचना, मनोरंजन और दृश्य-श्रव्य प्रभाव।

सीमा/दोष:- एक बार प्रसारित होने के बाद वापस नहीं देखा जा सकता, जब तक रिकॉर्ड न हो।

3. डिजिटल जनसंचार (Digital Media)

इंटरनेट और डिजिटल तकनीक पर आधारित माध्यम।

उदाहरण: वेबसाइट, सोशल मीडिया – फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, व्हाट्सएप, ब्लॉग, पॉडकास्ट।

विशेषता:- त्वरित और वैश्विक पहुँच।

- दोतरफा संवाद संभव – यूजर कमेंट, लाइक, शेयर कर सकता है।
- कम लागत में अधिक लोग जुड़ते हैं।

4. परंपरागत जनसंचार / Traditional/Folk Media

लोक-आधारित, मौखिक और प्रदर्शन आधारित माध्यम।

उदाहरण: नौटंकी, लोकगीत, लोकनृत्य, कठपुतली, नुक्कड़ नाटक, भजन-कीर्तन।

विशेषता:

- स्थानीय भाषा और संस्कृति से जुड़ा होता है

- ग्रामीण और अशिक्षित लोगों तक आसानी से पहुँचता है
- मनोरंजन के साथ शिक्षा और जागरूकता भी देता है

जनसंचार के परंपरागत तथा आधुनिक माध्यम –

बहुविकल्पीय प्रश्न:-

1. निम्न में से कौन परंपरागत जनसंचार का माध्यम है?

- (क) टेलीविजन
- (ख) फेसबुक
- (ग) नाटक और लोकगीत
- (घ) रेडियो

उत्तर: (ग) नाटक और लोकगीत।

2. 'इंटरनेट' किस प्रकार का संचार माध्यम है?

- (क) व्यक्तिगत
- (ख) परंपरागत
- (ग) आधुनिक
- (घ) अप्रत्यक्ष

उत्तर: (ग) आधुनिक।

3. गाँवों में सूचनाओं के प्रसार का सबसे पुराना साधन कौन है?

- (क) समाचार पत्र
- (ख) लोककला, नाटक, कठपुतली
- (ग) मोबाइल
- (घ) ई-मेल

उत्तर: (ख) लोककला, नाटक, कठपुतली।

4. त्वरित और वैश्विक संचार का सबसे बड़ा माध्यम कौन है?

- (क) रेडियो
- (ख) इंटरनेट
- (ग) पत्रिका
- (घ) पोस्टर

उत्तर: (ख) इंटरनेट।

5. 'एक से अनेक' संचार की विशेषता किस माध्यम में पाई जाती है?

- (क) पत्र लेखन
- (ख) जनसंचार
- (ग) आमने-सामने बातचीत
- (घ) टेलीफोन

उत्तर: (ख) जनसंचार।

लघु उत्तरीय प्रश्न -

प्रश्न 1. परंपरागत जनसंचार से आप क्या समझते हैं? दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर: परंपरागत जनसंचार वे लोक-आधारित माध्यम हैं जो पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। जैसे – नौटंकी, लोकगीत, कठपुतली, लोकनृत्य। ये ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजन के साथ शिक्षा और जागरूकता फैलाते हैं।

प्रश्न 2. आधुनिक जनसंचार के दो प्रमुख लाभ लिखिए।

उत्तर: 1. तीव्र गति से सूचना का प्रसार – कुछ ही सेकंड में पूरी दुनिया तक खबर पहुँच जाती है।

2. व्यापक पहुँच – इंटरनेट, टीवी, सोशल मीडिया से करोड़ों लोग एक साथ जुड़ते हैं।

प्रश्न 3. परंपरागत और आधुनिक माध्यम में एक मुख्य अंतर बताइए।

उत्तर: परंपरागत माध्यम सीमित क्षेत्र और धीमी गति से संचार करते हैं, जबकि आधुनिक माध्यम तेज गति से और वैश्विक स्तर पर संचार करते हैं।

प्रश्न 4. जनसंचार के परंपरागत माध्यम आज भी प्रासंगिक क्यों हैं? समझाइए।

उत्तर: 1. **स्थानीय भाषा और संस्कृति से जुड़ाव**: लोकगीत, नाटक लोगों की भाषा में बात करते हैं, इसलिए सीधे दिल तक पहुँचते हैं।

2. **ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावी**: जहाँ इंटरनेट और टीवी की पहुँच कम है, वहाँ ये माध्यम सूचना का प्रमुख स्रोत हैं।

3. **सांस्कृतिक संरक्षण**: ये माध्यम लोककला और परंपराओं को जीवित रखते हैं।

4. **सरकारी जागरूकता अभियान**: सरकारें आज भी स्वास्थ्य, स्वच्छता जैसे विषयों के लिए नाटक, कठपुतली का उपयोग करती हैं।

प्रश्न 5. आधुनिक जनसंचार के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव लिखिए।

उत्तर: **सकारात्मक प्रभाव:-**

1. शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार की जानकारी तुरंत मिलती है।

2. लोकतंत्र मजबूत होता है, जनता अपनी बात रख सकती है।

3. वैश्विक संपर्क बढ़ता है।

नकारात्मक प्रभाव:

1. अफवाहें और फर्जी खबरें से फैलती हैं।

2. निजता भंग होने का खतरा रहता है।

3. अत्यधिक उपयोग से मानसिक तनाव बढ़ता है।

प्रश्न 6.. “परंपरागत और आधुनिक माध्यम एक-दूसरे के पूरक हैं” – इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर:- आज भी सरकारें स्वच्छ भारत, बेटा बचाओ जैसे अभियानों में लोकनाट्य और कठपुतली का उपयोग करती हैं, ताकि ग्रामीण जनता तक बात पहुँचे। वहीं शहरी क्षेत्रों में टीवी, सोशल मीडिया का प्रयोग होता है। इस तरह परंपरागत माध्यम स्थानीय स्तर पर और आधुनिक माध्यम वैश्विक स्तर पर संचार को मजबूत करते हैं। दोनों मिलकर जनजागृति का काम पूरा करते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण परीक्षापयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. टेलीविजन को दृश्य-श्रव्य माध्यम क्यों कहते हैं?

उत्तर: टेलीविजन में सूचना आवाज और चित्र दोनों के माध्यम से दी जाती है। इसलिए दर्शक देख और सुन दोनों सकते हैं। इसी कारण इसे दृश्य-श्रव्य माध्यम कहा जाता है।

प्रश्न 2. टेलीविजन की तीन विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: 1. **प्रभावशाली माध्यम**: आवाज और चित्र साथ होने से संदेश का प्रभाव गहरा होता है।

2. **व्यापक पहुँच**: एक साथ करोड़ों लोग समाचार, खेल, धारावाहिक देख सकते हैं।

3. **मनोरंजन और शिक्षा**: शिक्षा, डॉक्यूमेंट्री, समाचार और मनोरंजन एक साथ उपलब्ध होते हैं।

प्रश्न 3. समाचार पत्र को मुद्रित माध्यम क्यों कहते हैं?

उत्तर: समाचार पत्र कागज पर छपकर प्रकाशित होता है। इसलिए इसे मुद्रित जनसंचार माध्यम कहते हैं।

प्रश्न 4. समाचार पत्र की तीन विशेषताएँ लिखिए।

1. **स्थायित्व**: छपी हुई सूचना को बार-बार पढ़ा जा सकता है और सुरक्षित रखा जा सकता है।

2. **विस्तृत विश्लेषण**: खबरों के साथ पृष्ठभूमि और संपादकीय विश्लेषण मिलता है।

3. **विश्वसनीयता**: अन्य माध्यमों की तुलना में समाचार पत्र को अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

प्रश्न 5. इंटरनेट से आप क्या समझते हैं इंटरनेट की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर :- इंटरनेट डिजिटल तकनीक पर आधारित है और कुछ सेकंड में पूरी दुनिया तक सूचना पहुँचाता है। इसलिए इसे आधुनिक जनसंचार माध्यम कहते हैं।

विशेषताएँ:- इंटरनेट से कुछ ही सेकंड में दुनिया के किसी भी हिस्से तक संदेश पहुँच जाता है।

- इंटरनेट पर टेक्स्ट, ऑडियो, वीडियो, चित्र सब एक साथ उपलब्ध होते हैं।

प्रश्न 6. जनसंचार के क्षेत्र में इंटरनेट के लाभ और हानि लिखिए।

उत्तर :- **लाभ**: 1. त्वरित सूचना और वैश्विक संपर्क।

2. शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य की जानकारी आसानी से उपलब्ध।

3. सोशल मीडिया से लोग अपनी बात सरकार तक पहुँचा सकते हैं।

हानि: 1. फर्जी खबरें और अफवाहें तेजी से फैलती हैं।

2. निजता भंग और साइबर अपराध का खतरा बढ़ता है।

3. अधिक उपयोग से मानसिक तनाव और सामाजिक दूरी बढ़ती है।

प्रश्न 7. रेडियो जनसंचार का कैसा माध्यम है? रेडियो की किन्हीं तीन विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: रेडियो जनसंचार का श्रव्य माध्यम है। यह एक एकरेखीय या एक लीनियर माध्यम है।

विशेषताएँ :- 1. रेडियो केवल आवाज के जरिए संदेश पहुँचाता है, जिससे श्रोता की कल्पनाशक्ति बढ़ती है।

2. घटना घटते ही खबर प्रसारित हो जाती है। आपदा और मौसम की चेतावनी में यह सबसे तेज है।

3. यह सस्ता है और गाँव-देहात में भी आसानी से पहुँच जाता है। अशिक्षित लोग भी इसका लाभ ले सकते हैं।

अभिव्यक्ति और माध्यम

अध्याय-2

पत्रकारिता के विविध आयाम

पत्रकारिता का संबंध सूचनाओं को इकट्ठा करना और उन सूचनाओं को पढ़ने योग्य बनाकर आम पाठकों तक पहुँचाने से है। प्रत्येक सूचना को समाचार का दर्जा नहीं दिया जा सकता। पत्रकारिता से जुड़े व्यक्ति कुछ ही घटनाओं, समस्याओं और विचारों को समाचार के रूप में जनता के सामने प्रस्तुत करते हैं। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि किस घटना, समस्या या विचार को समाचार का दर्जा दिया जाता है? किसी घटना या समस्या के समाचार बनने के लिए उसमें नवीनता, जनरुचि, निकटता, प्रभाव जैसे तत्वों का होना आवश्यक है। समाचारों के संपादन में तथ्यपरकता, वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता और संतुलन जैसे सिद्धांतों का ध्यान रखना आवश्यक है। इन सिद्धांतों का पालन करके ही पत्रकारिता आम जनता के बीच अपनी विश्वसनीयता स्थापित करती है। पत्रकारिता का संबंध केवल समाचारों से ही नहीं है, बल्कि इसमें संपादकीय, लेख, कार्टून और फोटो भी प्रकाशित होते हैं। पत्रकारिता के कई प्रकार हैं, जिनमें खोजपरक पत्रकारिता, वॉचडॉग पत्रकारिता और एडवोकेसी पत्रकारिता प्रमुख हैं।

पत्रकारिता

पत्रकारिता का अर्थ

पत्रकारिता वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से सूचनाओं का संग्रह, चयन, संपादन और प्रसारण किया जाता है, ताकि समाज को सही और समय पर जानकारी मिल सके।

विभिन्न समाचार संगठनों के लिए कार्य करने वाले पत्रकार देश-विदेश में घटित घटनाओं को समाचार के रूप में प्रकाशित करते हैं। इस कार्य में वे विभिन्न माध्यमों से सूचना प्राप्त करके उन्हें समाचार के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यही प्रक्रिया पत्रकारिता कहलाती है।

पत्रकारिता के प्रमुख कार्य

1. सूचना देना (Inform)
2. शिक्षित करना (Educate)
3. मनोरंजन करना (Entertain)
4. जनमत निर्माण करना (Public Opinion)
5. सत्ता पर निगरानी रखना (Watchdog)

पत्रकारिता के प्रमुख माध्यम (Media Forms)

1. प्रिंट मीडिया – समाचार पत्र, पत्रिकाएँ
2. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया – टीवी, रेडियो
3. न्यू मीडिया – इंटरनेट, सोशल मीडिया, ब्लॉग, वेबसाइट

पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार

1. खोजपरक पत्रकारिता (Investigative Journalism)

खोजपरक पत्रकारिता वह पत्रकारिता है जिसमें पत्रकार गहराई से जांच-पड़ताल करके छिपे हुए तथ्यों और सच्चाई को सामने लाते हैं। इसमें लंबे समय तक रिसर्च, दस्तावेजों की जांच और साक्ष्यों का उपयोग किया जाता है। इसका उद्देश्य भ्रष्टाचार, घोटाले, अपराध या गलत कार्यों का पर्दाफाश करना होता है।

2. वॉचडॉग पत्रकारिता (Watchdog Journalism)

वॉचडॉग पत्रकारिता में मीडिया सरकार, प्रशासन और संस्थाओं के कार्यों पर निगरानी रखती है। इसे लोकतंत्र का “चौथा स्तंभ” कहा जाता है क्योंकि यह गलत नीतियों, भ्रष्टाचार और गड़बड़ियों को उजागर करके जनता को जागरूक करती है।

3. एडवोकेसी पत्रकारिता (Advocacy Journalism)

एडवोकेसी पत्रकारिता वह होती है जिसमें पत्रकार किसी विशेष विचार, मुद्दे या सामाजिक परिवर्तन के पक्ष में लिखते हैं। इसका उद्देश्य लोगों को जागरूक करना और किसी मुद्दे पर समर्थन जुटाना होता है, जैसे— पर्यावरण संरक्षण, महिला अधिकार आदि।

4. पीत पत्रकारिता (Yellow Journalism)

पीत पत्रकारिता वह पत्रकारिता है जिसमें सच्चाई से ज्यादा सनसनी और आकर्षण पर ध्यान दिया जाता है। इसमें खबरों को बढ़ा-चढ़ाकर, तोड़-मरोड़कर या भ्रामक तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। यह पत्रकारिता का नकारात्मक और अनैतिक रूप माना जाता है।

5. खेल पत्रकारिता (Sports Journalism)

खेल पत्रकारिता में खेलों से संबंधित समाचार, विश्लेषण और रिपोर्टिंग की जाती है। इसमें मैच, खिलाड़ियों का प्रदर्शन, रिकॉर्ड, टूर्नामेंट आदि की जानकारी दी जाती है।

समाचार के तत्व :

समाचार के तत्वों में नवीनता, निकटता, प्रभाव, जनरुचि, टकराव/संघर्ष, महत्वपूर्ण लोग, उपयोगी जानकारी, अनोखापन, पाठक वर्ग, नीतिगत ढांचा आदि शामिल हैं।

संपादन एवं उसके सिद्धांत :

किसी सामग्री से उसकी अशुद्धियों को दूर करके उसे पढ़ने योग्य बनाने की प्रक्रिया को संपादन कहते हैं। संपादन करते समय तथ्यों की शुद्धता, वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता, संतुलन और स्रोत जैसे सिद्धांतों का पालन किया जाता है।

पत्रकारिता के अन्य आयाम :

समाचारपत्र पढ़ते समय प्रत्येक पाठक की अपनी रुचि होती है। अपनी रुचि के अनुसार वह समाचारपत्र का अपना कोना चुनता है। पत्रकारिता में समय, विषय और घटना के अनुसार लेखन का तरीका भी बदल सकता है। इन बदलावों के कारण ही पत्रकारिता में कई आयाम जुड़े हैं, जिनमें विचार, कार्टून, संपादकीय, फोटो, टिप्पणी आदि शामिल होते हैं।

प्रश्न-उत्तर :

प्रश्न 1: समाचार के तत्वों से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: समाचार के तत्वों में नवीनता, निकटता, प्रभाव, जनरुचि, टकराव/संघर्ष, महत्वपूर्ण लोग, उपयोगी जानकारी, अनोखापन, पाठक वर्ग, नीतिगत ढांचा आदि शामिल हैं।

प्रश्न 2: समाचार लेखन में नवीनता से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: किसी भी घटना, विचार या समस्या के समाचार बनने के लिए यह आवश्यक है कि वह नया हो। 'न्यूज' शब्द का अर्थ ही नया होता है। समाचार वही है जो ताज़ा घटना के बारे में जानकारी देता है।

प्रश्न 3: संपादन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर: संपादन से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसमें समाचार-पत्र में प्रकाशित होने वाली सामग्री को शुद्ध और पठनीय बनाया जाता है।

प्रश्न 4: खोजपरक पत्रकारिता क्या है?

उत्तर: ऐसी पत्रकारिता जिसमें गहराई से जाँच करके उन तथ्यों को सामने लाया जाता है जिन्हें जानबूझकर छिपाया जाता है। इसके माध्यम से भ्रष्टाचार, अनियमितताओं आदि को उजागर किया जाता है।

प्रश्न 5: वॉचडॉग पत्रकारिता क्या है?

उत्तर: लोकतंत्र में मीडिया को चौथे स्तंभ के रूप में माना जाता है। वॉचडॉग पत्रकारिता का मुख्य कार्य सरकार और संस्थाओं के कार्यों पर नजर रखना और उनमें हो रही गड़बड़ियों को उजागर करना है।

अभिव्यक्ति और माध्यम

अध्याय-9

डायरी लिखने की कला

डायरी लिखने की कला एक महत्वपूर्ण और रोचक लेखन शैली है, जिसमें व्यक्ति अपने दैनिक जीवन की घटनाओं, अनुभवों और भावनाओं को सरल और व्यक्तिगत रूप में लिखता है। यह पूरी तरह निजी होती है, इसलिए इसमें व्यक्ति बिना किसी संकोच के अपने मन की बात व्यक्त कर सकता है। डायरी लिखते समय भाषा सहज और स्पष्ट होनी चाहिए, ताकि विचारों को स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत किया जा सके। सामान्यतः डायरी की शुरुआत तिथि और दिन से की जाती है, फिर “प्रिय डायरी” जैसे संबोधन के साथ मुख्य घटनाओं का वर्णन किया जाता है। इसमें दिनभर की महत्वपूर्ण घटनाओं के साथ-साथ उनसे जुड़ी भावनाएँ—जैसे खुशी, दुख, उत्साह या चिंता—भी लिखी जाती हैं। अंत में “शुभ रात्रि” या “फिर मिलेंगे” जैसे शब्दों से समापन किया जाता है। डायरी लेखन न केवल हमारी लेखन क्षमता को विकसित करता है, बल्कि आत्मचिंतन, मानसिक संतुलन और यादों को संजोने का भी एक प्रभावी माध्यम है।

प्रश्न 1. डायरी-लेखन क्या है? कुछ प्रसिद्ध डायरियों और डायरी लेखकों के नाम भी बताइए।

उत्तर- हमारे दैनिक जीवन में अनेक घटनाएँ घटती हैं। दिन भर में हम जिन घटनाओं, विचारों और गतिविधियों से निरंतर गुजरते हैं, उन्हें डायरी के पृष्ठों पर शब्दबद्ध कर लेना ही डायरी-लेखन है। अत्यंत निजी स्तर पर घटित घटनाओं और उससे संबंधित बौद्धिक तथा भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का लेखा-जोखा ही डायरी कहलाता है।

प्रसिद्ध डायरियों और उनके लेखकों के नाम निम्नलिखित हैं-

- (i) मोहन राकेश की डायरी- मोहन राकेश
- (ii) पैरों में पंख बाँध कर-रामवृक्ष बेनीपुरी।
- (iii) रूस में पच्चीस मास-राहुल सांकृत्यायन।
- (iv) सुदूर दक्षिणपूर्व-सेठ गोविंददास।
- (v) एक साहित्यिक की डायरी-गजानन माधव मुक्तिबोध।
- (vi) हरी घाटी-डॉ० रघुवंश।

प्रश्न 2. डायरी लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए?

उत्तर- डायरी लेखन करते समय कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है, जिससे लेखन प्रभावशाली और व्यवस्थित बन सके। सबसे पहले डायरी लिखते समय दिनांक, समय और स्थान अवश्य लिखना चाहिए। भाषा सरल, स्पष्ट और सहज होनी चाहिए ताकि भावनाएँ स्वाभाविक रूप से व्यक्त हो सकें। डायरी में अपने व्यक्तिगत अनुभव, भावनाएँ, विचार और दिनभर की घटनाओं का सच्चाई के साथ वर्णन करना चाहिए। लेखन क्रमबद्ध और संक्षिप्त होना चाहिए। अनावश्यक बातों से बचते हुए मुख्य घटनाओं पर ध्यान देना चाहिए। डायरी व्यक्तिगत होती है, इसलिए उसमें आत्मीयता और भावनात्मक अभिव्यक्ति का विशेष महत्व होता है। साथ ही शुद्ध भाषा और सही व्याकरण का ध्यान रखना भी आवश्यक है।

प्रश्न 3. डायरी लिखने के क्या उपयोग हैं?

उत्तर- डायरी के निम्नलिखित उपयोग हैं-

1. डायरी खुद को बेहतर तरीके से समझने में मदद करती है।
2. अपने विचारों के आंतरिक दबाव से मुक्त हो सकते हैं।
3. अपने व्यक्तित्व के विस्मृत होते पहलुओं को पुनः स्मरण कर सकते हैं।
4. तिथि विशेष से संबंधित सूचनाओं अथवा अपनी निजी बातों को लिखकर सहेज सकते हैं तथा भविष्य में कभी भी पढ़ सकते हैं।

इसके अलावा डायरी के निम्नलिखित उपयोग भी हैं-

किसी विशेष तिथि पर यदि हमें कोई विशेष कार्य करना है अथवा कहीं जाना है तो उससे संबंधित सूचना पहले से ही उस तिथि वाले पृष्ठ पर लिख दी जाती है। इससे उक्त तिथि के आने पर हमें किए जाने वाले कार्य याद आ जाते हैं। हमारे दिन-प्रतिदिन के अनुभवों को भी हम उस तिथि के पृष्ठ पर लिख कर अपने अनुभवों को सुरक्षित रख सकते हैं। कुछ लोग अपने दैनिक आय-व्यय का विवरण, धोबी-दूध का हिसाब, बच्चों की शरारतों आदि को भी डायरी में लिखते हैं।

प्रश्न 4. डायरी-लेखन खुद के साथ साक्षात्कार कैसे है ?

उत्तर-डायरी में लेखक अपने जीवन में घटित होने वाली घटनाओं, अनुभवों आदि का विवरण प्रत्येक तिथि के अनुसार लिखते रहते हैं। हम अपनी डायरी में उन बातों को भी लिख देते हैं, जिन्हें हम किसी दूसरे व्यक्ति को नहीं बता सकते। इस प्रकार हम डायरी पर लिखते समय अपनी बातें स्वयं को ही बताते हैं। इससे हमारा अपने आप से ही संवाद स्थापित हो जाता है। इससे हमें हमारी अच्छाइयों और बुराइयों का ज्ञान हो जाता है। हम स्वयं को अच्छी प्रकार से समझ पाते हैं तथा जहाँ कमियाँ हैं उन्हें दूर करने का प्रयास करते हैं। हमें जब भी आवश्यकता होती है हम डायरी के पिछले पृष्ठों को पढ़कर अपने अतीत को स्मरण कर सकते हैं। इस प्रकार डायरी-लेखन हमें अपने अंतरंग के साथ साक्षात्कार करने का अवसर प्रदान करता है।

प्रश्न 5. डायरी एक व्यक्तिगत दस्तावेज़ कैसे है?

उत्तर- डायरी में हम अपने जीवन के कुछ विशेष क्षणों में घटित अनुभवों, विचारों, घटनाओं, मुलाकातों आदि का विवरण लिखते हैं। यदि हम इन विवरणों को उसी तिथि विशेष पर नहीं लिखते तो संभव है कि हम उस विशेष क्षण में घटित अनुभव को भूल जाएँगे और फिर कभी उसे स्मरण नहीं कर पाएँगे। डायरी में लिखित विवरण हमें भूलने से बचाते हैं। उदाहरण के लिए यदि हम किसी पर्यटन स्थल पर जाते हैं और वहाँ पर अनेक स्थलों को देखते हैं। यदि हम प्रत्येक स्थल की यात्रा का विवरण उसी दिन अपनी डायरी में लिख लेते हैं तो हम अपने अनुभव को पूर्ण रूप से सुरक्षित रख सकते हैं तथा अवसर मिलने पर इसे पढ़कर उस यात्रा का फिर से पूरा आनंद उठा सकते हैं। यदि हम यात्रा से लौट कर सारा विवरण लिखना चाहें तो संभव नहीं हो पाएगा। हम अनेक विवरण लिखना छोड़ जाएँगे। डायरी से जब हम अपने विगत को पढ़ते हैं तो यह हमारा एक व्यक्तिगत दस्तावेज़ बन जाता है।

प्रश्न 6. डायरी कैसे और किस में लिखनी चाहिए?

उत्तर- डायरी सामान्यतः सोने से पूर्व दिनभर की गतिविधियों को स्मरण करते हुए लिखनी चाहिए। डायरी किसी नोट बुक या पुरानी डायरी में उस दिन की तिथि डाल कर लिखनी चाहिए क्योंकि कई बार नए साल की डायरी की तिथियों में दिया गया खाली पृष्ठ हमें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कम लगता है अथवा कभी हम दो-चार पंक्तियों में ही अपनी बात लिखना चाहते हैं। इसलिए नए साल की डायरी के पृष्ठों की तिथियों तक स्वयं को सीमित रखने के स्थान पर यदि हम किसी नोटबुक अथवा पुराने साल की डायरी में अपनी सुविधा के अनुसार तिथियाँ डालकर अपने विचारों और अनुभवों को लिपिबद्ध करेंगे तो हम स्वयं को खुले मन से अभिव्यक्त कर सकते हैं।

प्रश्न 7. डायरी-लेखन की भाषा-शैली कैसी होनी चाहिए?

उत्तर- डायरी लिखते समय किसी विशेष लेखन शैली की आवश्यकता नहीं होती। हमें सहज, व्यावहारिक तथा आडंबरहीन भाषा-शैली का प्रयोग करना चाहिए। मानव एवं साहित्यिक भाषा-शैली के प्रयोग के मोह में हम डायरी में अपनी भावनाओं को सहज रूप से व्यक्त नहीं कर सकते। डायरी में भावों को सर्वत्र सहजता से प्रकट होने का अवसर मिलना चाहिए। मन में उत्पन्न भाव अत्यंत सरलता से शब्दों में ढलते जाने चाहिए। डायरी-लेखन प्रत्येक अच्छी-बुरी बात को सहज रूप से लिखा जाता है। डायरी में आप अपनी बात जैसे चाहें और जिस ढंग से चाहें लिख सकते हैं। यही डायरी की भाषा-शैली की विशेषता है। डायरी की भाषा-शैली समस्त बंधनों से मुक्त होती है।

अभिव्यक्ति और माध्यम

अध्याय-10

कथा-पटकथा लेखन

कथा-पटकथा लेखन एक रचनात्मक प्रक्रिया है, जिसमें किसी कहानी को इस प्रकार रूपांतरित किया जाता है कि उसे मंच, नाटक, फिल्म या टीवी पर प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जा सके। इसमें केवल घटनाओं का वर्णन ही नहीं, बल्कि पात्रों के संवाद, दृश्य (सीन), स्थान, समय और भावनाओं का भी स्पष्ट एवं क्रमबद्ध चित्रण किया जाता है। कथा जहाँ साहित्यिक रूप में विचारों और कल्पनाओं को व्यक्त करती है, वहीं पटकथा उन विचारों को दृश्य और श्रव्य रूप में प्रस्तुत करने का माध्यम बनती है। एक अच्छी पटकथा में सशक्त कथानक, जीवंत पात्र, प्रभावी संवाद और स्पष्ट दृश्य-निर्देश होते हैं, जो दर्शकों को कहानी से जोड़कर रखते हैं। इस प्रकार कथा-पटकथा लेखन रचनात्मकता, कल्पनाशीलता और प्रस्तुति कौशल का सुंदर समन्वय है।

प्रश्न 1. 'पटकथा' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- पटकथा शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- 'पट' और 'कथा'। इनमें 'पट' शब्द का अर्थ है-परदा और 'कथा' शब्द का अर्थ है- कहानी। इस प्रकार 'पटकथा' शब्द से तात्पर्य ऐसी कहानी से है जो परदे पर दिखायी जाए। परदा छोटा अथवा बड़ा कोई भी हो सकता है। कहने का भाव यह है कि जो कहानी टेलीविजन अथवा सिनेमा में दिखाए जाने के लिए लिखी जाती है, उसे पटकथा कहा जाता है। पटकथा के आधार पर ही निर्देशक फ़िल्म अथवा धारावाहिक की शूटिंग की योजना बनाता है। अभिनेता, कैमरामैन, तकनीशियन, सहायक आदि भी पटकथा के आधार पर ही अपना-अपना कार्य करते हैं।

प्रश्न: 2. पटकथा लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है और क्यों?

उत्तर: पटकथा लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. दृश्य संख्या के साथ दृश्य का घटना स्थल भी लिखना चाहिए जैसे-कमरा, बरामदा, पार्क, बस स्टैण्ड, हवाई अड्डा, सड़क आदि।
2. प्रत्येक दृश्य के साथ होने वाली घटना के समय का संकेत दिया जाना चाहिए, जैसे सुबह, दोपहर आदि।
3. पात्रों की गतिविधियों के संकेत भी प्रत्येक दृश्य के प्रारंभ में देने चाहिए। जैसे-रजनी चपरासी को घूर रही है, चपरासी मजे से स्टूल पर बैठा है। साहब मेज पर पेपरवेट घुमा रहा है। फिर घड़ी देखता है।
4. किसी भी दृश्य का विभाजन करते समय ध्यान रखा जाए कि किन आधारों पर हम दृश्य विभाजन कर रहे हैं।
5. प्रत्येक दृश्य के साथ होने वाली घटना की सूचना देनी चाहिए।
6. पात्रों के संवाद बोलने के ढंग के निर्देश भी दिए जाने चाहिए; जैसे-रजनी (अपने में ही भुनभुनाते हुए)।

7. प्रत्येक दृश्य के अंत में डिजॉल्व टू, फ्रेड आउट, कट टू जैसी जानकारी अवश्य देनी चाहिए। इससे निर्देशक, एडीटर आदि को बहुत सहायता मिलती है।

प्रश्न 3. पटकथा की कथा का स्रोत कहाँ से मिलता है?

उत्तर-पटकथा की कथा का स्रोत कुछ भी हो सकता है। हमारे स्वयं के साथ घटी कोई घटना अथवा हमारे आस-पास घटी कोई घटना भी पटकथा का आधार बन सकती है। इसके अतिरिक्त अखबार में छपा कोई समाचार, हमारी कल्पना से अपनी कोई कहानी, इतिहास में वर्णित कोई व्यक्तित्व, कोई सच्चा किस्सा अथवा साहित्य की किसी प्रसिद्ध रचना पर पटकथा लिखी जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यिक रचनाओं को तो बहुत बार पटकथा का आधार बनाया गया है। उदाहरण के रूप में शरत्चंद्र चट्टोपाध्याय के प्रसिद्ध उपन्यास 'देवदास' पर तीन बार फिल्म बनाई जा चुकी है।

प्रश्न 4. पटकथा की संरचना कैसे होती है?

उत्तर- पटकथा की संरचना नाटक की संरचना से मिलती जुलती है। फिल्म तथा दूरदर्शन की पटकथा में पात्र-चरित्र, नायक-प्रतिनायक, घटनास्थल, दृश्य, कहानी का क्रमिक विकास, द्वंद्व, समाधान आदि सभी कुछ होता है। इसमें छोटे-छोटे दृश्य, असीमित घटनास्थल होते हैं। इसकी कथाफ्लैशबैक अथवा फ्लैश फॉरवर्ड तकनीक से किसी भी प्रकार से प्रस्तुत की जा सकती है। फ्लैशबैक से अतीत में हो चुकी और फ्लैश फारवर्ड से भविष्य में होने वाली घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है। इसमें एक ही समय में अलग-अलग स्थानों पर घटित घटनाओं को भी दिखाया जा सकता है। कथानक को विभिन्न दृश्यों में बदलते हुए अंत की ओर ले जाया जाता है।

प्रश्न 5. मंच के नाटक और फ़िल्म की पटकथा में क्या अंतर होता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- मंच के नाटक और फिल्म की पटकथा में कुछ मूलभूत अंतर होते हैं। ये अंतर निम्नलिखित हैं-

- (1) नाटक के दृश्य बहुत लंबे-लंबे होते हैं जबकि फ़िल्म के दृश्य छोटे होते हैं।
- (ii) नाटक में घटनास्थल प्रायः सीमित होते हैं जबकि फ़िल्म में इसकी कोई सीमा नहीं होती।
- (iii) नाटक एक सजीव कला माध्यम है जिसमें अभिनेता अपने ही जैसे जीवन्त दर्शकों के सामने अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं जबकि सिनेमा में यह पूर्व रिकॉर्डिंग छवियाँ एवं दृश्य होते हैं।
- (iv) नाटक में कार्य-व्यापार, दृश्यों की संरचना और चरित्रों की संख्या सीमित रखनी होती है जबकि सिनेमा में ऐसा कोई बंधन नहीं होता।
- (v) नाटक की कथा का विकास एक-रेखीय होता है, जो एक ही दिशा में आगे बढ़ता है जबकि सिनेमा में कथा का विकास कई प्रकार से होता है।

प्रश्न: 6. फ़्लैशबैक तकनीक और फ़्लैश फ़ॉरवर्ड तकनीक के दो-दो उदाहरण दीजिए। आपने कई फ़िल्में देखी होंगी। अपनी देखी किसी एक फ़िल्म को ध्यान में रखते हुए बताइए कि उनमें दृश्यों का बँटवारा किन आधारों पर किया गया।

उत्तर: फ़्लैशबैक तकनीक वह होती है जिसमें अतीत में घटी हुई किसी घटना को दिखाया जाता है। फ़्लैश फ़ॉरवर्ड वह तकनीक है जिसमें भविष्य में होनी वाली किसी घटना को पहले दिखा देते हैं। पाठ्यपुस्तक 'आरोह' की कहानी 'गलता लोहा' में मोहन जब घर से हँसुवे की धार लगवाने के लिए शिल्पकार टोले की ओर जाने लगता है तो वह फ़्लैशबैक में चला जाता है और उसे याद आ जाती है स्कूल में प्रार्थना करना। इसी कहानी में मोहन का लखनऊ पहुंचकर मुहल्ले में सब के लिए घरेलू नौकर जैसा काम करना।

'गलता लोहा' कहानी में ही मोहन को जब मास्टर त्रिलोक सिंह ने पूरे स्कूल का मॉनीटर बनाकर उस पर बहुत आशाएँ लगा रखी थीं। उस समय मोहन फ़्लैशफ़ॉरवर्ड में जाकर सोच सकता है कि वह एक बहुत बड़ा अफ़सर बन गया है और उसके पास अनेक लोग अपना काम करवाने आये हैं। मोहन जब लखनऊ पढ़ने जाता है तो वहाँ की भीड़-भाड़ देखकर फ़्लैशफ़ॉरवर्ड में जाकर सोचता है कि वह भी अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर बस में बैठकर बहुत बड़े स्कूल में पढ़ने जा रहा है।

प्रश्न 7. वर्तमान समय में पटकथा लिखने में कंप्यूटर हमारी किस प्रकार सहायता कर सकता है?

उत्तर- पटकथा लिखने में भी कंप्यूटर की सहायता ली जा सकती है। आजकल कंप्यूटर पर ऐसे सॉफ़्टवेयर आ गए हैं जिनमें पटकथा-लेखन का प्रारूप बना बनाया होता है। यदि पटकथा लेखन में कोई गड़बड़ी हुई है तो भी कंप्यूटर बता देता है कि कहाँ और क्या गड़बड़ी हुई है। ये सॉफ़्टवेयर पटकथा में सुधार लाने के सुझाव भी पटकथा लेखक को देते हैं। इन सुझावों को मानना या न मानना पटकथा-लेखक की इच्छा पर निर्भर करता है।

प्रश्न 8. पटकथा की मूल इकाई क्या और कैसे है?

उत्तर-पटकथा की मूल इकाई दृश्य होता है। एक दृश्य का निर्माण एक स्थान पर एक ही समय में लगातार चल रहे कार्य व्यापार के आधार पर होता है। यदि इन में से किसी एक में भी कोई परिवर्तन होता है तो सारा दृश्य ही बदल जाता है। उदाहरण के लिए 'आरोह' के 'रजनी' पाठ में दृश्य एक लीला बेन के फ़्लैट का है। समय दोपहर का। उनका बेटा अमित स्कूल से वापस आने वाला है। दूसरा दृश्य अगले दिन का है। समय दिन का। स्थान अमित के स्कूल के हेडमास्टर का कमरा है। तीसरा दृश्य उसी दिन का है। समय शाम का। स्थान रजनी का फ़्लैट है। इस प्रकार ये तीनों दृश्य अलग-अलग स्थान के हैं इसलिए बदल गए हैं।

अभिव्यक्ति और माध्यम

अध्याय-14

कार्यालयी लेखन

- ✓ प्रतिवेदन
- ✓ परिपत्र
- ✓ प्रेस विज्ञप्ति
- ✓ कार्यवृत्त

प्रतिवेदन किसी घटना, कार्ययोजना या जांच के तथ्यों का संक्षिप्त और तथ्यात्मक विवरण 'प्रतिवेदन' कहलाता है।

उदाहरण -

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय चांदीनगर में 'उल्लास' वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन

प्रतिवेदन

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल चांदीनगर में 28 अप्रैल 2026 , मंगलवार को वार्षिकोत्सव 'उल्लास' एवं पुरस्कार वितरण समारोह अत्यंत उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि के भव्य स्वागत और दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। विद्यालय की प्राचार्य शिल्पा मल्होत्रा ने मुख्य अतिथि , विशिष्ट अतिथि एवं आगंतुक अभिभावकगण का औपचारिक स्वागत किया और विद्यालय की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने विद्यालय में हो रहे नवाचार , पुनर्निर्माण कार्य , अवसंरचनात्मक कार्यों और विद्यार्थियों की शैक्षणिक , पाठ्यसहगामी गतिविधियों में उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। समारोह में विद्यालय के नन्हे-मुन्ने बच्चों से लेकर वरिष्ठ छात्र - छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कक्षा दूसरी और चौथी के विद्यार्थियों के 'अभिनय गीत' और कक्षा पहली, तीसरी , पाँचवीं तथा छठी के छात्र - छात्राओं के रंगारंग 'समूह नृत्य' ने दर्शकों का मन मोह लिया। कक्षा नौवीं , दसवीं और बारहवीं के छात्रों द्वारा प्रस्तुत 'दक्षिण भारतीय नृत्य' और 'पंजाबी लोक नृत्य' कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण रहे। विद्यालय में दसवीं कक्षा के अवगत मुद्गल , विप्रय यादव , शाहवेज) सत्र , (25- 2024 - अब्दुल असद , पुनीत मित्तल व समृद्धि त्रिपाठी) सत्र (26 - 2025 - और बारहवीं कक्षा के वंशिका , अक्षय कुमार और सृष्टि त्यागी) सत्र (25- 2024 मेधावी छात्र - छात्राओं को उनके सीबीएसई बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों को निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। 'वंदे मातरम्' की वाद्यवृंद की अद्भुत प्रस्तुति ने वातावरण को सुरम्य एवं देशभक्ति के भावों से भर दिया । वार्षिक समारोह का समापन धन्यवाद ज्ञापन, राष्ट्रगान और मिष्टान्न वितरण के साथ सुसंपन्न हुआ

परिपत्र (Circular)

जब एक ही सूचना या निर्देश कई विभागों या व्यक्तियों को एक साथ भेजना हो, तो उसे 'परिपत्र' कहते हैं।

उदाहरण -

केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मुख्यालय)

18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली - 110016

पत्रांक संख्या: 11029/केविसं) मु/ (.2024/शैक्षिक/456 |

दिनांक: 20.05.2024

विषय - आगामी 'ग्रीष्मकालीन अवकाश' के दौरान ऑनलाइन कार्यशाला के आयोजन हेतु।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों और विद्यालयों को सूचित किया जाता है कि शैक्षणिक सत्र 2024-25 की गुणवत्ता सुधार हेतु 'नई शिक्षा नीति (NEP 2020)' पर आधारित एक त्रि-दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा।

कार्यशाला का विवरण निम्नलिखित है:

- **दिनांक -** 05 जून से 07 जून 2024
- **समय -** प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 01:00 बजे तक
- **प्रतिभागी -** सभी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षक

सभी प्राचार्य सुनिश्चित करें कि उनके विद्यालय के संबंधित शिक्षक इस कार्यशाला में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहें। कार्यशाला का लिंक क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से साझा किया जाएगा।

हस्ताक्षर

समीर शर्मा

अपर आयुक्त(शैक्षिक)

प्रतिलिपि -

1. उपायुक्त, सभी क्षेत्रीय कार्यालय।
2. प्राचार्य, सभी केन्द्रीय विद्यालय।
3. निजी सचिव, आयुक्त) केविसं)।

3. प्रेस विज्ञप्ति(Press Release)

संस्थान द्वारा किसी महत्वपूर्ण निर्णय या सूचना को समाचार पत्रों में प्रकाशित कराने के लिए जारी किया गया ड्राफ्ट।

उदाहरण - प्रेस विज्ञप्ति

अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति बोर्ड

प्रेस विज्ञप्ति

अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रमों से जुड़े लेखकों और कलाकारों के पारिश्रमिक में वृद्धि अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति बोर्ड ने निर्णय लिया है कि अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रमों से जुड़े लेखकों, कलाकारों और विशेषज्ञों के पारिश्रमिक में तत्काल प्रभाव से वृद्धि कर दी जाए।

ध्यान दें कि इसके पूर्व लेखकों, कलाकारों के पारिश्रमिक में सन् 2000 में संशोधन किया गया था। पिछले कुछ समय से लेखकों और कलाकारों द्वारा यह शिकायत की जा रही थी कि संस्थान द्वारा दिए जाने वाले पारिश्रमिक की राशि बहुत कम है जिनके कारण अच्छी प्रतिभाएँ संस्थान से विमुख हो रही हैं।

लेखकों और कलाकारों की शिकायतों को ध्यान में रखते हुए बोर्ड ने पारिश्रमिक की बढ़ी दरों को मंजूरी देते हुए यह विश्वास व्यक्त किया है कि इससे अच्छी प्रतिभाओं को आकर्षित करने में तो मदद मिलेगी ही कार्यक्रमों की गुणवत्ता में भी सुधार होगा।

4. कार्यवृत्त (Minutes of Meeting)

किसी बैठक में हुई चर्चा, लिए गए निर्णयों और भविष्य की योजनाओं का लिखित विवरण।

कार्यवृत्त का उदाहरण विद्यालय की वार्षिक सांस्कृतिक समिति की बैठक सांस्कृतिक समिति की बैठक का कार्यवृत्त

दिनांक - 10 मई 2026

समय - सुबह 10:00 बजे

स्थान - पुस्तकालय कक्ष

उपस्थित सदस्य -

1. श्री आर.के .शर्मा - अध्यक्ष/प्राचार्य
2. श्रीमती राधिका सिंह - सचिव / सांस्कृतिक प्रभारी
3. श्री विजय कुमार - सदस्य
4. सुश्री प्रिया सिंह - सदस्य

बैठक की कार्यवाही -

1. **स्वागत** - सचिव ने बैठक की शुरुआत की और सभी का स्वागत किया।
2. **पिछली बैठक की पुष्टि** - पिछली बैठक (10 अप्रैल 2026) के कार्यवृत्त की पुष्टि की गई।
3. **एजेंडा आइटम 1 (वार्षिक समारोह)** - आगामी वार्षिक सांस्कृतिक समारोह की तिथि 25 नवंबर 2026 तय की गई।
4. **एजेंडा आइटम 2 (बजट)** - (सुश्री प्रिया सिंह ने बताया कि पिछले वर्ष की तुलना में इस बार सजावट का बजट 10% बढ़ाना होगा। समिति ने इसे मंजूरी दी।
5. **एजेंडा आइटम 3 (अनुशासन)** - (निर्णय लिया गया कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान अनुशासनात्मक टीम सुनिश्चित करेगी कि कक्षाएँ बाधित न हों।
6. **समापन** - सचिव ने सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया और अगली बैठक की तिथि (25 मई 2026) घोषित की।

हस्ताक्षर

श्री आर.के .शर्मा - अध्यक्ष/प्राचार्य
श्रीमती राधिका सिंह - सचिव / सांस्कृतिक प्रभारी

कार्यालय लेखन - प्रतिवेदन, परिपत्र, प्रेस विज्ञप्ति और कार्यवृत्त पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 - परिपत्र और ज्ञापन में क्या अंतर है?

उत्तर - परिपत्र एक साथ कई लोगों को भेजा जाता है, जबकि ज्ञापन (Memo) आमतौर पर किसी एक व्यक्ति या विभाग को विशेष सूचना देने के लिए होता है।

प्रश्न 2 - प्रतिवेदन लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर - भाषा सरल और स्पष्ट हो, तथ्य सटीक हों और विवरण निष्पक्ष होना चाहिए।

प्रश्न 3 - कार्यवृत्त कौन लिखता है?

उत्तर - आमतौर पर संस्था का सचिव या मनोनीत व्यक्ति बैठक के दौरान मुख्य बिंदुओं को नोट कर कार्यवृत्त तैयार करता है।

प्रश्न 4 - प्रेस विज्ञप्ति का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर - जनता तक किसी महत्वपूर्ण सूचना को समाचार माध्यमों के जरिए कम समय में पहुँचाना।

प्रश्न - 5 प्रतिवेदन की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर -

- **तथ्यात्मकता** - इसमें कल्पना के बजाय केवल वास्तविक तथ्यों का विवरण होता है।
- **संक्षिप्तता** - अनावश्यक विस्तार के बिना मुख्य बातों को लिखा जाता है।
- **स्पष्टता** - भाषा सरल और भ्रममुक्त होनी चाहिए।
- **सुझाव** - अंत में भविष्य के लिए सुधार या कदम सुझाए जाते हैं।

प्रश्न - 6 परिपत्र की प्रकृति कैसी होती है?

उत्तर - परिपत्र 'ऊपर से नीचे' (Top-down) की ओर जाता है। यानी वरिष्ठ अधिकारी या मुख्यालय अपने अधीनस्थ कर्मचारियों या कार्यालयों को निर्देश देने के लिए इसे जारी करते हैं।

प्रश्न - 7 क्या परिपत्र में किसी विशेष व्यक्ति का नाम होता है?

उत्तर - नहीं, परिपत्र किसी व्यक्ति विशेष को नहीं, बल्कि एक पूरे समूह या पदनाम (जैसे - समस्त शाखा प्रबंधक) को संबोधित होता है।

प्रश्न - 8 प्रेस विज्ञप्ति जारी करते समय किन तकनीकी बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर -

- शीर्षक आकर्षक और स्पष्ट हो।
- प्रकाशन की तिथि और स्थान) जैसे : नई दिल्ली, 12 जून (अनिवार्य हो।
- संपर्क व्यक्ति का नाम और नंबर अंत में होना चाहिए ताकि पत्रकार अधिक जानकारी ले सकें।

प्रश्न - 9 कार्यसूची (Agenda) और कार्यवृत्त (Minutes) में क्या अंतर है?

उत्तर -

- **कार्यसूची:** बैठक से पहले तैयार की जाती है कि किन विषयों पर चर्चा होगी।
- **कार्यवृत्त:** बैठक के बाद तैयार किया जाता है कि किन विषयों पर क्या निर्णय लिए गए।

प्रश्न 11 क्या प्रतिवेदन में लेखक की व्यक्तिगत राय शामिल होनी चाहिए?

उत्तर - नहीं। प्रतिवेदन निष्पक्ष होना चाहिए। लेखक सुझाव (Suggestions) वाले हिस्से में राय दे सकता है, लेकिन मुख्य रिपोर्ट में केवल प्रमाण और तथ्य होने चाहिए।

प्रश्न 12 क्या कार्यवृत्त (Minutes) पर सभी सदस्यों के हस्ताक्षर होने चाहिए?

उत्तर - नहीं, आमतौर पर केवल अध्यक्ष (Chairman) और सचिव (Secretary) के हस्ताक्षर ही अनिवार्य होते हैं।

प्रश्न 13 प्रेस विज्ञप्ति (Press Release) में 'एम्बार्गो' (Embargo) क्या है?

उत्तर - यदि कोई सूचना किसी विशेष समय से पहले प्रकाशित नहीं करनी हो, तो उस पर 'Embargo' या 'प्रकाशन हेतु समय सीमा' लिख दी जाती है।

प्रश्न 14 यदि कार्यवृत्त (Minutes) में कोई त्रुटि रह जाए, तो उसे कैसे सुधारा जाता है?

उत्तर - त्रुटि को अगली बैठक में 'पुष्टि' के समय सदस्यों द्वारा बताया जाता है और बैठक की कार्यवाही में उस सुधार को दर्ज किया जाता है।

प्रश्न 15 क्या परिपत्र (Circular) कानून की तरह बाध्यकारी होता है?

उत्तर - हाँ, कार्यालय के भीतर यह एक कानूनी निर्देश की तरह काम करता है। इसका उल्लंघन 'अनुशासनात्मक कार्रवाई' का आधार बन सकता है।

प्रश्न 16 प्रेस विज्ञप्ति में 'उद्धरण' (Quotes) का क्या महत्व है?

उत्तर - संस्था के अध्यक्ष या मुख्य अतिथि के कहे गए वाक्यों को उद्धरण (" ") में लिखने से समाचार अधिक विश्वसनीय और प्रभावशाली लगता है।

प्रश्न 17 प्रेस विज्ञप्ति का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?

उत्तर - किसी संस्थान की महत्वपूर्ण सूचना को समाचार पत्रों और मीडिया के माध्यम से जनता तक पहुँचाना।

प्रश्न 18 प्रेस विज्ञप्ति की भाषा किस 'पुरुष' (Person) में होनी चाहिए?

उत्तर - यह हमेशा 'अन्य पुरुष' (Third Person) में लिखी जाती है। इसमें 'मैं' या 'हम' जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं होता।

प्रश्न 19 प्रेस विज्ञप्ति के अंत में क्या लिखना अनिवार्य है?

उत्तर - जारी करने वाले अधिकारी का नाम, पदनाम और संपर्क सूत्र (Phone/Email) ताकि मीडिया कर्मि अधिक जानकारी ले सकें।

प्रश्न-20 परिपत्र किसे कहते हैं?

उत्तर - जब कोई सूचना, निर्देश या आदेश एक साथ कई विभागों, शाखाओं या अधीनस्थ कर्मचारियों को भेजा जाता है, तो उसे परिपत्र कहते हैं।

प्रश्न-21 परिपत्र का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर - कार्यप्रणाली में एकरूपता (Uniformity) लाना और एक ही समय में बड़े समूह तक आधिकारिक सूचना पहुँचाना।

अभिव्यक्ति और माध्यम

अध्याय-15

स्ववृत्त लेखन (बायोडेटा) लेखन और रोजगार संबंधी आवेदन पत्र

स्ववृत्त लेखन और रोजगार संबंधी आवेदन पत्र औपचारिक लेखन के महत्वपूर्ण अंग हैं, जिनका उपयोग नौकरी प्राप्त करने के लिए किया जाता है। स्ववृत्त (Resume) में व्यक्ति अपनी शैक्षिक योग्यता, कौशल, अनुभव और व्यक्तिगत विवरण को संक्षिप्त, स्पष्ट और व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करता है, ताकि नियोक्ता उसकी योग्यताओं का सही आकलन कर सके। वहीं रोजगार संबंधी आवेदन पत्र में उम्मीदवार किसी पद के लिए अपनी रुचि व्यक्त करते हुए अपने गुणों, योग्यता और अनुभव का प्रभावशाली वर्णन करता है। इस प्रकार के पत्र की भाषा शिष्ट, औपचारिक और सटीक होनी चाहिए। आवेदन पत्र में विषय, संबोधन, मुख्य विवरण और विनम्र समापन का विशेष ध्यान रखा जाता है। इस प्रकार स्ववृत्त और आवेदन पत्र दोनों ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व, क्षमता और पेशेवर दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम होते

प्रश्न : 1 स्ववृत्त से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: स्ववृत्त का अंग्रेजी अर्थ बायोडेटा होता है। जब आप किसी संस्थान में नौकरी करने हेतु जाते हैं तो अपने बारे में जानकारी एक पेज में लिख कर देते हैं, जिसमें आपकी व्यक्तिगत और शैक्षिक जानकारी होती है, यह जानकारी ही स्ववृत्त यानी बायोडेटा कहलाता है। स्ववृत्त हिंदी का शब्द है इसमें 'स्व' का अर्थ खुद होता है। वृत्त का अर्थ जीवन से जुड़ी हुई आपकी व्यक्तिगत जानकारी। यह सारी जानकारी उस कंपनी को मदद करता है कि किस तरह के उम्मीदवार का वह चयन करें। इस बायोडेटा में आपकी सारी योग्यता और व्यक्तिगत विवरण (सूचना) होता है। जब हम अपने बारे में शैक्षिक, व्यवसायिक और व्यक्तिगत जानकारी लिखते हैं तो इस लेखन को स्ववृत्त लेखन कहा जाता है।

प्रश्न : 2 स्ववृत्त लेखन के समय किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?

उत्तर: अगर आप स्ववृत्त लेखन लिख रहे हैं तो आपको दो पहलुओं पर ध्यान देना है। सबसे पहले आप अपनी व्यक्तिगत सूचना देंगे जिसमें आप एक कैंडिडेट के तौर पर अपने बारे में बताएंगे। दूसरी बात यह है कि आप जिस संस्था के लिए बायोडेटा बना रहे हैं या जिस संस्था (institution) में नौकरी करना चाहते हैं, उस नियोक्ता (रिक्रूमेंट करने वाला) संस्था की आवश्यकता को ध्यान में रखकर अपने बारे में सूचना देना यानी स्ववृत्त लेखन (इंफॉर्मेशन बायोडेटा) में रखना महत्वपूर्ण होता है।

प्रश्न : 3 स्ववृत्त लेखन का महत्त्व बताएँ।

उत्तर: आप किसी नियोक्ता (नौकरी देने वाला) को आवेदन पत्र प्रस्तुत करते हैं तो इसमें आपका बायोडाटा यानी स्ववृत्त महत्त्वपूर्ण होता है। स्ववृत्त से नियोक्ता यानी जवाब देने वाला कैंडिडेट या प्रतिनिधि के बारे में जानकारी हासिल कर पाते हैं। अगर आप अपने बारे में सुंदर और अच्छे शब्दों में खुद को व्यक्त करते हैं, और जिस पोस्ट के लिए आपने आवेदन दिया है, उसके अनुसार आप स्वयं के बारे में सकारात्मक बातें लिखते हैं तो इस तरह से स्ववृत्त-लेखन की वजह से आपको साक्षात्कार में अवसर दिया जाता है। नौकरी मिलने के मौके बढ़ जाते हैं।

प्रश्न : 4 स्ववृत्त की क्या विशेषताएँ होती हैं। बायोडाटा हिंदी में कैसे लिखे जाते हैं? इस लेखन में खास बात क्या है?

उत्तर: - स्ववृत्त अच्छी लिखावट में लिखा होना चाहिए या कंप्यूटर से प्रिंटेड होना चाहिए।

- स्ववृत्त लेखन में व्याकरण की गलतियाँ नहीं होनी चाहिए। नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव हाथ के व्यक्तित्व पड़ता है।
- आप जो सूचना दे रहे हैं, वह क्रम के अनुसार व्यवस्थित रूप से होना चाहिए ताकि नियोक्ता को आपका बायोडाटा पढ़ने में आसानी हो।
- बायोडाटा में दी गई सभी सूचनाएँ सही होनी चाहिए गलत और झूठ नहीं बताना चाहिए।
- अपनी खूबी और अच्छाइयों को बताने में पीछे नहीं रहना चाहिए बल्कि इसे खुलकर बताना चाहिए।
- अपने स्ववृत्त लेखन में कविता वाली भाषा यानी अलंकार वाली भाषा का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे सूचना समझ में नहीं आएगी।
- स्ववृत्त लेखन की शैली सरल सुबोध, सीधी, सटीक और साफ-सुथरी होनी चाहिए।

प्रश्न : 5 स्ववृत्त लेखन का रूप और आकार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: हिंदी बायोडाटा यानी स्ववृत्त लेखन का रूप और आकार लेखन लिखने के लिए कितनी शब्द सीमा हो यह निश्चित तो नहीं है, लेकिन स्ववृत्त लेखन बहुत लंबा नहीं होना चाहिए। मान लीजिए आप किसी कंपनी के डायरेक्टर पद के लिए आवेदन कर रहे हैं तो पृष्ठों की संख्या 9 से 10 हो सकती है, क्योंकि यहाँ पर योग्यता और अनुभव की बहुत आवश्यकता होगी। लेकिन सामान्य पदों के लिए स्ववृत्त लेखन दो या तीन पेजों से अधिक बढ़ा नहीं होना चाहिए।

स्ववृत्त लेखन का प्रारूप

नाम :

पिता का नाम :

माता का नाम :

जन्मतिथि :

वर्तमान पता :

स्थायी पता :

दूरभाष नंबर :

मोबाइल नंबर :

ईमेल-पता :

शैक्षणिक योग्यताएँ :

परीक्षा/ डिग्री/डिप्लोमा :

वर्ष बोर्ड / विश्वविद्यालय विषय श्रेणी प्राप्तांक:

- अन्य संबंधित योग्यताएँ-
- उपलब्धियाँ -
- गैर-शैक्षणिक गतिविधियाँ -
- प्रतिष्ठित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार की योग्यता एवं क्षमताओं से परिचित हों
- सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हों

दिनांक

स्थान

हस्ताक्षर

स्ववृत्त लेखन के उदाहरण

1. उत्तर प्रदेश के शिक्षा निदेशालय में शिक्षा अधिकारी को प्राथमिक शिक्षक पद के लिए आवेदन पत्र प्रेषित करते हुए स्ववृत्त लेखन कीजिए।

सेवा में,
शिक्षा निदेशक,
शिक्षा निदेशालय,
उत्तर प्रदेश प्रयागराज

विषय- प्राथमिक शिक्षक पद के लिए आवेदन ।

महोदय,
उत्तर प्रदेश शिक्षा निदेशालय के वेबसाइट से ज्ञात हुआ है कि विज्ञापन संख्या 56/2026 के संदर्भ में प्राथमिक शिक्षक पद हेतु विज्ञापन प्रकाशित हुआ है। इस पद हेतु मैं अपना आवेदन-पत्र आपकी सेवा में प्रेषित कर रहा हूँ। इसके साथ मेरा स्ववृत्त निम्नलिखित है-

नाम : मृदुल कुमार
पिता का नाम : श्री संजय कुमार
माता का नाम : श्रीमती लता देवी
जन्मतिथि : 17 जून, 1995
वर्तमान पता 101/2 मयूर विहार, आगरा
स्थायी पता : उपर्युक्त
दूरभाष संख्या : 212*45*55
मोबाइल संख्या : 943***58**8
ईमेल- पता : mridul95@gmail.com
शैक्षणिक योग्यताएँ:

क्रम संख्या	परीक्षा/डिग्री	वर्ष	बोर्ड/विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्राप्तांक
1.	दसवीं	1998	सी.बी.एस.ई	अंग्रेजी, हिन्दी, गणित, विज्ञान	प्रथम	95%
2.	बारहवीं	2000	सी.बी.एस.ई	अंग्रेजी, हिन्दी, भूगोल, इतिहास।	प्रथम	96%
3.	बी.ए.	2003	कानपुर विश्वविद्यालय	हिन्दी, अंग्रेज़ी, राजनीति शास्त्र	प्रथम	86%
4.	बी.एड.	2004	कानपुर विश्वविद्यालय	हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान	प्रथम	87%
5.	UP TET प्राथमिक स्तर	2011	उत्तर प्रदेश अध्यापक पात्रता परीक्षा	बाल मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित, पर्यावरण	प्रथम	85%

- अन्य संबंधित योग्यताएँ -

कंप्यूटर का व्यवहारिक ज्ञान हिंदी भाषा और अंग्रेजी भाषा में टाइपिंग, पढ़ाने हेतु प्रेजेंटेशन निर्माण, वीडियो एडिटिंग, कैमरा संचलन आदि का ज्ञान

- ऑनलाइन शिक्षण का अनुभव

दो वर्ष का शिक्षण अनुभव

- उपलब्धियाँ -

कविता, लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिता में अनेक पुरस्कार प्राप्त।

विद्यालय की बास्केटबॉल टीम का कैप्टन

- गैर शैक्षणिक गतिविधियाँ

पर्यटन का शौक

सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना

सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हों

1. प्रो. श्याम लाल, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
2. श्रीमती दिव्या तनेजा, निदेशक प्रयाग विद्यापीठ

दिनांक: 2 मई, 2026

स्थान: आगरा

हस्ताक्षर:

स्ववृत्त

नाम : नरेंद्र कुमार
 पिता का नाम : सुरेश कुमार
 माँ का नाम : शबनम
 जन्म तिथि : 18 नवंबर, 1982
 वर्तमान पता : डी 72, पाकेट चार, मयूर विहार (फ़ेज एक)
 दिल्ली 110092
 स्थायी पता : वही
 टेलीफ़ोन नं. : 011-22718296
 मोबाइल नं. : 9868234859
 ई-मेल : 85narendra@yahoo.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्र.सं.	परीक्षा/डिग्री/वर्ष	विद्यालय/बोर्ड/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा 1997	राजकीय विद्यालय सीबीएसई	अंग्रेजी, हिंदी, विज्ञान, गणित सामाजिक विज्ञान	प्रथम	93%
2.	बारहवीं 1999	वही सीबीएसई	अंग्रेजी, भौतिकी, रसायन विज्ञान जीव विज्ञान, गणित	प्रथम	95%
3.	बी.एस.सी. (आनर्स) 2002	हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	कंप्यूटर साइंस	प्रथम	84%
4.	एमबीए 2004	आदर्श इन्स्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट		प्रथम	85%

अन्य संबंधित योग्यताएँ

- ▶ कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान और अभ्यास (एम.एस. ऑफ़िस तथा इंटरनेट)
- ▶ फ़्रांसीसी भाषा का कार्य योग्य ज्ञान

उपलब्धियाँ

- ▶ अखिल भारतीय वाद-विवाद प्रतियोगिता (वर्ष 2001) में प्रथम पुरस्कार
- ▶ राजीव गाँधी स्मारक निबंध प्रतियोगिता (2002) में प्रथम पुरस्कार
- ▶ विद्यालय और महाविद्यालय क्रिकेट टीमों का कप्तान

कार्येतर गतिविधियाँ और अभिरुचियाँ

- ▶ उद्योग व्यापार संबंधी पत्रिकाओं और अखबारों का नियमित पाठन
- ▶ देश भ्रमण का शौक
- ▶ इंटरनेट सर्फिंग
- ▶ फुटबाल और क्रिकेट में अभिरुचि

वैसे सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हों

1. श्री जे. रामनाथन, निदेशक, आदर्श इंस्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट, लोदी इस्टेट, नयी दिल्ली
2. श्री देवेंद्र गुप्ता, प्राध्यापक (मार्केटिंग), आदर्श इंस्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट लोदी इस्टेट, नयी दिल्ली

तिथि

स्थान


हस्ताक्षर

सेवा में,
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
मानव संसाधन विभाग
इंडिया केमिकल्स लिमिटेड
36, न्यू लिंक रोड
अंधेरी, मुंबई-400053

विषय : मार्केटिंग एक्ज़क्यूटिव पद के लिए आवेदन
महोदय,

आज दिनांक 16 अप्रैल, 2006 को दिल्ली से प्रकाशित नवभारत टाइम्स के प्रातः संस्करण में प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ है कि आपकी कंपनी को मार्केटिंग एक्ज़क्यूटिव्स की आवश्यकता है। मैं इस पद के लिए अपना आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मेरा स्ववृत्त इस आवेदन के साथ संलग्न है। इसका अवलोकन करने पर आप पाएँगे कि मैं इस पद के लिए पूरी तरह से उपयुक्त उम्मीदवार हूँ। मैं विज्ञापन में आपके द्वारा वर्णित सभी योग्यताओं और अर्हताओं को पूरा करता हूँ। संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

- (क) मैं विज्ञान का छात्र रहा हूँ और रसायन शास्त्र मेरा प्रिय विषय रहा है। मैंने इस विषय में आनर्स के साथ प्रथम श्रेणी में स्नातक की उपाधि पाई है। मैं आपकी कंपनी की गतिविधियों और उत्पादों के वैज्ञानिक पहलुओं से न केवल पूरी तरह से वाकिफ़ हूँ बल्कि उन्हें आपके ग्राहकों के समक्ष सरल शब्दों में प्रस्तुत करने की भी क्षमता रखता हूँ।
- (ख) मैंने मार्केटिंग में प्रथम श्रेणी में एमबीए किया है और मुझे मार्केटिंग के विभिन्न सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं का पूरा ज्ञान है।
- (ग) मैं लिखित और मौखिक दोनों प्रकार से स्वयं को अभिव्यक्त करने में सक्षम हूँ। मुझे वाद-विवाद और निबंध की अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार मिले हैं।
- (घ) मैं अपने विद्यालय और महाविद्यालय की क्रिकेट टीमों का कप्तान रहा हूँ। इससे मेरी टीम भावना और नेतृत्व क्षमता प्रमाणित होती है।

(ड) मैं पर्यटन का शौक रखता हूँ और लगभग पूरे देश के महत्वपूर्ण स्थानों का दौरा कर चुका हूँ। मेरी यह प्रकृति पद की आवश्यकता के अनुकूल है।

मैं उद्योग और व्यवसाय से जुड़ी पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने का शौक रखता हूँ। इनके माध्यम से मैं आपकी कंपनी की गतिविधियों से निरंतर अवगत रहा हूँ कि अपनी स्थापना के कुछ ही वर्षों के अंदर कंपनी की गतिविधियों में व्यापक विस्तार हुआ है। मेरी सूचना के अनुसार कंपनी ने भविष्य के लिए अत्यंत महत्वाकांक्षी योजनाएँ बनाई हैं। मैं महसूस करता हूँ कि ऐसे माहौल में मुझे न केवल अपनी उन्नति और विकास का अवसर मिलेगा बल्कि मैं कंपनी की उन्नति और विकास में भी योगदान कर सकूँगा।

अनुरोध है कि उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मेरे आवेदन पर सकारात्मक रूप से विचार करें और मुझे मार्केटिंग एक्ज़ेक्यूटिव के पद पर नियुक्त करें।

सधन्यवाद

भवदीय
(नरेंद्र कुमार)

पत्र लेखन (5 अंक)

पत्र लेखन का अर्थ- पत्र लेखन एक ऐसी कला है, जिसके माध्यम से दो व्यक्ति जो एक दूसरे से काफी दूरी पर स्थित हो, परस्पर एक दूसरे को विभिन्न कार्यों अथवा सूचनाओं के लिए पत्र लिखते हैं। पत्र लेखन का कार्य पारिवारिक जीवन से लेकर व्यापारिक जगत् तब प्रयोग में लाया जाता है। पत्र लेखन का कार्य अत्यंत प्रभावशाली होता है, क्योंकि इस साधन के द्वारा अनेकों लोगो से संपर्क स्थापित करने भी सुविधा रहती है।

पत्र-लेखन की उपयोगिता अथवा महत्त्व -

- आजकल दूर-दूर रहने वाले सगे संबंधियों व व्यापारियों को आपस में एक दूसरे के साथ मेल-जोल रखने एवं संबंध रखने की आवश्यकता पड़ती है, इस कार्य में पत्र लेखन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- निजी अथवा व्यापारिक सूचनाओं को प्राप्त करने तथा भेजने के लिए पत्र व्यवहार विषय कारगर है। प्रेम, क्रोध, जिज्ञासा, प्रार्थना, आदेश निमंत्रण आदि अनेक भावों को व्यक्त करने के लिए पत्र लेखन का सहारा लिया जाता है।
- पत्रों के माध्यम से संदेश भेजने में पत्र में लिखित सूचना पूर्व रूप से गोपनीय रखी जाती है। पत्र को भेजने वाला तथा पत्र प्राप्त करने वाले आलावा किसी भी अन्य व्यक्ति को पत्र में लिखित संदेश पढ़ने का अधिकार नहीं होता है।
- मित्र, शिक्षक, छात्र, व्यापारी, प्रबंधक, ग्राहक व अन्य समस्त सामान्य व्यक्तियों व विशेष व्यक्तियों से सूचना अथवा संदेश देने तथा लेने के लिए पत्र लेखन का प्रयोग किया जाता है।

- वर्तमान व्यावसायिक क्षेत्र में ग्राहकों को माल के प्रति संतुष्टि देने हेतु, व्यापार की ख्याति बढ़ाने हेतु, व्यवसाय का विकास करने हेतु इत्यादि
- अनेक कार्यों में पत्र व्यवहार का विशेष महत्त्व है।

पत्र लेखन के आवश्यक तत्त्व अथवा विशेषताएँ -

पत्र लेखन से संबंधित अनेक महत्त्व है परन्तु इन महत्त्व का लाभ तभी उठाया जा सकता है जब पत्र एक आदर्श पत्र की भांति लिखा गया हो। पा में सम्मिलित निम्नलिखित तत्त्वों के कारण ही पत्र को एक प्रभावशाली रूप दिया जा सकता है।

औपचारिक पत्र (Formal Letter)

सरकारी तथा व्यावसायिक कार्यों से संबंध रखने वाले पत्र औपचारिक पत्रों के अन्तर्गत आते हैं। इसके अतिरिक्त इन पत्रों के अन्तर्गत निम्नलिखित पत्रों को भी शामिल किया जाता है।

प्रार्थना पत्र
निमंत्रण पत्र
सरकारी पत्र
गैर सरकारी पत्र
व्यावसायिक पत्र
किसी अधिकारी को पत्र
नौकरी के लिए आवेदन हेतु
संपादक के नाम पत्र इत्यादि।

औपचारिक पत्र का प्रारूप-

1. औपचारिक पत्र लिखने की शुरुआत बाईं ओर से की जाती है। सर्वप्रथम 'सेवा में' शब्द लिखकर, पत्र पाने वाले का नाम लिखकर, पाने वाले के लिए उचित सम्बोधन का प्रयोग किया जाता है। जैसे श्रीमान, मान्यवर, आदरणीय आदि।
2. इसके बाद पत्र पर पत्र पाने वाले का "पता/ कंपनी का नाम" लिखा जाता है।
3. तत्पश्चात पत्र जिस उद्देश्य के लिए लिखा जा रहा हो उसका "विषय" लिखा जाना आवश्यक है।
4. विषय लिखने के बाद एक बार फिर पत्र पाने वाले के लिए सम्बोधन शब्द का प्रयोग किया जाता है।
5. सम्बोधन लिखे के बाद, पत्र के मुख्य विषय का विस्तृत में वर्णन किया जाता है।
6. मुख्य विषय का अंत करते समय उत्तर की प्रतीक्षा में, सधन्यवाद, शेष कुशल आदि का प्रयोग किया जाना चाहिए।
7. इसके बाद पत्र के अंतिम भाग में "भवदीय, आपका आभारी, आपका आज्ञाकारी" इत्यादि शब्द लिखे जाने चाहिए।
8. पत्र भेजने वाले का नाम/कंपनी का नाम, पता
9. दिनांक" लिखते है।
10. अंत में पत्र लिखने वाले के हस्ताक्षर किए जाते हैं।

औपचारिक पत्र (फॉर्मल लेटर) प्रारूप -1

प्रश्न -1 अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई में मोबाइल फ़ोन पर होने वाले व्यय के लिए निर्धारित सीमा बढ़ाने के लिए पत्र लिखकर प्रधान कार्यालय महानिदेशक अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान तिलक मार्ग, नई दिल्ली-110001 को सूचित करें।

उत्तर :-

अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान क्षेत्रीय कार्यालय : मुंबई

फा. संख्या: मुंबई/का./5/2005/206

मुंबई, 15 मार्च 2005

सेवा में,

महानिदेशक

अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान तिलक मार्ग, नयी दिल्ली-110001

विषय: मोबाइल फ़ोन पर होने वाले व्यय के लिए निर्धारित सीमा

महोदय,

कृपया अपने परिपत्र का स्मरण करें जिसकी संख्या 24/13/प्र./2004 थी, जो 23 नवंबर, 2004 को जारी किया गया था। परिपत्र में हिदायत दी गई थी कि मोबाइल फ़ोन पर महीने में दो हजार से अधिक खर्च नहीं किया जाना चाहिए।

इस संबंध में निवेदन है कि मुंबई स्थित क्षेत्रीय कार्यालय की गतिविधियाँ अत्यंत व्यापक हैं। देश के तमाम फ़िल्म और टेलीविजन निर्माता मुंबई में ही हैं। इनकी वजह से विभिन्न विधाओं के कलाकार बड़ी संख्या में मुंबई में ही निवास करते हैं। साथ ही निदेशक को देश के विभिन्न नगरों में स्थित कार्यालयों एवं क्षेत्रीय कार्यालय से भी निरंतर संपर्क में रहना पड़ता है। साथ ही संस्थान की गतिविधियों के लिए प्रायोजक जुटाने के सिलसिले में देश के विभिन्न औद्योगिक संगठनों से भी लगातार बात करनी पड़ती है। ऊपर बताए तथ्यों की वजह से दो हजार रुपए मासिक की सीमा मुंबई कार्यालय के लिए कम पड़ रही है। पिछले छह महीनों से यह देखा जा रहा है कि मासिक खर्च छह हजार रुपए के आसपास आता है। अतः निवेदन है कि मुंबई कार्यालय की विशेष स्थिति को ध्यान में रखते हुए मोबाइल फोन पर मासिक खर्च की सीमा बढ़ाकर छह हजार रुपए कर दी जाए।

भवदीय

(राकेश कुमार) निदेशक

औपचारिक पत्र (फॉर्मल लेटर) प्रारूप -2

प्रश्न 2. जिलाधीश टोंक (राजस्थान) की ओर से स्वास्थ्य सचिव, राजस्थान सरकार, जयपुर को निर्धारित प्रारूप में एक कार्यालयी पत्र लिखिए जिसमें उनसे अपने क्षेत्र में फैली हुई रहस्यमय बीमारी से ग्रामीण जनता को राहत दिलवाने के लिए राजधानी के विशेष चिकित्सकों का एक दल भेजने के लिए निवेदन कीजिए।

उत्तर :

राजस्थान सरकार कार्यालय, जिलाधीश टोंक पत्रांक- जि./स्वा/14 - 15/175-76 दिनांक - 5 मई, 2026

सेवा में

श्रीमान् स्वास्थ्य सचिव राजस्थान सरकार, जयपुर।

विषय - रहस्यपूर्ण बीमारी से राहत दिलवाने हेतु चिकित्सकीय सहायता के सन्दर्भ में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत सूचनार्थ निवेदन है कि टोंक जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में एक अज्ञात बीमारी से विगत 3 दिनों में 07 लोग मौत के शिकार हो गए हैं। इस बीमारी में रोगी को तीव्र ज्वर आता है और वह पेट दर्द के साथ प्राण त्याग देता है। स्थानीय चिकित्सक इस बीमारी का निदान नहीं कर पा रहे हैं।

अतः इस महामारी पर शीघ्र नियन्त्रण हेतु राजधानी से चिकित्सकों का एक दल तत्काल भिजवाने का कष्ट करें, ताकि संतुष्ट जनता को राहत प्रदान की जा सके।

सादर

भवदीय (हस्ताक्षर) जिलाधीश, टोंक (हस्ताक्षर).

पृष्ठांकन सं. : जि./स्वा/14-15/175-76

दिनांक - 5 मई, 2026

प्रतिलिपि सूचनार्थ -

1. श्रीमान् स्वास्थ्य मन्त्री, राजस्थान सरकार
2. श्रीमान् प्रमुख सचिव, राजस्थान सरकार, जयपुर।
3. मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, टोंक
4. कार्यालय प्रति- जिलाधीश, टोंक

औपचारिक पत्र (फॉर्मल लेटर) प्रारूप -3

प्रश्न 3. जिला शिक्षा अधिकारी, इन्दौर की ओर से एक कार्यालयी पत्र प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रामगढ़, इन्दौर को लिखिए जिसमें कक्षा 10 के कमजोर विद्यार्थियों को गणित, अंग्रेजी एवं विज्ञान विषयों के अध्यापन के लिए अतिरिक्त कक्षाओं का प्रावधान सुनिश्चित किया गया है।

उत्तर :

कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी इन्दौर (म. प्र.)
पत्रांक जिशि आइ/14-15/161-163 दिनांक 10-12-2025

श्रीमान् प्रधानाचार्य
रा. उ. मा. वि. रामगढ़,
जिला - इन्दौर (म. प्र.)

विषय - कमजोर विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त कक्षाओं के सन्दर्भ में।

मान्यवर,
उपर्युक्त सन्दर्भ एवं विषयान्तर्गत उल्लेख है कि विगत तीन वर्षों से आपके विद्यालय की कक्षा X का परीक्षा परिणाम गुणात्मक एवं परिमाणात्मक दृष्टि से अपेक्षानुरूप नहीं रहा है। इस हेतु कक्षा X के कमजोर विद्यार्थियों के लिए गणित, अंग्रेजी एवं विज्ञान विषयों में अतिरिक्त कक्षाओं का प्रावधान सुनिश्चित करें। आवश्यकता होने पर सेवानिवृत्त शिक्षकों अथवा वरिष्ठ प्राध्यापकों की सेवाएँ भी ली जा सकती हैं। उक्त विषयों में अर्द्धवार्षिक परीक्षा परिणाम के आधार पर कमजोर विद्यार्थियों की सूची तथा आदेश अनुपालन की सूचना इस कार्यालय को भिजवाएँ।

भवदीय (हस्ताक्षर)
जिला शिक्षा अधिकारी (मध्य प्रदेश) इन्दौर
दिनांक-10-12-2022 3.
कार्यालय प्रति- पृष्ठांकन सं. जिशि आइ/14 - 15/161 - 163

प्रतिलिपि सूचनार्थ

1. श्रीमान् शिक्षा निदेशक महोदय, भोपाल।
2. श्रीमान् शिक्षा उपनिदेशक महोदय, इन्दौर।

औपचारिक पत्र (फॉर्मल लेटर) प्रारूप -4

प्रश्न 4. शिक्षा निदेशक (माध्यमिक), राजस्थान, जयपुर की ओर से एक पत्र निर्धारित प्रारूप में समस्त जिला विद्यालय निरीक्षक, राजस्थान को लिखिए जिसमें माध्यमिक शिक्षा परिषद्, राजस्थान की परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन से सम्बन्धित कार्यों के भुगतान के बारे में निर्देश दीजिए।

उत्तर :

कार्यालय शिक्षा निदेशक (माध्य.) राजस्थान
प्रेषक
शिक्षा निदेशक (माध्य.)
राजस्थान, जयपुर।

पत्रांक : डी. ई/मा. शि. प./4004961 2026-2027
दिनांक 10-04-2026

सेवा में
समस्त जिला विद्यालय निरीक्षक
राजस्थान।

विषय : माध्यमिक शिक्षा परिषद् राजस्थान की सैकेण्डरी तथा सीनियर सैकेण्डरी की परीक्षाओं से सम्बन्धित कार्यों के भुगतान के सम्बन्ध में।

महोदय, आजकल माध्यमिक शिक्षा परिषद् राजस्थान की सैकेण्डरी/सी. सैकेण्डरी परीक्षाएँ संचालित हो रही हैं। ये परीक्षाएँ 10 अप्रैल, 20 को समाप्त हो जाएँगी। मूल्यांकन कार्य 18 अप्रैल, 20 से प्रारम्भ होने जा रहा है। परीक्षा समाप्ति के उपरान्त परीक्षा ऊ्यूटी में लगे सभी शिक्षकों/कर्मचारियों के पारिश्रमिक के देयक भुगतान हेतु प्राप्त होंगे। इसी प्रकार मूल्यांकन कार्य की समाप्ति के उपरान्त मूल्यांकन कार्य में लगे परीक्षकों/कर्मचारियों के पारिश्रमिक के देयक भुगतान हेतु प्राप्त होंगे। यह आवश्यक है कि परीक्षा कार्य में संलग्न सभी शिक्षकों एवं कर्मचारियों के पारिश्रमिक का भुगतान वरीयता के आधार पर किया जाए। इस सम्बन्ध में आवश्यक धनराशि आपको सम्बन्धित मदों में परिषद् द्वारा उपलब्ध कराई जा चुकी है।

अतः आपको निर्देश दिए जाते हैं कि परीक्षा समाप्ति के एक सप्ताह के भीतर केन्द्र व्यवस्थापकों, अतिरिक्त केन्द्र व्यवस्थापकों कक्ष - निरीक्षकों एवं परीक्षा कार्य से जुड़े हुए अन्य सभी कर्मचारियों के समस्त देयकों को पारित कराकर उनका भुगतान करा दिया जाए। इसी प्रकार मूल्यांकन समाप्ति के पश्चात् एक सप्ताह के भीतर मूल्यांकन से जुड़े परीक्षकों व अन्य कर्मचारियों का भुगतान कराया जाना सुनिश्चित किया जाए।

भवदीय
हस्ताक्षर

शिक्षा निदेशक (मा.)

राजस्थान, जयपुर

औपचारिक पत्र (फॉर्मल लेटर) प्रारूप -5

प्रश्न 5. शिक्षा निदेशक, हरियाणा सरकार, अम्बाला की ओर से एक पत्र राजकीय उ. मा. विद्यालय अम्बाला को लिखिए, जिसमें हिन्दी प्रवक्ताओं के दो अतिरिक्त पदों के अनुमोदन की सूचना दी गई हो।

उत्तर :

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय,
हरियाणा सरकार,
पत्रांक : ख-8/रा.वि/118-14/पी/14-15 दिनांक 10-12-2022

प्रेषक

शिक्षा निदेशक (मा.) हरियाणा सरकार

सेवा में,
प्राचार्य राजकीय सी. सै. विद्यालय
अम्बाला हरियाणा

विषय : हिन्दी प्रवक्ताओं के दो अतिरिक्त पदों का अनुमोदन
महोदय, आपके पत्रांक 130/ए.स./01 140 दिनांक 14.07.2022 के सन्दर्भ में मुझे यह सूचित करना है कि निदेशालय ने आपके विद्यालय में हिन्दी के दो नए प्रवक्ताओं के पदों का अनुमोदन कर दिया है। इनकी नियुक्ति हेतु आप माध्यमिक शिक्षा सेवा आयोग, हरियाणा से सम्पर्क करें। हरियाणा लोक सेवा आयोग से चयनित प्रवक्ताओं की सूची प्राप्त होने तक आप अस्थायी रूप से दैनिक वेतन पर गेस्ट फैकल्टी योजनान्तर्गत प्रवक्ताओं की नियुक्ति कर सकते हैं।

(हस्ताक्षर)
मा. शिक्षा निदेशक अम्बाला
पृष्ठांकन सं. ख-8/हरि/वि. 118-14 पी. 14-15

दिनांक 10-12-2022

प्रतिलिपि सूचनार्थ :

1. शिक्षा उपनिदेशक, अम्बाला।
2. जिला शिक्षा अधिकारी, अम्बाला।
3. सचिव मा. शि. सेवा आयोग, हरियाणा।

(हस्ताक्षर)

माध्यमिक शिक्षा निदेशक

अभिव्यक्ति और माध्यम

अध्याय-16

शब्दकोश

हम प्रतिदिन अनेक शब्दों का प्रयोग करते हैं, लेकिन कई बार हमें किसी शब्द का अर्थ, सही वर्तनी या सही उच्चारण पता नहीं होता। ऐसी स्थिति में हमारी सहायता शब्दकोश करता है।

शब्दकोश भाषा का खजाना होता है। इसमें शब्दों को एक निश्चित क्रम में रखा जाता है ताकि हम उन्हें आसानी से खोज सकें। हिंदी शब्दकोश का सही प्रयोग सीखना प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक है।

1. शब्दकोश क्या है?

जिस पुस्तक में शब्दों को क्रम से लिखकर उनके अर्थ, वर्तनी और प्रयोग बताए जाते हैं, उसे शब्दकोश कहते हैं।

उदाहरण- यदि हमें “परिश्रम” शब्द का अर्थ जानना हो, तो हम शब्दकोश में “प” वर्ण के अंतर्गत उसे खोजेंगे।

परिश्रम = मेहनत

2. हिंदी वर्णमाला

हिंदी वर्णमाला दो भागों में बाँटी जाती है –

(क) स्वर

(ख) व्यंजन

(क) स्वर

जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी सहायता के किया जाता है, वे स्वर कहलाते हैं।

हिंदी के स्वर

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

(ख) व्यंजन

जिन वर्णों का उच्चारण स्वर की सहायता से होता है, वे व्यंजन कहलाते हैं।

(ग) संयुक्त व्यंजन

जब दो व्यंजन मिलकर एक नया वर्ण बनाते हैं, तो उसे संयुक्त व्यंजन कहते हैं।

(घ) अनुस्वार और अनुनासिक

अनुस्वार (ं)

जिस चिह्न को बिंदु कहते हैं, उसे अनुस्वार कहते हैं।

उदाहरण

- अंक
- अंग
- गंगा

अनुनासिक (ँ)

जिस चिह्न को चंद्रबिंदु कहते हैं, उसे अनुनासिक कहते हैं।

उदाहरण

- आँसू
- अँधेरा
- चाँद

शब्दकोश में शब्दों का क्रम

शब्दकोश में पहले अनुस्वार वाले शब्द आते हैं, फिर अनुनासिक वाले और उसके बाद सामान्य शब्द आते हैं।

उदाहरण

अं → अँ → अ

अंक → अँगूर → अगर

दूसरा उदाहरण

आं → आँ → आ

आंदोलन → आँसू → आग

मात्राओं का क्रम

जिस क्रम से स्वर आते हैं, उसी क्रम से मात्राएँ भी आती हैं।

“क” वर्ण का क्रम

कं → कै → क → का → कि → की → कु → कू → कृ → के → कै → को →
कौ → संयुक्त

उदाहरण

शब्द	मात्रा
किरण	ि (इ)
कील	ी (ई)
कुर्सी	ु (उ)
फूल	ू (ऊ)

शब्द	मात्रा
केला	े (ए)
कौआ	ौ (ऐ)

ड़ और ढ़

ड़ और ढ़ हिंदी की विशेष ध्वनियाँ हैं।
इनसे कोई शब्द शुरू नहीं होता।

उदाहरण

- लड़का
- पढ़ाई
- कढ़ाई

संयुक्त व्यंजनों का शब्दकोश में स्थान

संयुक्त व्यंजन	कहाँ खोजेंगे?
क्ष	क के बाद
ज्ञ	ज के बाद
त्र	त के बाद
श्र	श के बाद

शब्दकोश का महत्व

शब्दकोश की सहायता से –

- कठिन शब्दों के अर्थ पता चलते हैं।
- सही वर्तनी सीखते हैं।
- भाषा शुद्ध होती है।
- लेखन अच्छा होता है।
- परीक्षा की तैयारी आसान होती है।

महत्वपूर्ण तथ्य □

- हिंदी में चार मुख्य संयुक्त व्यंजन हैं – क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।
- ङ और ढ़ से कोई शब्द शुरू नहीं होता।
- शब्दकोश में अनुस्वार पहले आता है।
- पंचम वर्ण नाक से बोली जाने वाली ध्वनियाँ हैं।

गतिविधि -

शब्दकोश में खोजिए -

1. क्षत्रिय
2. ज्ञानी
3. त्रिकोण
4. श्रद्धा
5. अँगूर

अभ्यास प्रश्न

रिक्त स्थान भरिए

1. शब्दों के संग्रह को _____ कहते हैं।
2. "क्ष" एक _____ व्यंजन है।
3. "ँ" (अं) को _____ कहते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. शब्दकोश क्या है?
2. संयुक्त व्यंजन किसे कहते हैं?
3. अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर लिखिए।

निष्कर्ष

शब्दकोश भाषा सीखने का महत्वपूर्ण साधन है। यह हमें शब्दों का सही अर्थ, वर्तनी और प्रयोग सिखाता है। हिंदी वर्णमाला, मात्राओं, संयुक्त व्यंजनों तथा शब्द-क्रम का ज्ञान विद्यार्थियों को भाषा को सही ढंग से समझने और प्रयोग करने में सहायता प्रदान करता है।

आरोह भाग 1

गद्य खंड

अभ्यास

1. नमक का दारोगा (प्रेमचंद)

पाठ के मुख्य बिंदु

- **भूमिका-** कहानी उस समय की है जब भारत में नमक का नया विभाग बना था और ऊपरी कमाई की बहुत गुंजाइश थी। मुंशी वंशीधर एक ईमानदार युवक हैं, जिन्हें 'नमक का दारोगा' की नौकरी मिल जाती है।
- **घटना-** एक रात, वंशीधर ने यमुना के किनारे पंडित अलोपीदीन की नमक से भरी गाड़ियाँ गैर-कानूनी तरीके से जाते हुए पकड़ीं। अलोपीदीन क्षेत्र के सबसे प्रभावशाली और अमीर ज़मींदार थे।
- **रिश्वत का प्रस्ताव-** अलोपीदीन ने वंशीधर को 40,000 रुपये तक की रिश्वत देने की कोशिश की, लेकिन ईमानदार वंशीधर ने उसे ठुकरा दिया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया।
- **अदालत का फैसला-** अलोपीदीन ने धन के बल पर वकीलों और गवाहों को खरीद लिया। वंशीधर के पास सबूत की कमी के कारण अलोपीदीन बाइज्जत बरी हो गए और वंशीधर को नौकरी से हाथ धोना पड़ा।
- **निष्कर्ष) धन पर धर्म की जीत-** (वंशीधर की ईमानदारी देखकर अलोपीदीन का हृदय परिवर्तन हुआ। वे स्वयं वंशीधर के घर गए और उन्हें अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त किया। इस तरह सच्चाई की जीत हुई।

पाठ के पठित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नोत्तर

गद्यांश 1-जब नमक का नया विभाग बना और ईश्वर-प्रदत्त वस्तु के व्यवहार करने का निषेध हो गया तो लोग चोरी-छिपे इसका व्यापार करने लगे। अनेक प्रकार के छल-प्रपंचों का सूत्रपात हुआ, कोई पूस से काम निकालता था, कोई चालाकी से। अधिकारियों के पौ-बारह थे। पटवारीगिरी का सर्वसम्मानित पद छोड़-छोड़कर लोग इस विभाग की बरकंदाजी करते थे। इसके दारोगा पद के लिए तो वकीलों का भी जी ललचाता था। यह वह समय था, जब अंग्रेज़ी शिक्षा और ईसाई मत को लोग एक ही वस्तु समझते थे। फ़ारसी का प्राबल्य था। प्रेम की कथाएँ और शृंगार रस के काव्य पढ़कर फ़ारसीदां लोग सर्वोच्च पदों पर नियुक्त हो जाया करते थे।

प्रश्न 1 - ईश्वर प्रदत्त वस्तु क्या हैं?

- (क) नमक-विभाग
- (ख) नमक
- (ग) व्यापार
- (घ) शिक्षा

उत्तर - (ख) नमक

प्रश्न 2 – नमक के निषेध से क्या परिणाम हुआ?

- (क) नमक के निर्माण पर प्रतिबंध लगा दिया
- (ख) प्रतिबंध के कारण लोग चोरी छिपे इसका व्यापार करने लगे
- (ग) इससे रिश्तखोरी और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिला
- (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर – (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 3 – नमक विभाग की नौकरी के आकर्षण का क्या कारण था?

- (क) इसमें आराम से काम होता था
- (ख) इसमें कोई रोक-टोक करने वाला नहीं था
- (ग) इसमें ऊपर की कमाई होती थीं
- (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर – (ग) इसमें ऊपर की कमाई होती थीं

प्रश्न 4 – फ़ारसी का क्या प्रभाव था?

- (क) प्रेम की कथाएँ और श्रृंगार रस के काव्य फ़ारसी में ही थे
- (ख) फ़ारसी पढ़े लोगों को अच्छी नौकरियाँ मिल जाती थीं।
- (ग) इसमें ऊपर की कमाई करने मदद होती थीं
- (घ) इन में से कोई नहीं

उत्तर – (ख) फ़ारसी पढ़े लोगों को अच्छी नौकरियाँ मिल जाती थीं।

प्रश्न 5 – वकीलों का जी किसलिए ललचाता था?

- (क) अधिकारी पद के लिए
- (ख) अंग्रेजी पद के लिए
- (ग) व्यापारी पद के लिए
- (घ) दारोगा पद के लिए

उत्तर – (घ) दारोगा पद के लिए

गद्यांश 2-

उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे। समझाने लगे-बेटा घर की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। लड़कियां हैं । यह घास फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। मैं कगारे पर का वृक्ष हो रहा हूँ न मालूम कब गिर पड़े अब तुम्हीं घर के मालिक-मुख्तार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ। इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है। मनुष्य को देखो, उसकी आवश्यकता को देखो और अवसर को देखो उसके उपरांत जो उचित समझो, करो। गरजवाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ ही लाभ है, लेकिन बेगरज को दाँव पर पाना जरा कठिन है। इन बातों को निगाह में बाँध लो। यह मेरी जन्मभर की कमाई है।

प्रश्न 1 - ओहदे को पीर की मज़ार क्यों कहा गया है?

- (क) क्योंकि जिस तरह पीर की मज़ार पर लोग चढ़ावा चढ़ाते हैं, उसी तरह नौकरी में ऊपर की कमाई के रूप में चढ़ावा मिलता है
- (ख) क्योंकि नौकरी में ऊपर की कमाई के रूप में चढ़ावा मिलता है
- (ग) क्योंकि जिस तरह पीर की मज़ार पर लोग जाते हैं, उसी तरह नौकरी में भी लोग अधिकारियों से मिलने आते हैं
- (घ) क्योंकि पीर की मज़ार की तरह नौकरी में भी सभी इज्जत करते हैं

उत्तर - (क) क्योंकि जिस तरह पीर की मज़ार पर लोग चढ़ावा चढ़ाते हैं, उसी तरह नौकरी में ऊपर की कमाई के रूप में चढ़ावा मिलता है

प्रश्न 2 - वेतन को पूर्णमासी का चाँद क्यों कहा गया है?

- (क) क्योंकि यह जल्दी समाप्त हो जाता है
- (ख) क्योंकि यह चाँद की तरह अच्छा लगता है
- (ग) क्योंकि यह महीने में पूर्णमासी के चाँद की तरह एक बार मिलता है
- (घ) क्योंकि यह एक बार घट कर बढ़ता जाता है

उत्तर - (ग) क्योंकि यह महीने में पूर्णमासी के चाँद की तरह एक बार मिलता है

प्रश्न 3 – वेतन व ऊपरी आय में क्या अंतर हैं?

(क) वेतन पूर्णमासी के चाँद की तरह है जो एक दिन दिखता है और अंत में लुप्त हो जाता है

(ख) ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है। जिससे सदैव प्यास बुझती है

(ग) वेतन मनुष्य देता है इसलिए उसमें बढ़ोतरी नहीं होती, जबकि ऊपर की कमाई ईश्वर देता है इसलिए इसमें बरकत होती है

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर – (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4 – 'लड़कियाँ हैं यह घासफूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं।' का क्या आशय है

(क) लड़कियाँ फजूल हैं

(ख) लड़कियाँ जल्दी-जल्दी बढ़ती हैं

(ग) लड़कियाँ किसी काम की नहीं होती

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर – (ख) लड़कियाँ जल्दी-जल्दी बढ़ती हैं

प्रश्न 5 – पिता अपने बेटे को क्या सीख दे रहा है?

(क) नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मज़ार है

(ख) निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए

(ग) ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर – (घ) उपरोक्त सभी

गद्यांश 3 -

पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं। लेटे ही लेटे गर्व से बोले-चलो, हम आते हैं। यह कहकर पंडित जी ने बड़ी निश्चितता से पान के बीड़े लगाकर खाए फिर लिहाफ़ ओढ़े हुए दारोगा के पास। आकर बोले-बाबू जी, आशीर्वाद कहिए हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गई। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा-दृष्टि रहनी चाहिए। वंशीधर रुखाई से बोले-सरकारी हुक्म !

पंडित अलोपीदीन ने हँसकर कहा हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और न सरकार को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। हमारा और आपका तो घर का मामला है, हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं? मापने व्यर्थ का कष्ट उठाया। यह हो नहीं सकता कि इधर से जाएँ और इस घाट के देवता को भेंट न चढ़ावें। मैं तो आपकी सेवा में स्वयं ही आ रहा था। वंशीधर पर ऐश्वर्य की मोहिनी वंशी का कुछ प्रभाव न पड़ा। ईमानदारी की नयी उमंग थी। कड़ककर बोले-हम उन नमकहरामों में नहीं हैं जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं। आप इस समय हिरासत में हैं। आपका कायदे के अनुसार चालान होगा। बस मुझे अधिक बातों की पुरसत नहीं है। जमादार बदलू सिंह, तुम इन्हें हिरासत में ले चलो, मैं हुक्म देता हूँ।

प्रश्न 1 - लक्ष्मी जी के बारे में पंडित जी की क्या राय थी?

- (क) पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था
- (ख) वे कहते थे कि संसार और स्वर्ग में लक्ष्मी का राज है
- (ग) न्याय और नीति लक्ष्मी के इशारे पर नाचते हैं
- (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 2 - गद्यानुसार पंडित अलोपीदीन का व्यवहार कैसा है?

- (क) पंडित अलोपीदीन चालाक उद्योगपति है
- (ख) वह चापलूसी, रिश्त आदि से अपना काम निकलवाना जानता है
- (ग) पंडित अलोपीदीन एक ईमानदार व्यापारी है
- (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - (ख) वह चापलूसी, रिश्त आदि से अपना काम निकलवाना जानता है

प्रश्न 3 - गद्यानुसार वंशीधर का व्यवहार कैसा है?

- (क) वंशीधर एक चालाक दारोगा है
- (ख) रिश्त लेने में माहिर होने के कारण वह सरकारी कर्मियों व अदालत से नहीं घबराता
- (ग) वह ईमानदार है तथा गैरकानूनी कार्य करने वालों को सजा दिलाना चाहता है
- (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - (ग) वह ईमानदार है तथा गैरकानूनी कार्य करने वालों को सजा दिलाना चाहता है

प्रश्न 4 - घाट के देवता को भेंट चढ़ाने से क्या तात्पर्य है?

- (क) क्षेत्र के नमक के दरोगा को रिश्वत देना आवश्यक है
- (ख) क्षेत्र के देवता को भोग लगाना आवश्यक है
- (ग) क्षेत्र के बड़े अधिकारियों को रिश्वत देना आवश्यक है
- (घ) इन में से कोई नहीं

उत्तर - (क) क्षेत्र के नमक के दरोगा को रिश्वत देना आवश्यक है

प्रश्न 5 - वंशीधर की रुलाई का क्या कारण था?

- (क) रेत का गैर-कानूनी व्यापार
- (ख) पानी का गैर-कानूनी व्यापार
- (ग) पत्थरों का गैर-कानूनी व्यापार
- (घ) नमक का गैर-कानूनी व्यापार

उत्तर - (घ) नमक का गैर-कानूनी व्यापार

गद्यांश 4 -

दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। सवेरे देखिए तो बालक-वृद्ध सबके मुँह से यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिए, वहीं पंडित जी के इस व्यवहार पर टीका-टिप्पणी कर रहा था, निंदा की बौछारें हो रही थीं मानी संसार से अब पापी का पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचनेवाला ग्वाला, कल्पित रोजनामचे भरनेवाले अधिकारी वर्ग, रेल में बिना टिकट सफर करने वाले बाद लोग, जाली दस्तावेज़ लानानेवाले सेठ और साहूकार, यह सब-के-सब देवताओं की भाँति गरदन चला रहे थे। जब दूसरे दिन पंडित भलोपीदीन अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ, हाथों में हथकड़ियाँ, हृदय में ग्लानि और क्षोभ भरे, लज्जा से गरदन झुकाए अदालत की तरफ चले तो सारे शहर में हलचल मच गई। मेलों में कदाचित् आँखें इतनी व्यग्र न होती होंगी। भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा। किंतु अदालत में पहुँचने की देर थी। पंडित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील मुख्तार उनके आज्ञापालक और अरदली, चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिन मोल के गुलाम थे। उन्हें देखते ही लो। चारों तरफ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया, बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए? ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करनेवाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए। प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था। बड़ी तत्परता से इस आक्रमण को रोकने के निमित्त वकीलों की एक सेना तैयार की गई। न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया। वंशीधर चुपचाप खड़े थे। उनके पास सत्य के सिवा न कोई बल था, न स्पष्ट भाषण के अतिरिक्त कोई शस्त्र। गवाह थे किंतु लोभ से डाँवाडोल।

प्रश्न 1 - दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जगती थी।' से क्या तात्पर्य है -

- (क) रात के समय सब सो जाते हैं पर सपनों में सब बातें करते रहते हैं
- (ख) रात के समय हुई घटना की चर्चा आग की तरह सारे शहर में फैल गई, हर आदमी मजे लेकर यह बात एक-दूसरे बता रहा था
- (ग) जब पूरी दुनिया सो जाती है, तब कुछ लोगों की जुबान चलती है
- (घ) कुछ लोगों की जुबान सभी के सो जाने के बाद ही चलती है

उत्तर - (ख) रात के समय हुई घटना की चर्चा आग की तरह सारे शहर में फैल गई, हर आदमी मजे लेकर यह बात एक-दूसरे बता रहा था

प्रश्न 2 - देवताओं की तरह गरदने चलाने का क्या मतलब है -

- (क) स्वयं को सबसे बड़ा समझना
- (ख) स्वयं को अपराधी समझना
- (ग) स्वयं को देवता समझना
- (घ) स्वयं को निर्दोष समझना

उत्तर - (घ) स्वयं को निर्दोष समझना

प्रश्न 3 - कौन-कौन लोग गरदन चला रहे थे?

- (क) पानी को दूध के नाम से बेचने वाला ग्वाला
- (ख) नकली बही-खाते बनाने वाला अधिकारी वर्ग
- (ग) रेल में बेटिकट यात्रा करने वाले बाबू जाली दस्तावेज बनाने वाले सेठ और साहूकार
- (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4 - पंडित अलोपीदीन को अदालत रूपी वन का सिंह कहा गया, क्यों?

- (क) क्योंकि पंडित अलोपीदीन अदालत और न्याय को नहीं नहीं मानता था
- (ख) क्योंकि पंडित अलोपीदीन अदालत और न्याय से अपने आप को ऊँचा मानता था
- (ग) क्योंकि अदालत में उसके खरीदे हुए अधिकारी, अमले, अरदली, चपरासी, चौकीदार आदि थे, जो उसके हुक्म के गुलाम थे
- (घ) क्योंकि अदालत में उसके खिलाफ कोई भी सबूत नहीं था

उत्तर - (ग) क्योंकि अदालत में उसके खरीदे हुए अधिकारी, अमले, अरदली, चपरासी, चौकीदार आदि थे, जो उसके हुक्म के गुलाम थे

प्रश्न 5 - लोगों के विस्मित होने का क्या कारण था?

- (क) लोग अलोपीदीन की गिरफ्तारी से हैरान थे
- (ख) क्योंकि उन्हें अलोपीदीन की धन की ताकत व बातचीत की कुशलता का पता था कि वह छूट जाएगा
- (ग) उन्हें अलोपीदीन के पकड़े जाने पर हैरानी थी क्योंकि वह अपने धन के बल पर कानून की हर ताकत से बचने में समर्थ था

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - (घ) उपरोक्त सभी

गद्यांश 5 -

वंशीधर ने धन से बैर मोल लिया था, उसका मूल्य चुकाना अनिवार्य था। कठिनता से एक सप्ताह बीता होगा कि मुअत्तली का परवाना आ पहुँचा। कार्य-परायणता का दंड मिला। बेचारे भग्न हृदय, शोक और खेद से व्यथित घर को चले। बूढ़े मुंशीजी तो पहले ही से कुड़-बुड़ा रहे थे कि चलते-चलते इस लड़के को समझाया था लेकिन इसने एक न सुनी। सब मनमानी करता है। हम तो कलवार और कसाई के तगादे सहें, बुढ़ापे में भगत बनकर बैठें और वहाँ बस वही सूखी तनखाह हमने भी तो नौकरी की है, और कोई ओहदेदार नहीं थे, लेकिन काम किया, दिल खोलकर किया और आप ईमानदार बनने चले हैं। घर में चाहे अँधेरा हो, मस्जिद में अवश्य दीया जलाएँगे। खेद ऐसी समझ पर! पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया। इसके थोड़े ही दिनों बाद, जब मुंशी वंशीधर इस दुरावस्था में घर पहुँचे और बूढ़े पिताजी ने समाचार सुना तो सिर पीट लिया। बोले-जी चाहता है कि तुम्हारा और अपना सिर फोड़ लूँ। बहुत देर तक पछता-पछताकर हाथ मलते रहे। क्रोध में कुछ कठोर बातें भी कहीं और यदि वंशीधर वहाँ से टल न जाते तो अवश्य ही यह क्रोध विकट रूप धारण करता। वृद्ध माता को भी दुःख हुआ। जगन्नाथ और रामेश्वर यात्रा की कामनाएँ मिट्टी में मिल गईं। पत्नी ने तो कई दिनों तक सीधे मुँह से बात भी नहीं की।

प्रश्न 1 - धन से बैर मोल लेने का क्या अर्थ है -

- (क) धन गँवा लेना
- (ख) समृद्ध व्यक्ति से पन्ना लेना
- (ग) जुए में धन हार जाना
- (घ) धन से दुश्मनी ले लेना

उत्तर - (ख) समृद्ध व्यक्ति से पन्ना लेना

प्रश्न 2 - बूढ़े मुंशीजी पहले से ही क्यों कुड़-बुड़ा रहे थे -

- (क) क्योंकि उनके लड़के ने उनकी बात नहीं सुनी
- (ख) क्योंकि उनका लड़का मनमानी करता था
- (ग) क्योंकि उनका लड़का ईमानदारी की राह पर चला था
- (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 3 - जब मुंशी वंशीधर दुरावस्था में घर पहुँचे तो उनके पिता जी ने क्या किया -

- (क) बूढ़े पिताजी ने समाचार सुना तो सिर पीट लिया
- (ख) वे बोले-जी चाहता है कि तुम्हारा और अपना सिर फोड़ लूँ
- (ग) बहुत देर तक पछता-पछताकर हाथ मलते रहे

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4 - यदि वंशीधर पिता जी के क्रोध पर से टल न जाते तो अवश्य ही क्या हो जाता -

(क) क्रोध शांत हो जाता

(ख) क्रोध विकट रूप धारण करता

(ग) क्रोध कुछ समय ही रहता

(घ) दोनों को क्रोध आ जाता

उत्तर - (ख) क्रोध विकट रूप धारण करता

प्रश्न 5 - वंशीधर को वापिस घर आया देख कौन दुखी हुए -

(क) माता-पिता व पत्नी

(ख) केवल माता

(ग) केवल पत्नी

(घ) केवल पिता

उत्तर - (क) माता-पिता व पत्नी

गद्यांश 6 -

पंडित अलोपीदीन ने वंशीधर से कहा-दारोगा जी, इसे खुशामद न समझिए, खुशामद करने के लिए मुझे इतना कष्ट उठाने की जरूरत न थी। उस रात को आपने अपने अधिकार-बल से मुझे अपनी हिरासत में लिया था किन्तु आज मैं स्वेच्छा से आपकी हिरासत में हूँ। मैंने हजारों रईस और अमीर देखे, हजारों उच्च पदाधिकारियों से काम पड़ा, किन्तु मुझे परास्त किया तो आपने। मैंने सबको अपना और अपने धन का गुलाम बनाकर छोड़ दिया। मुझे आज्ञा दीजिए कि आपसे कुछ विनय करूँ। वंशीधर ने अलोपीदीन को आते देखा तो उठकर सत्कार किया किन्तु स्वाभिमान सहित। समझ गए कि यह महाशय मुझे लज्जित करने और जलाने आए हैं। क्षमा-प्रार्थना कर चेश नहीं की, वरन उन्हें अपने पिता की यह ठकुर-सुहाती की बात असह्य-सी प्रतीत हुई। पर पंडितजी की बातें सुनीं तो मन की मैल मिट गई। पंडितजी की ओर उड़ती हुई दृष्टि से देखा। सदभाव झलक रहा था। गर्व ने अब लज्जा के सामने सिर झुका दिया। शरमाते हुए बोले-यह आपकी उदारता है जो ऐसा कहते हैं। मुझसे जो कुछ अविनय हुई है, उसे क्षमा कीजिए। मैं धर्म की बेड़ी में जकड़ा हुआ था, नहीं तो वैसे मैं आपका दास हूँ। जो आज्ञा होगी, वह मेरे सिर-माथे पर। अलोपीदीन ने विनीत भाव से कहा-नदी तट पर आपने मेरी प्रार्थना नहीं स्वीकार की थी किन्तु आज स्वीकार करनी पड़ेगी।

प्रश्न 1 - रात को वंशीधर ने पंडित अलोपीदीन को अपनी हिरासत में कैसे लिया था -

- (क) अपने बल से
- (ख) अपने अधिकार से
- (ग) अपने शातिर दिमाग से
- (घ) अपने अधिकार-बल से

उत्तर - (घ) अपने अधिकार-बल से

प्रश्न 2 - वंशीधर ने अलोपीदीन को आते देखा तो -

- (क) उठकर सत्कार किया
- (ख) उठकर स्वाभिमान के लिए वहाँ से चले गए
- (ग) उठकर सत्कार किया किन्तु स्वाभिमान सहित
- (घ) गुस्से से वहाँ से चले गए

उत्तर - (ग) उठकर सत्कार किया किन्तु स्वाभिमान सहित

प्रश्न 3 - वंशीधर ने अलोपीदीन को आते देख क्या सोचा -

- (क) वे लज्जित करने आए हैं
- (ख) वे लज्जित करने और जलाने आए हैं
- (ग) वे जलाने आए हैं
- (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर - (ख) वे लज्जित करने और जलाने आए हैं

प्रश्न 4 - पंडितजी की बातें सुनीं तो वंशीधर पर क्या प्रभाव पड़ा -

- (क) वह उनकी बातें पूरी सुने बिना चला गया
- (ख) उसका गुस्सा शांत हो गया
- (ग) उसको बहुत गुस्सा आया
- (घ) उसके मन की मैल मिट गई

उत्तर - (घ) उसके मन की मैल मिट गई

प्रश्न 5 - पंडितजी की बातें सुनीं तो वंशीधर पर क्या प्रभाव पड़ा सफाई में क्या कहा -

- (क) मुझसे जो कुछ अविनय हुई है, उसे क्षमा कीजिए
- (ख) मैं धर्म की बेड़ी में जकड़ा हुआ था, नहीं तो वैसे मैं आपका दास हूँ
- (ग) जो आज्ञा होगी, वह मेरे सिर-माथे पर
- (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - (घ) उपरोक्त सभी

पाठ अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न- 1 कहानी का कौन-सा पात्र आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?

उत्तर - कहानी का नायक मुंशी वंशीधर हमें सबसे अधिक प्रभावित करता है। वह ईमानदार, कर्तव्यपरायण और धर्मनिष्ठ व्यक्ति है। उसने विषम परिस्थितियों) पिता की सलाह और घर की गरीबी के बावजूद ईमानदारी का रास्ता नहीं छोड़ा और रिश्त के लालच में नहीं फँसा।

प्रश्न - 2 'नमक का दारोगा' कहानी में पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के कौन-से दो पहलू उभरकर आते हैं?

उत्तर - भ्रष्ट और अहंकारी जमींदार :शुरुआत में वे धन के अहंकार में डूबे होते हैं और मानते हैं कि हर चीज खरीदी जा सकती है। वे रिश्त देकर कानून को खरीदने की कोशिश करते हैं।

गुणग्राही और ईमानदार :कहानी के अंत में, वे वंशीधर की सत्यनिष्ठा को पहचानते हैं और अपनी भूल स्वीकार करते हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व का सकारात्मक और मानवीय पक्ष सामने आता है।

प्रश्न - 3 कहानी में 'धन के ऊपर धर्म की जीत' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - इसका मतलब है कि सच्चाई और ईमानदारी धर्म हमेशा गलत तरीकों और पैसे धन पर भारी पड़ते हैं। अलोपीदीन का पैसा वंशीधर की ईमानदारी को नहीं खरीद सका, और अंत में उन्हें अपनी गलती माननी पड़ी।

प्रश्न - 4 वंशीधर के पिता ने उसे क्या सलाह दी थी?

उत्तर - वंशीधर के पिता ने उसे ऊपरी कमाई वाली नौकरी (रिश्त लेने वाली)खोजने की सलाह दी थी, क्योंकि वह घर की गरीबी को दूर करना चाहते थे। उन्होंने 'घर की दुर्दशा' का हवाला देकर बेईमानी को जायज ठहराया था।

प्रश्न - 5 इस कहानी के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर -प्रेमचंद यह संदेश देना चाहते हैं कि भ्रष्टाचार और अन्याय के खिलाफ अडिग रहना चाहिए। ईमानदारी से कठिन परिस्थितियों का सामना किया जा सकता है, लेकिन अंत में जीत हमेशा सत्य की ही होती है।

प्रश्न -6-पंडित अलोपीदीन का इलाके में कैसा प्रभाव था?

उत्तर - पंडित अलोपीदीन अपने इलाके के बड़े प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित जमींदार थे जो लाखों रुपयों का लेन-देन करते थे तथा धन को ही सब कुछ मानते थे। प्रत्येक व्यक्ति उनसे बहुत प्रभावित था और उनका ऋणी भी था। वे प्रत्येक व्यक्ति को धन का। लालच देकर उन्हें अपनी मुट्ठी में कर लेते और उन्हें कठपुतलियाँ बनाकर नचाते हुए उनसे सभी सही-गलत काम करवाते थे। इसी प्रकार सभी उनसे मोहित थे। इलाके का न्यायालय, वकील, पुलिस आदि सब उनके गुलाम थे।

प्रश्न - 7-यह कहानी सद्गुणों के प्रभाव की कहानी है, कैसे?

उत्तर - प्रस्तुत कथन"-यह कहानी सद्गुणों के प्रभाव की कहानी है-"पूर्णतः सत्य है। इस कहानी का नायक वंशीधर वास्तव में एक ऐसा व्यक्ति है जिसमें प्रायः सभी सद्गुणों का निवास है; जैसे-आज्ञाकारी पुत्र, ईमानदार, परिश्रमी, कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़ चरित्र वाला आदि। दूसरी ओर अलोपीदीन जिसने सदा झूठ, बेईमानी और धोखाधड़ी से ही जीवन गुजारा अपने असीमित धन से वंशीधर जैसे व्यक्ति को खरीदना चाहता था, किंतु अंत में वंशीधर के गुणों से प्रभावित होकर उसने उसे अपने ही यहाँ पर एक ऐसे पद के लिए नियुक्त किया जिसके लिए वंशीधर जैसे विश्वसनीय और ईमानदार व्यक्ति की आवश्यकता थी। इसलिए यह एक सद्गुणों के प्रभाव की कहानी है। इसमें सद्गुणों के प्रभाव में आकर अवगुणों ने घुटने टेक दिए।

प्रश्न - 8 वंशीधर की बातों को सुनकर पंडित अलोपीदीन स्तंभित क्यों रह गए?

उत्तर - पंडित अलोपीदीन को लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था। वे धन के सहारे को चट्टान समझते थे, क्योंकि उनका मानना था कि जब तक धन हो तब तक कोई तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता, किंतु जब गैर-कानूनी ढंग से नमक की बोरियाँ ले जाते हुए उन्हें नमक के दारोगा मुंशी वंशीधर द्वारा रंगे हाथों पकड़ लिया गया और उन्होंने उसे धन का लालच देकर उनसे पीछा छुड़ाना चाहा, किंतु वंशीधर ने धन स्वीकार करने से मना कर दिया, तब पंडित अलोपीदीन स्तंभित रह गए, क्योंकि अपने जीवन में उन्होंने पहली बार ऐसा मनुष्य देखा था जिसे धन का लालच न हो और जो धन से ज्यादा अपने धर्म का पालन करता हो। जो धन को देखकर डगमगाए न और जिसे धन अपने कर्तव्य-पथ से भटका नहीं सकता।

प्रश्न - 9 वंशीधर के वृद्ध पिता अलोपीदीन से लल्लो-चप्पो की बातें क्यों करने लगे?

उत्तर - वंशीधर के वृद्ध पिता पंडित अलोपीदीन से लल्लो-चप्पो अर्थात् चमचागिरी की बातें इसलिए करने लगे, क्योंकि वे जानते थे कि वे बहुत बड़े और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे और अगर उन्होंने उनका अपमान किया तो उनका जीना मुश्किल हो जाएगा। इसके अतिरिक्त वे यह भी जानते थे कि वे बहुत प्रभावशाली व्यक्ति हैं और उनके पास बहुत अधिक धन-सम्पत्ति है। इसलिए यदि वे उनको प्रसन्न रखते हैं तो कदाचित् उन्हें भी उनकी जायदाद का कुछ हिस्सा मिल सकता है। वे तो यह भी मानते थे कि उनका लड़का महामूर्ख है जिसने ऐसे प्रतिष्ठित धनी और धन को ठुकराया है, जिन्हें सब पूजते हैं। अतः धन के लोभी और हीनभाव से ग्रस्त होकर लल्लो-चप्पो की बातें करने लगे।

प्रश्न - 10 पंडित अलोपीदीन ने वंशीधर को अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर क्यों नियुक्त कर दिया?

उत्तर - पंडित अलोपीदीन ने देखा कि वंशीधर एक ईमानदार व्यक्ति हैं, जिन्हें धन भी अपने कर्तव्यपथ से नहीं हटा सकता, क्योंकि जब वे गैर-कानूनी तरीके से नमक की बोरियाँ ले जा रहे थे और उन्हें वंशीधर द्वारा रंगे हाथों पकड़ लिया गया। उनसे बचने के लिए पंडित अलोपीदीन ने उन्हें धन का लालच देना चाहा तब भी वे धन लेकर उन्हें आजाद करने के लिए राजी नहीं हुए और अपने धर्म का पालन करते हुए हिरासत में ले लिया। अतः इससे वे जान गए कि वंशीधर एक धर्मनिष्ठ और कर्तव्यपरायण व्यक्ति हैं जिन्हें धन का कोई लोभ नहीं

था। इसलिए वे जान गए कि वंशीधर ने निस्स्वार्थ भाव से कार्य कर सकते हैं। पंडित अलोपीदीन के पास बहुत अधिक जायदाद थी। इसलिए उनको उसके लेन-देन को सँभालने के लिए एक ईमानदार और जिम्मेदार व्यक्ति की खोज थी जिस पर उनकी नज़रों में केवल वंशीधर ही खरे उतर पाए। इसलिए अलोपीदीन ने वंशीधर को अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त किया।

प्रश्न - 11 वंशीधर के पिता ने किन बातों को गिरह में बाँधने की सीख दी?

उत्तर - वंशीधर के पिता ने निम्नलिखित बातों को गिरह में बाँधने की सीख वंशीधर को दी

1. ओहदे पर ऐसे नजर रखनी चाहिए जैसे पीर के मजार पर।
2. मजार पर चढ़-चढ़ावे और चादर की तरह ऊपरी कमाई पर ओहदे से ज्यादा ध्यान देना चाहिए।
3. जिस आदमी को तुमसे काम हो उससे कठोरता से पेश आना चाहिए और उससे जहाँ तक हो सके पैसे खींचना चाहिए।
4. बेगरजे आदमी से अर्थात् उन लोगों से जिन्हें तुमसे काम न हो, विनम्रता से पेश आना चाहिए, क्योंकि वे तुम्हारे किसी काम के नहीं हैं।

प्रश्न - 12 रोजगार की खोज में निकलने से पूर्व वंशीधर के घर की हालत कैसी थी?

उत्तर - रोजगार की खोज में निकलने से पूर्व वंशीधर के घर की हालत बहुत बुरी थी। उनके पिता एक साधारण पद पर नियुक्त थे तथा उनका मासिक वेतन बहुत कम था। यह धन मास के प्रारंभ में ही समाप्त हो जाता और फिर उनके घर रोजी-रोटी के लाले पड़ते थे। इसके अतिरिक्त वे ऋण के बोझ से दबे हुए थे और उनके पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं था। घर में लड़कियाँ घास-फूस की तरह बढ़ रही थीं और पिता कगार के वृक्ष हो चुके थे। आर्थिक विपन्नता ने सब को रुला रखा था।

2. पाठ : मियाँ नसीरुद्दीन

लेखक परिचय

मियाँ नसीरुद्दीन एक प्रसिद्ध लोक-चरित्र हैं, जो अपनी बुद्धिमत्ता, हाजिरजवाबी तथा व्यंग्यपूर्ण शैली के लिए जाने जाते हैं। उनकी कहानियाँ मुख्य रूप से तुर्की, ईरान और मध्य एशिया में लोकप्रिय हैं। इन कहानियों में मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा और जीवनोपयोगी संदेश भी निहित होते हैं।

पाठ का सार

यह पाठ मियाँ नसीरुद्दीन की चतुराई, व्यावहारिक बुद्धि और सूझ-बूझ को प्रस्तुत करता है। वे साधारण परिस्थितियों में भी अपनी हाजिरजवाबी से असाधारण समाधान खोज लेते हैं। उनकी बातें पहली दृष्टि में हास्यपूर्ण प्रतीत होती हैं, किन्तु उनमें गहरी सीख छिपी होती है। कहानी के माध्यम से यह बताया गया है कि नसीरुद्दीन अपनी समझदारी से कठिन परिस्थितियों को सरल बना देते हैं तथा लोगों को उनकी भूलों और अनुचित व्यवहार का एहसास कराते हैं।

मुख्य बिंदु

- मियाँ नसीरुद्दीन की हाजिरजवाबी
- हास्य के माध्यम से गंभीर शिक्षा
- सामाजिक कुरीतियों और मानवीय कमजोरियों पर व्यंग्य
- सरल एवं सहज भाषा में गहन संदेश
- व्यावहारिक बुद्धि का महत्व

पात्र-चित्रण – मियाँ नसीरुद्दीन

मियाँ नसीरुद्दीन एक बुद्धिमान, चतुर, हाजिरजवाब और हास्यप्रिय व्यक्ति हैं। वे व्यंग्यात्मक शैली में अपनी बात रखते हैं तथा अपनी व्यावहारिक बुद्धि से कठिन समस्याओं का सरल समाधान प्रस्तुत करते हैं। उनका व्यक्तित्व लोगों को सोचने और सही मार्ग अपनाने की प्रेरणा देता है।

प्रमुख संदेश

- जीवन में व्यावहारिक बुद्धि का विशेष महत्व है।
- प्रत्येक समस्या का समाधान समझदारी और धैर्य से निकाला जा सकता है।
- हास्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि प्रभावी शिक्षा का भी साधन है।
- बुद्धिमत्ता और सूझ-बूझ से कठिन परिस्थितियों पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न1: मियाँ नसीरुद्दीन किस प्रकार के व्यक्ति थे?

उत्तर : वे बुद्धिमान, हाजिर जवाब और व्यंग्यपूर्ण स्वभाव के व्यक्ति थे।

प्रश्न2: उनकी कहानियों में क्या विशेषता होती है?

उत्तर : उनकी कहानियों में हास्य के साथ गहरी सीख छिपी होती है।

प्रश्न 3 :- तुनकी क्या है और इसकी क्या विशेषता है?

उत्तर :- तुनकी एक विशेष प्रकार की रोटी है, जो पापड़ से भी अधिक पतली होती है।

प्रश्न 4 :- 'अंधड़ के आसार दिखने' से लेखिका का क्या तात्पर्य था?

उत्तर :- अंधड़ के आसार दिखने का अर्थ भयंकर तूफान आने की आशंका से है। पाठ में लेखिका का तात्पर्य उसके प्रश्नों से परेशान होकर मियाँ नसीरुद्दीन के चेहरे पर दिखने वाले रोष के भावों से है।

प्रश्न 5 :- लेखिका बादशाह का नाम क्यों जानना चाहती थी?

उत्तर :- लेखिका बादशाह का नाम इसलिए जानना चाहती थी ताकि वह मियाँ नसीरुद्दीन की बातों को ठीक से समझ सके और यह जान सके कि वह किस बादशाह का उल्लेख कर रहे हैं। इससे उसे उनके अनुभवों और विचारों को समझने में सहायता मिलती।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

प्रश्न 1 :- "मियाँ नसीरुद्दीन" पाठ का मुख्य संदेश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- इस पाठ का मुख्य संदेश यह है कि जीवन की समस्याओं का समाधान केवल ज्ञान से नहीं, बल्कि व्यावहारिक समझ और बुद्धिमत्ता से संभव है। नसीरुद्दीन अपने हास्य और चतुराई से लोगों को सही मार्ग दिखाते हैं।

प्रश्न 2 :- मियाँ नसीरुद्दीन के व्यक्तित्व एवं चरित्र की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये?

उत्तर :- छप्पन किस्म की रोटियां बनाने के लिए प्रसिद्ध मियाँ नसीरुद्दीन खानदानी पेशेवर नानबाई हैं। अपने काम के प्रति गहरी निष्ठा एवं लगाव के कारण उनके व्यक्तित्व में एक समर्पण भाव है तथा अपने व्यवसाय के प्रति गर्व के अहसास से उनमें आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा है। मियाँ अपने दिल में अपने पिता एवं दादा के प्रति असीम श्रद्धा की भावना रखते हैं। अपने व्यवसाय को वे सिर्फ पैसों को अर्जित करने का माध्यम न मानकर उसे एक हुनर अर्थात् कला के रूप में देखते हैं और काम छोटे हों या बड़े, सभी को उन्होंने अत्यंत ही उत्साह एवं तल्लीनता के साथ किया है। श्रम एवं अभ्यास को वे अपनी कला ही नहीं, बल्कि जीवन का भी मूल मंत्र मानते हैं।

प्रश्न 3 :- 'काम करने से आता है, नसीहतों से नहीं' उक्ति का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए यह किसने कही व क्यों?

उत्तर :- यह उक्ति पाठ के प्रमुख पात्र मियाँ नसीरुद्दीन ने लेखिका द्वारा उनके पिता व दादाजी से मिली किसी नसीहत अर्थात् सीख के विषय में पूछने पर कही। इस उक्ति के माध्यम से मियाँ नसीरुद्दीन का स्पष्ट करना चाहते थे कि किसी भी कार्य को सीखने व करने के लिए गुरुओं से शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक अवश्य है, किन्तु व्यक्ति किसी कार्य को तब तक पूर्ण कुशलता यानी निपुणता के साथ नहीं सीख सकता जब तक वह स्वयं उस कार्य को न करे। इसी तथ्य को सिद्ध करने के लिए उन्होंने कहा कि काम करने से आता है, नसीहतों से नहीं।

प्रश्न 4:-मियाँ नसीरुद्दीन तीसरी पीढ़ी के हैं, जिन्होंने अपने खानदानी व्यवसाय को अपनाया. वर्तमान समय में प्रायः लोग अपने पारंपरिक व्यवसाय को नहीं अपना रहे हैं, ऐसा क्यों ?

उत्तर:- वर्तमान समय में शहरीकरण व तनीकी विकास के कारण लोगों की पारंपरिक या लघु उद्योगों के प्रति रूचि समाप्त हो रही है और इन व्यवसायों को करने की अपेक्षा विदेशी कंपनियों में नौकरी करना बेहतर समझते हैं. यही कारण है कि लोग अपने पारंपरिक व्यवसाय को नहीं अपना रहे हैं.

प्रश्न 5:- 'कोई भी काम बड़ा या छोटा नहीं होता, बल्कि उस काम को करने की भावना श्रेष्ठ होनी चाहिए' पंक्ति को पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए?

उत्तर:- हमारे समाज में लोग तरह-तरह के कार्य करते हैं. प्रत्येक व्यक्ति अपनी आजीविका चलने के लिए कोई-न-कोई कार्य अवश्य करता है. सभी लोगों का कार्य करने का तरीका भी अलग-अलग होता है. कोई अपना कार्य पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा, परिश्रम एवं लगन या उत्साह के साथ करता है, तो कोई कम परिश्रम एवं कर्तव्यनिष्ठा के साथ, लेकिन वस्तुतः काम वही सफल होता है, जिसे पूर्ण ईमानदारी एवं लगन के साथ किया गया हो. कम बड़ा हो या छोटा, इससे व्यक्ति बड़ा या छोटा नहीं बनता, बल्कि उसका परिश्रम या कर्तव्यनिष्ठा श्रेष्ठ है या नहीं, इससे व्यक्ति के कद का निर्धारण होता है.

मियाँ नसीरुद्दीन नानबाई का कार्य करते हैं, लेकिन वे अपने काम को अत्यंत ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा के साथ संपन्न करते हैं, जिसका परिणाम उनकी प्रसिद्धि के रूप में सामने आता है. किसी भी काम को करने में सफलता तभी प्राप्त होती है, जब उस काम में हमारी श्रेष्ठ भावनाएँ निहित होती हैं.

(कथन-कारण) प्रश्न

निर्देश : प्रत्येक प्रश्न में कथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। सही विकल्प चुनिए :

- क. A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
- ख. A और R दोनों सही हैं, पर R, A की सही व्याख्या नहीं करता।
- ग. A सही है, R गलत है।
- घ. A गलत है, R सही है।

प्रश्न 1

कथन(A) : मियाँ नसीरुद्दीन अपनी हाजिर जवाबी के लिए प्रसिद्ध हैं।

कारण(R) : वे हर समस्या का समाधान अपनी चतुराई से करते हैं।

उत्तर : क

प्रश्न 2

कथन(A) : नसीरुद्दीन की कहानियाँ केवल मनोरंजन के लिए होती हैं।

कारण(R) : उनकी कहानियों में गहरी शिक्षा छिपी होती है।

उत्तर : घ

प्रश्न 3

कथन(A) : नसीरुद्दीन हास्य और व्यंग्य के माध्यम से शिक्षा देते हैं।

कारण(R) : वे सीधे उपदेश देने में विश्वास नहीं करते।

उत्तर : क

प्रश्न 4

कथन(A) : नसीरुद्दीन का स्वभाव गंभीर और क्रोधी था।

कारण(R) : वे अक्सर मजाकिया ढंग से बातें करते थे।

उत्तर : घ

प्रश्न 5

कथन(A) : नसीरुद्दीन की बुद्धि व्यावहारिक थी।

कारण(R) : वे केवल किताबों के ज्ञान पर निर्भर रहते थे।

उत्तर : ग

प्रश्न 6

कथन(A) : नसीरुद्दीन की कहानियाँ सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य करती हैं।

कारण(R) : वे समाज की गलतियों को उजागर करना चाहते थे।

उत्तर : क

प्रश्न 7

कथन(A) : नसीरुद्दीन कठिन परिस्थितियों को सरल बना देते हैं।

कारण(R) : वे समस्याओं से भाग जाते थे।

उत्तर : ग

प्रश्न 8

कथन(A) : नसीरुद्दीन का उद्देश्य लोगों को सही मार्ग दिखाना था।

कारण(R) : वे अपनी बुद्धिमत्ता का उपयोग दूसरों को भ्रमित करने में करते थे।

उत्तर : ग

प्रश्न 9

कथन(A) : नसीरुद्दीन की कहानियाँ केवल बच्चों के लिए हैं।

कारण(R) : उनकी कहानियाँ सभी आयु वर्ग के लोगों को शिक्षा देती हैं।

उत्तर : घ

प्रश्न 10

कथन(A) : नसीरुद्दीन की शैली व्यंग्यात्मक और हास्यपूर्ण है।

कारण(R) : उनकी बातों में गहरी सीख छिपी होती है।

उत्तर : क

3. अपू के साथ ढाई साल

लेखक: सत्यजीत राय

अपू के साथ ढाई साल, महान फिल्मकार सत्यजीत राय द्वारा लिखित एक संस्मरण है, जो उनकी पहली फिल्म "पाथेर पांचाली" (1955) के निर्माण के संघर्षपूर्ण अनुभवों को दर्शाता है। आर्थिक तंगी, कलाकारों की कमी और शूटिंग के दौरान आने वाली व्यावहारिक चुनौतियों के बावजूद, यह पाठ कला के प्रति समर्पण और धैर्य को उजागर करता है।

बहुविकल्पात्मक प्रश्न –

1. 'अपू के साथ ढाई साल' पाठ किस फिल्म के निर्माण पर आधारित है?

(क) अपूर संसार

(ख) जलसाघर

(ग) पाथेर पांचाली

(घ) गोपी गायन बाका बायेन

उत्तर: (ग) पाथेर पांचाली

3. पाथेर पांचाली फिल्म के निर्देशक कौन थे?

(क) ऋत्विक् घटक

(ख) सत्यजीत राय

(ग) बिमल रॉय

(घ) मृणाल सेन

उत्तर: (ख) सत्यजीत राय

4. फिल्म में अपू की भूमिका किसने निभाई थी?

(क) मानुष बनर्जी

(ख) सुबीर बनर्जी

(ग) रमेश बनर्जी

(घ) व्योमेश बनर्जी

उत्तर: (ख) सुबीर बनर्जी

5. फिल्म की शूटिंग कितने दिनों (या वर्षों) तक चली?

(क) 6 महीने

(ख) 1 साल

(ग) ढाई साल

(घ) 3 साल

उत्तर: (ग) ढाई साल

6. फिल्म की शूटिंग में मुख्य समस्या क्या थी?

- (क) कलाकारों का न मिलना
- (ख) आर्थिक अभाव (पैसे की कमी)
- (ग) तकनीकी पिछड़ापन
- (घ) ये सभी

उत्तर: (घ) ये सभी

7. 'भूलो' नामक कुत्ते की क्या विशेषता थी?

- (क) वह बहुत आक्रामक था
- (ख) वह सत्यजीत राय का पालतू था
- (ग) वह एक पालतू कुत्ता था जो अप्पू के साथ खाना खाता था।
- (घ) वह फिल्म में अभिनय नहीं कर सकता था।

उत्तर: (ग) वह एक पालतू कुत्ता था जो अप्पू के साथ खाना खाता था।

8. काश के फूल वाले दृश्य को एक साल बाद क्यों फिल्माया गया?

- (क) निर्देशक बीमार थे।
- (ख) पैसों की कमी के कारण शूटिंग रुक गई थी।
- (ग) कैमरा खराब हो गया था।
- (घ) भूलो कुत्ता मर गया था।

उत्तर: (ख) पैसों की कमी के कारण शूटिंग रुक गई थी।

9. पाथेर पांचाली फिल्म मूल रूप से किस भाषा में बनी थी?

- (क) हिंदी
- (ख) अंग्रेजी
- (ग) बांग्ला
- (घ) तमिल

उत्तर: (ग) बांग्ला

10. इंदिरा ठकुरानी का निधन कितने दिनों बाद हुआ?

- (क) फिल्म की शूटिंग के तुरंत बाद
- (ख) शूटिंग शुरू होने के बाद (शुरुआती दृश्यों के बाद)
- (ग) फिल्म रिलीज होने के बाद
- (घ) कभी नहीं

उत्तर: (ख) शूटिंग शुरू होने के बाद

महत्वपूर्ण बिंदु

1. अप्पू के साथ ढाई साल" पाठ के लेखक कौन हैं – सत्यजीत रे
2. "अप्पू के साथ ढाई साल" , साहित्य की कौन- सी विधा में लिखा गया है – संस्मरणात्मक
3. "अप्पू के साथ ढाई साल" पाठ में लेखक ने क्या वर्णन किया है – "पाथेर पांचाली" फिल्म को बनाने वक्त आयी आर्थिक समस्याओं व अपने खट्टे-मीठे अनुभवों को
4. प्रसिद्ध बंगाली उपन्यास "पाथेर पांचाली" के लेखक कौन है – विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
5. "पाथेर पांचाली" किस भाषा में बनाई गई हैं – बांग्ला भाषा
6. "पाथेर पांचाली" फिल्म की शूटिंग में कितने साल लगे – ढाई साल
7. "पाथेर पांचाली" फिल्म को बनाने वक्त लेखक कहाँ नौकरी करते थे – एक विज्ञापन कंपनी में
8. लेखक के अनुसार , फिल्म को शुरू करने से पहले कौन से काम के लिए बड़ा आयोजन किया गया था – कलाकार इकट्ठे करने के लिए
9. "पाथेर पांचाली" फिल्म की शूटिंग कब-कब होती थी – लेखक को कंपनी के काम से फुर्सत मिलने और पैसों का इंतजाम होने के बाद
10. "पाथेर पांचाली" फिल्म में बाल कलाकारों के क्या नाम थे – दुर्गा व अप्पू
11. अप्पू की भूमिका के लिए कितने साल के लड़के की जरूरत थी – 6 साल
12. अप्पू की भूमिका निभाने के लिए बच्चों का इंटरव्यू कहाँ लिया जाता था – रासबिहारी एवेन्यू की एक बिल्डिंग में
13. "पाथेर पांचाली" फिल्म की शूटिंग का काम कितने साल तक चला – ढाई साल
14. "पाथेर पांचाली" में अप्पू की भूमिका किसने निभाई – सुबीर बनर्जी
15. "पाथेर पांचाली" में अप्पू की भूमिका निभाने वाले सुबीर बनर्जी को किसने ढूँढ़ा – लेखक की पत्नी ने
16. फिल्म की शूटिंग के लिए लेखक अप्पू व दुर्गा को लेकर कहाँ गए – पालसिट नाम के गाँव में
17. पालसिट गाँव कहाँ बसा था – कलकत्ता से लगभग सत्तर मील दूर
18. काशफूलों से भरा मैदान कहाँ स्थित था – रेल लाइन के पास
19. सात दिन के बाद रेलवे लाइन के पास वाले काशफूलों के मैदान में आने के बाद , फिल्मकार शूटिंग आरंभ क्यों नहीं कर सके – जानवरों द्वारा काशफूल खा लेने के कारण

20. "पाथेर पांचाली" की शूटिंग हर रोज न होने के कारण लेखक को क्या डर सताने लगा था – अप्पू और दुर्गा की भूमिका निभाने वाले बच्चे समय के साथ ज्यादा बड़े न हो जाय।
21. चुन्नीलाल बाला देवी की आयु कितनी थी – 80 वर्ष
22. फिल्म में इंदिरा ठाकरुन की भूमिका किसने निभाई थी – चुन्नीबाला देवी ने
23. शूटिंग के लिए कितनी रेल गाड़ियों का इस्तेमाल किया गया था – तीन
24. शूटिंग के लिए तीन रेल गाड़ियों का इस्तेमाल क्यों किया गया – ताकि "सफेद काशफूलों की पृष्ठभूमि पर काला धुँआ छोड़ती हुई रेलगाड़ी" वाला सीन अच्छा दिखे।
25. गाड़ी के बॉयलर में क्या डालना जरूरी था जिससे काला धुँआ निकले – कोयला
26. फिल्म में कुत्ते का क्या नाम था – भूलो
27. भूलो कुत्ते की जगह दूसरा कुत्ता क्यों लाया गया – क्योंकि भूलो की मृत्यु हो गई थी
28. फिल्म में मिठाईवाले की भूमिका निभाने वाले व्यक्ति का क्या नाम था – श्रीनिवास
29. अप्पू की मां का क्या नाम था – सर्वजया
30. बरसात के मौसम में , फिल्म में बारिश का दृश्य चित्रित करने में मुश्किलें क्यों आई – पैसे की कमी के कारण
31. फिल्म में वर्षा का सीन किस मास में लिया गया – अक्टूबर माह में
32. फिल्म में अप्पू का घर किस गाँव में दिखाया गया था – वोडाल
33. लेखक को बोडाल गाँव में जो साठ – पैंसठ साल के विचित्र व्यक्ति मिले ,उनका नाम क्या था – सुबोध दा
34. सुबोध दा , लेखक को लोकगीतों की धुनें किसमें बजाकर सुनाते थे – वायलिन पर
35. अप्पू किसके साथ खेलने के लिए उतावला था – तीर कमान के साथ
36. "पुकुर" का क्या अर्थ है – पोखर
37. जिस घर में फिल्म की शूटिंग चल रही थी , उसके मालिक कहां रहते थे – कोलकाता
38. साउंड रिकॉर्डिस्ट का क्या नाम था – भूपेन बाबू
39. शूटिंग के समय कमरे में किसे देखकर भूपेन बाबू डर गए – साँप
40. फिल्म शूटिंग की टीम साँप को मारना चाहती थी मगर स्थानीय लोगों ने उन्हें क्या कह कर ऐसा करने से मना किया – साँप "वास्तुसर्प" हैं ।
41. 1985 में भारत सरकार ने सत्यजित राय को कौन से पुरस्कार से नवाजा – दादा साहेब फाल्के
42. 1992 में विश्व सिनेमा में अभूतपूर्व योगदान के लिए सत्यजित राय को कौन से पुरस्कार से नवाजा गया – मानद ऑस्कर अवार्ड

प्रश्नोत्तर

1. पाथेर पांचाली फ़िल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक क्यों चला?

उत्तर

पाथेर पांचाली फ़िल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक चलने के निम्नलिखित कारण थे-
लेखक विज्ञापन कंपनी में नौकरी करते थे, जब फ़ुर्सत मिलती थी तब शूटिंग करते थे।
पैसों का भी अभाव था जिसके कारण शूटिंग बार-बार रोकनी पड़ती।
शूटिंग के बीच में कभी स्थानों और पात्रों को लेकर भी समस्याएँ आती रहती थीं।

प्रश्न:2 अब अगर हम उस जगह बाकी आधे सीन की शूटिंग करते, तो पहले आधे सीन के साथ उसका मेल कैसे बैठता?

उसमें से 'कंटिन्युइटी' नदारद हो जाती – इस कथन के पीछे क्या भाव है?

उत्तर: किसी भी चीज़ में निरंतरता होनी चाहिए ताकि वह स्वाभाविक लगे। पाथेर पांचाली फ़िल्म में लेखक ने पहले दिन रेल लाइन के पास काशफूलों से भरा एक मैदान की शूटिंग की। चूँकि सीन बहुत बड़ा था और एक दिन में पूरा करना संभव नहीं था इसलिए सभी लोग आधा भाग चित्रित कर वापस घर चले गए। सात दिन बाद सारी टीम और लेखक जब वहाँ पहुँचे तब उन लोगों ने काशफूलों को वहाँ नहीं पाया। उन सात दिनों में जानवरों ने सारे काशफूलों को खा लिया था। अगर लेखक उसी दृश्य में शूटिंग कर लेते तो वह पहले के भाग से मेल नहीं खाता और उसकी निरंतरता भंग हो जाती जिससे फ़िल्म में वास्तविकता का अभाव हो जाता।

प्रश्न :3. किन दो दृश्यों में दर्शक यह पहचान नहीं पाते कि उनकी शूटिंग में कोई तरकीब अपनाई गई है?

उत्तर: श्रीनिवास और भूलो नामक कुत्ता के पात्र वाले दृश्यों में दर्शक यह पहचान नहीं पाते कि उनकी शूटिंग में कोई तरकीब अपनाई गई है। भूलो नामक कुत्ता वाला दृश्य - एक दृश्य में अपू खाते-खाते ही कमान से तीर छोड़ता है। उसके बाद खाना छोड़कर तीर वापस लाने के लिए जाता है। सर्वजया बाएँ हाथ में वह थाली और दाहिने हाथ में निवाला लेकर बच्चे के पीछे दौड़ती है, लेकिन बच्चे के भाव देखकर जान जाती है कि वह अब कुछ नहीं खाएगा। भूलो कुत्ता भी खड़ा हो जाता है। उसका ध्यान सर्वजया के हाथ में जो भात की थाली है, उसकी ओर है। इसके बाद वाले शॉट में ऐसा दिखाना था कि सर्वजया थाली में बचा भात एक गमले में डाल देती है, और भूलो वह भात खाता है। लेकिन यह शॉट लेखक उस दिन नहीं ले पाते हैं, क्योंकि सूरज की रोशनी और पैसे दोनों खत्म हो गए थे। छह महीने बाद, फिर से पैसे इकट्ठा होने पर गाँव में उस सीन का बाकी अंश चित्रित करने के लिए लेखक गए परन्तु तब भूलो मर चुका था। फिर भूलो जैसे दिखनेवाले एक कुत्ते के साथ शूटिंग पूरी की गई। श्रीनिवास वाला दृश्य - श्रीनिवास नामक घूमते मिठाईवाले से मिठाई खरीदने के लिए अपू और दुर्गा के पास पैसे नहीं हैं। वे तो मिठाई खरीद नहीं सकते, इसलिए अपू और दुर्गा उस मिठाईवाले के पीछे-पीछे मुखर्जी के घर के पास जाते हैं। मुखर्जी अमीर आदमी हैं। उनका मिठाई खरीदना देखने में ही अपू और दुर्गा की खुशी है। इस दृश्य का कुछ अंश चित्रित होने के बाद शूटिंग कुछ

महीनों के लिए स्थगित हो गई। पैसे हाथ आने पर फिर जब उस गाँव में शूटिंग करने के लिए लेखक गए, तब खबर मिली कि श्रीनिवास मिठाईवाले की भूमिका जो सज्जन कर रहे थे, उनका देहांत हो गया है। पहले वाले श्रीनिवास का मिलता-जुलता दूसरा आदमी ढूँढ़कर दृश्य का बाकी अंश चित्रित किया।

प्रश्न 4. 'भूलो' की जगह दूसरा कुत्ता क्यों लाया गया? उसने फ़िल्म के किस दृश्य को पूरा किया?

उत्तर: भूलो को गमले में भात खाते वाला दृश्य लेखक को चित्रित करना था परन्तु सूरज की रोशनी खत्म हो चुकी थी और लेखक के पास पैसे भी नहीं थे इसलिए इसके बाद का दृश्य छह महीने बाद फिल्माया गया। तब तक भूलो की मृत्यु हो चुकी थी इसलिए 'भूलो' की जगह दूसरा कुत्ता को लाया गया। उसने गमले में पड़े भात को खाया और उस दृश्य को पूरा किया।

प्रश्न 5. फ़िल्म में श्रीनिवास की क्या भूमिका थी और उनसे जुड़े बाकी दृश्यों को उनके गुज़र जाने के बाद किस प्रकार फिल्माया गया?

उत्तर : फ़िल्म में श्रीनिवास की भूमिका मिठाई बेचने वाले की थी। श्रीनिवास की भूमिका से संबंधित कुछ अंश शूट होने के बाद कुछ महीनों के लिए शूटिंग स्थगित हो गई। इसी बीच श्रीनिवास की भूमिका निभा रहे व्यक्ति की मृत्यु हो गयी। तब उस पात्र से मिलते-जुलते आदमी की खोज की गयी। लेखक को उसकी जगह जो आदमी मिला, उसकी कद-काठी तो श्रीनिवास से मिलती थी परन्तु चेहरा अलग था। इसलिए बाकी के दृश्यों में उसकी पीठ दिखाकर फ़िल्म पूरा किया गया।

प्रश्न 6. किसी फ़िल्म की शूटिंग करते समय फ़िल्मकार को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन्हें सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर • पैसे की समस्या • पात्रों का चयन • प्राकृतिक समस्या (बारिश, धूप, ओलावृष्टि आदि) • पात्रों की मृत्यु या अनुपस्थिति • शूटिंग के लिए उचित स्थानों की खोज

.....

1. विदाई संभाषण

लेखक-बालमुकुन्द गुप्त

पाठ का सारांश-

यह पाठ लार्ड कर्ज़न के भारत में दो बार वायसराय के पद पर (1899से 1904 एवं 1904 से 1905तक) रहनेवाले समय में भारतीयों की स्थिति के विषय में खुलासा करता है। यह अध्याय शिव शम्भु के चिट्ठे का अंश है। कर्ज़न के शासनकाल में विकास के बहुत कार्य हुए , नए -नए आयोग बनाए गए किन्तु उन सबका उद्देश्य शासन में अँग्रेजों का वर्चस्व स्थापित करना तथा इस देश के संसाधनों का उनके हित के लिए उपयोग करना था। वे सरकारी निरंकुशता के पक्षधर थे अतः प्रेस की स्वतंत्रता पर उन्होंने प्रतिबन्ध लगा दिया अंततः ब्रिटिश काउन्सिल में अपने मनपसंद अँग्रेज़ सदस्य को नियुक्त करवाने के मुद्दे पर उन्हें देश-विदेश दोनों जगह नीचा देखना पड़ा, क्षुब्ध होकर उन्होंने इस्तीफ़ा दे दिया और उन्हें वापस इंग्लैंड जाना पड़ा।

लेखक ने भारतीयों के दुःख, लाचारी और बेबसी को लार्ड कर्ज़न की लाचारी से व्यंग्यात्मक ढंग से जोड़ने की कोशिश की है। यह निबंध उस समय लिखा गया है जब प्रेस पर पाबंदी का दौर था ऐसी स्थिति में विनोदप्रियता, चुटीलापन, गंभीरता, भाषा के प्रवाह से युक्त यह साहसपूर्ण गद्य का उदाहरण है।

लेखक व्यंग्य करते हुए कहता है कि लीलामय की लीला (ईश्वरेच्छा) सर्वोपरि है जबकि कर्ज़न स्वयं को पूरी तरह कर्ता -धर्ता समझते थे और अब ऐसी अपमानजनक परिस्थिति में देश छोड़ना पड़ रहा है। यद्यपि आपकी क्रूरता से दुखी भारतवासी आपके जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे किन्तु बिछड़न का समय पवित्र निर्मल और करुण होता है और भारत में तो पशु-पक्षी भी कोमल हृदय होते हैं इस सन्दर्भ में लेखक शिवशम्भू की दो गायों का उदाहरण देकर पुनः चुटकी लेते हैं कि हम भी आपके जाने से दुखी हैं।

कर्ज़न ने मनमाने शासन, हुक्मशाही, प्रजा के हित की उपेक्षा और प्रजा की प्रार्थना पर भी केवल अपनी ज़िद पूरी करने के लिए फैसले लेने में कैसर, जार और नादिरशाह जैसे तानाशाहों को भी पीछे छोड़ दिया। इस भारत और यहाँ की जनता ने उन्हें सर्वोच्च स्थान दिया , आलीशान शाही अदब और सम्मान दिया किन्तु वे इसके प्रति कृतज्ञ न हो सके लेखक नरवरगढ़ के नर सुल्तान नामक राजकुमार का उदाहरण देकर लार्ड कर्ज़न की अनुदारता पर तंज कसते हैं।

पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न-

विचारिये तो क्या शान आपकी इस देश में थी और अब क्या हो गई। कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे। अलिफ़ लैला के अलाहूदीन ने चिराग रगड़ कर और अबुलहसन ने बग़दाद के खलीफ़ा की गद्दी पर आँख खोलकर वह शान न देखी जो दिल्ली दरबार में आपने देखी। आपकी और आपकी लेडी की कुर्सी सोने की थी और आपके प्रभु महाराज के छोटे भाई और उनकी पत्नी की चाँदी की। आप दाहिने थे, वह बाएँ, आप प्रथम थे वह दूसरे। इस देश के सब रईसों ने आपको पहले सलाम किया और बादशाह के भाई को पीछे। जुलूस में आपका हाथी सबसे आगे और सबसे ऊँचा था, हौदा, चँवर, छत्र आदि सबसे बढ़चढ़कर थे। सारांश यह है कि ईश्वर और महाराज एडवर्ड के बाद इस देश में आपका ही एक दर्जा था किन्तु अब देखते हैं कि जंगी लाट के मुकाबले में आपने पटखनी खाई, सर के बल नीचे आ रहे। आपके स्वदेश में वही ऊँचे माने गए, आपको साफ़ नीचा देखना पड़ा पद-त्याग की धमकी से भी ऊँचे न हो सके।

प्रश्न .1- कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे किसके लिए कहा गया है?

क-लेखक के लिए

ख-भारतीय शासकों के लिए

ग-लार्ड कर्ज़न के लिए

घ-उक्त तीनों के लिए

प्रश्न .2- अबुल हसन कहाँ का खलीफ़ा था?

क -दिल्ली का

ख -बग़दाद का

ग-अरब का

घ-ईरान का

प्रश्न .3- महाराज के छोटे भाई और उनकी पत्नी की कुर्सी किसकी बनी थी?

क -चाँदी की

ख -सोने की

ग -तांबे की

घ -लोहे की

प्रश्न .4-जुलूस में किसका हाथी सबसे आगे और सबसे ऊँचा होता था?

क -सेनापति का

ख -मंत्री का

ग -महाराज का

घ-लार्ड कर्ज़न का

प्रश्न.5-लार्ड कर्ज़न ने किस बात की धमकी दी थी?

क -इंग्लैण्ड जाने की

ख -भारत में रहने की

ग -पद त्याग की

घ -इंग्लैण्ड न जाने की

उत्तरमाला

1. (ग)
2. (ख)
3. (क)
4. (घ)
5. (ग)

वर्णनात्मक प्रश्न

प्र 1. शिवशम्भू की दो गायों की कहानी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर-लेखक शिवशम्भू की दो गायों की कहानी के माध्यम से यह कहना चाहता है कि भारत में मनुष्य ही नहीं पशुओं में भी साथ रहने वालों के प्रति लगाव होता है चाहे उनके बीच कटुता ही क्यों न रही हो। वे उस व्यक्ति के बिछड़ने पर भी दुखी होते हैं जो उन्हें कष्ट पहुँचाता है। यहाँ भावना प्रमुख होती है। हमारे देश में पशु-पक्षियों को भी बिछड़ने के समय उदास देखा गया है। बिछड़ते समय वैर-भाव को भुला दिया जाता है, विदाई का समय बड़ा करुणोत्पादक होता है। इसीलिये लार्ड कर्ज़न जैसे क्रूर आततायी के लिए भी भारत की निरीह जनता सहानुभूति का भाव रखती है।

प्रश्न 2. आठ करोड़ प्रजा के गिडगिडाकर विच्छेद न करने की प्रार्थना पर आपने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया-यहाँ किस ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर -लेखक ने यहाँ बंगाल-विभाजन की ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया है। लार्ड कर्ज़न दो बार भारत का वायसराय बनकर आया। उसने भारत पर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थाई करने के उद्देश्य से अनेक काम किये। भारत में राष्ट्रवादी भावनाओं को कुचलने के लिए उसने बंगाल विभाजन करने की योजना बनाई, देश की जनता उसकी इस चाल को समझ गई और इस बात का विरोध किया परन्तु कर्ज़न ने अपनी ज़िद पूरी की और बंगाल के दो हिस्से कर दिए -पूर्वी बंगाल और पश्चिमी बंगाल।

प्रश्न 3. कर्ज़न को इस्तीफ़ा क्यों देना पड़ा?

उत्तर -कर्ज़न को इस्तीफ़ा देना पड़ा क्योंकि-

1. कर्ज़न ने बंगाल का विभाजन राष्ट्रवादी ताक़तों को तोड़ने के लिए किया था, परन्तु इसका परिणाम उल्टा हुआ सारा देश एकजुट हो गया और ब्रिटिश शासन की जड़ें हिल गईं।
2. कर्ज़न इंग्लैण्ड में एक फौजी अफसर को ब्रिटिश काउन्सिल में अपने इच्छित पद पर नियुक्त करवाना चाहता था पर उसकी सिफारिश को नहीं माना गया। इस से क्षुब्ध होकर उसने इस्तीफ़ा देने की धमकी दी। ब्रिटिश सरकार ने उसका इस्तीफ़ा मंज़ूर कर लिया।

प्रश्न 4. विचारिये तो क्या शान आपकी इस देश में थी और अब क्या हो गई। कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे का आशय स्पष्ट कीजिये।

उत्तर -लेखक कहता है कि कर्जन की भारत में शान थी दिल्ली दरबार में उसका वैभव चरम सीमा पर था। पति-पत्नी दोनों की कुर्सी सोने की थी। उसका हाथी सबसे ऊँचा व सबसे आगे रहता था सम्राट के भाई का स्थान भी इनसे नीचा था इसके इशारे पर प्रशासन, राजा, अमीर सब नाचते थे। इसके संकेत पर बड़े-बड़े राजाओं को मिट्टी में मिला दिया गया तथा अनेक निकम्मों को बड़े पद मिले। इस देश में भगवन और एडवर्ड के बाद उसका स्थान था परन्तु इस्तीफ़ा देने के बाद सब कुछ ख़त्म हो गया। इसकी सिफारिश पर एक आदमी भी नहीं रखा गया ज़िद के कारण सारे लाव-लशकर और वैभव से हाथ धोना पड़ा।

प्रश्न 5. आपके और यहाँ के निवासियों के बीच कोई तीसरी शक्ति और भी है- यहाँ तीसरी शक्ति किसे कहा गया है?

उत्तर- निरंकुश लार्ड कर्जन स्वयं को, सर्वशक्ति संपन्न मान बैठा था। भारतीय जनता उसकी मनमानी सह रही थी। उसका सोचना था कि ब्रिटिश हुकूमत उसके कार्यों से प्रसन्न है तो वो जैसा चाहेगा अपनी बात मनवा सकता है किन्तु ब्रिटिश हुकूमत ने उसकी इच्छानुसार एक फौजी अफसर को ब्रिटिश काउन्सिल में रखने के मुद्दे पर ना तो उसकी बात को माना और ना ही उसकी इस्तीफ़ा देने की धमकी पर कोई ध्यान दिया बल्कि इस्तीफ़ा मंज़ूर कर लिया अतः उसे यहाँ से जाना पड़ा इसी बात पर लेखक कहना चाहते हैं कि कर्जन और भारतीय जनता के बीच एक तीसरी शक्ति ब्रिटिश हुकूमत है जिस पर न लार्ड कर्जन का नियंत्रण है और न ही भारत के निवासियों का। इंग्लैण्ड की महारानी का शासन न कर्जन की बात सुनता है और न ही कर्जन के खिलाफ भारतीय जनता की गुहार सुनता है।

प्रश्न 6. पाठ का यह अंश शिवशम्भु के चिट्ठे से लिया गया है। शिवशम्भु नाम की चर्चा पाठ में भी हुई है। बालमुकुन्द गुप्त ने इस नाम का उपयोग क्यों किया होगा?

उत्तर -शिवशम्भू एक काल्पनिक पात्र है जो खरी- खरी बात कहता है। यह पात्र अंग्रेजों की कुनीतियों को उजागर करता है, लेखक ने इसका उपयोग सरकारी क़ानून के कारण किया। कर्जन ने प्रेस की अभिव्यक्ति पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। उस समय ब्रिटिश साम्राज्य से सीधी टक्कर लेने के हालात नहीं थे परन्तु शासन की पोल खोलकर जनता को जागरूक भी करना था। अतः काल्पनिक पात्र के ज़रिये अपनी बातें कहलवाई जाती थीं।

प्रश्न 7. नादिर से बढ़कर आपकी ज़िद है-क़र्ज़न के सन्दर्भ में क्या आपको ये बात सही लगती है? तर्कसहित बताइए।

उत्तर -जी हाँ क़र्ज़न के सन्दर्भ में हमें यह बात सही लगती है। नादिरशाह एक क्रूर शासक था उसने दिल्ली में कल्लेआम करवाया परन्तु आसिफ़जः ने तलवार गले में डालकर उसके आगे समर्पण कर कल्लेआम रोकने की प्रार्थना की तो तुरंत कल्लेआम रोक दिया गया था। क़र्ज़न ने बंगाल-विभाजन किया। आठ करोड़ भारतवासियों के बार-बार विनती करने पर भी उसने अपनी ज़िद नहीं छोड़ी और जनहित की उपेक्षा की। इससे साबित होता है कि वह अधिक क्रूर और जिद्दी था।

प्रश्न 8. राजकुमार सुल्तान का उल्लेख लेखक ने किस सन्दर्भ में किया है?

उत्तर -लेखक ने राजकुमार सुल्तान का उल्लेख इसलिए किया है क्योंकि उनकी तुलना में वह भारत और यहाँ के निवासियों के प्रति लार्ड क़र्ज़न की कृतघ्नता पर प्रकाश डालना चाहते हैं। राजकुमार अपने संकट के दिनों में नरवरगढ़ में रहे और वहाँ से विदा लेते समय उन्होंने उस धरती पर लिए गए आश्रय, जल, अन्न, वायु तथा लोगों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की और अपने हृदय में प्रजा की शुभचिन्ता तथा स्त्रियों के प्रति सदा सम्मान का भाव रखा। जबकि लार्ड क़र्ज़न का आचरण उनसे सर्वथा विपरीत था यहाँ हर तरह के सुख, वैभव इत्यादि का उपभोग करने, सम्मान पाने के बावजूद वह यहाँ की धरती और निवासियों के प्रति सदैव निष्ठुर और अहितकारी बना रहा।

5. गलता लोहा

गलता लोहा (कहानी) सारांश

गलता लोहा शेखर जोशी की कहानी कला का एक प्रतिनिधि नमूना है। समाज के जातिगत विभाजन पर कई कोणों से टिप्पणी करने वाली यह कहानी इस बात का उदाहरण है कि शेखर जोशी के लेखन में अर्थ की गहराई का दिखावा और बड़बोलापन जितना भी कम है वास्तविकता में वास्तविक अर्थ गाम्भीर्य उतना ही अधिक है। लेखक की किसी मुखर टिप्पणी के बगैर ही पूरे पाठ से गुजरते हुए हम यह देख पाते हैं कि एक मेधावी किंतु निर्धन ब्राह्मण युवक मोहन किन परिस्थितियों के चलते उस मनोदशा तक पहुँचता है कि उसके लिए जाति अभिमान बेमानी हो जाता है। सामाजिक विधि निषेध को ताक पर रखकर वह धनराम लोहार के आफ़र पर बैठता ही नहीं, उसके काम में भी अपनी कुशलता दिखाता है। मोहन का व्यक्तित्व जातिगत आधार पर निर्मित झूठे भाईचारे की जगह मेहनतकशों के सच्चे भाईचारे की प्रस्तावना प्रस्तुत करता प्रतीत होता है मानों लोहा गलकर एक नया रूप, नया आकार ले रहा हो।

पठित गद्यांश

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए-
धनराम की मंदबुद्धि रही हो या मन में बैठा हुआ डर कि पूरे दिन घोंटा लगाने पर भी उसे तेरह का पहाड़ा याद नहीं हो पाया था। छुट्टी के समय जब मास्साब ने उससे दुबारा पहाड़ा सुनाने को कहा तो तीसरी सीढ़ी तक पहुँचते-पहुँचते वह फिर लड़खड़ा गया था। लेकिन इस बार मास्टर त्रिलोक सिंह ने उसके लिए हुए बेंत का उपयोग करने की बजाय ज़बान की चाबुक लगा दी थी, 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?' अपने थैले से पाँच-छह दराँतियाँ निकालकर उन्होंने धनराम को धार लगा लाने के लिए पकड़ा दी थीं। किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य धनराम के पिता की नहीं थी। धनराम हाथ-पैर चलाने लायक हुआ ही था कि बाप ने उसे धौंकनी फूंकने या सान लगाने के कामों में उलझाना शुरू कर दिया और फिर धीरे-धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

(i) पूरे दिन घोंटा लगाने पर भी धनराम क्या याद नहीं कर पाया?

(क) हिंदी की कविता

(ख) तेरह का पहाड़ा

(ग) अंग्रेजी की वर्णमाला

(घ) स्वर और व्यंजन वर्ण

उत्तर: (ख) तेरह का पहाड़ा

(ii) धनराम पर ज़बान की चाबुक किसने लगाई?

(क) मोहन के पिता ने

(ख) मोहन ने

(ग) मास्टर त्रिलोक सिंह ने

(घ) धनराम के पिता ने

उत्तर: (ग) मास्टर त्रिलोक सिंह ने

(iii) मास्टर त्रिलोक सिंह ने अपने थैले से कितनी दराँतियाँ निकालकर धनराम को धार लगाने के लिए दी?

(क) पाँच-छह

(ख) सात-आठ

(ग) तीन-चार

(घ) चार-पाँच

उत्तर: (क) पाँच-छह

(iv) किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य किसकी नहीं थी?

(क) मोहन के पिता की

(ख) धनराम के पिता की

(ग) मास्टर त्रिलोक सिंह की

(घ) धनराम की

उत्तर: (ख) धनराम के पिता की

(v) धनराम के पिता किसे घन चलाने की विद्या सिखाने लगे?

(क) मोहन को

(ख) पुरोहित को

(ग) मास्टर त्रिलोक सिंह को

(घ) धनराम को

उत्तर: (घ) धनराम को

बहुविकल्पीय प्रश्न अभ्यास

1. कहानी का अंत किस भाव से होता है?

(क) निराशा

(ख) आत्मविश्वास और नई शुरुआत

(ग) लड़ाई

(घ) अलगाव

उत्तर: (ख) आत्मविश्वास और नई शुरुआत

2. कहानी किस वर्ग के भाईचारे की बात करती है?

(क) ब्राह्मणों के

(ख) मेहनतकशों के

(ग) अमीरों के

(घ) छात्रों के

उत्तर: (ख) मेहनतकशों के

3. कहानी का मुख्य संदेश क्या है?

(क) पढ़ाई का महत्व

(ख) जातिगत अभिमान की निरर्थकता

(ग) शहर की सुविधाएँ

(घ) दोस्ती का महत्व

उत्तर: (ख) जातिगत अभिमान की निरर्थकता

4. मोहन के पिता का नाम क्या था?

(क) गंगाराम

(ख) वंशीधर

(ग) त्रिलोक सिंह

(घ) धनराम

उत्तर: (ख) वंशीधर

5. 'गलता लोहा' कहानी के लेखक कौन हैं?

- (क) प्रेमचंद
 - (ख) शेखर जोशी
 - (ग) यशपाल
 - (घ) जयशंकर प्रसाद
- उत्तर: (ख) शेखर जोशी

6. 'गलता लोहा' पाठ की विधा क्या है?

- (क) संस्मरण
 - (ख) रेखाचित्र
 - (ग) कहानी
 - (घ) नाटक
- उत्तर: (ग) कहानी

7. कहानी के अनुसार असली गरिमा किसमें है?

- (क) जाति में
 - (ख) काम और मेहनत में
 - (ग) धन में
 - (घ) पढ़ाई में
- उत्तर: (ख) काम और मेहनत में

8. मोहन किसके साथ और किस शहर में रहकर पढ़ा था?

- (क) गोपाल के साथ लखनऊ में
 - (ख) रमेश के साथ इलाहाबाद में
 - (ग) रमेश के साथ लखनऊ में
 - (घ) महेश के साथ दिल्ली में
- उत्तर: (ग) रमेश के साथ लखनऊ में

दो अंक वाले प्रश्न अभ्यास -

प्रश्न 1 गलता लोहा पाठ में लोहे का गलना किस ओर संकेत करता है ?

उत्तर :- लोहे का गलना जातिगत अभिमान के टूटने की ओर संकेत करता है। वर्तमान समय में लोहे की तरह मजबूत दिखने वाली जाति व्यवस्था बेरोजगारी, शिक्षा आदि के कारण कमजोर हुई है।

प्रश्न 2. मोहन ने पुरोहिती का धंधा क्यों नहीं अपनाया ?

उत्तर- मोहन घर की स्थितियाँ देखकर समझ चुका था कि पुरोहिती-कर्म से उसका गुजारा नहीं हो सकता। उसके पिता ने इस कर्म के बल पर जैसे-तैसे पेट पाला लेकिन उसे इस व्यवसाय में कोई रुचि नहीं थी।

प्रश्न 3. मास्टर त्रिलोक सिंह मोहन पर क्यों मुग्ध थे?

उत्तर- मास्टर त्रिलोक सिंह मोहन की प्रतिभा, उसकी गायकी और उसकी उच्च पारिवारिक पृष्ठभूमि(ब्राह्मण)के कारण उस पर मुग्ध थे। उन्हें मोहन पर विश्वास था कि वह आगे चलकर स्कूल और उनका नाम रोशन करेगा।

तीन अंक वाले प्रश्न अभ्यास -

प्रश्न 1. धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी क्यों नहीं समझता था?

उत्तर- धनराम के मन में तथाकथित नीची जाति के होने की बात बचपन से ही बिठा दी गई थी। होशियार होने के कारण मास्टर जी ने मोहन को कक्षा का मॉनीटर बना दिया था। मास्टर जी को आशा थी कि एक दिन मोहन बड़ा आदमी बनकर स्कूल और उनका नाम रोशन करेगा। उसे भी मोहन से बहुत आशाएँ थीं। इन सभी कारणों से वह मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझता था।

प्रश्न 2 धनराम को मोहन के किस व्यवहार पर आश्चर्य होता है और क्यों?

उत्तर- मोहन ब्राह्मण जाति का था। गाँवों में ऊँची और नीची जाति के लोग एक साथ उठते-बैठते नहीं थे। यदि उन्हें बैठने के लिए कह दिया जाता तो भी उनकी मर्यादा भंग होती थी। धनराम की दुकान पर काम खत्म होने के बाद भी मोहन देर तक बैठा रहा। यह देखकर धनराम हैरान हो गया। वह और अधिक हैरान तब हुआ जब मोहन ने उसके हाथ से हथौड़ा लेकर लोहे पर नपी-तुली चोट मारने लगा और धौंकनी फूंकते हुए भट्टी में गरम किया और ठोक पीठकर उसे गोल रूप दे रहा था।

प्रश्न 3 मोहन के लखनऊ आने के बाद के समय को लेखक ने उसके जीवन का एक नया अध्याय' क्यों कहा है?

उत्तर लेखक ने मोहन के लखनऊ प्रवास को उसके जीवन का एक नया अध्याय कहा है। यहाँ आने पर उसका जीवन बँधी-बँधाई लीक पर चलने लगा था। वह सुबह से शाम तक नौकर की तरह काम करता था। नए वातावरण व काम के बोझ के कारण मेधावी छात्र की प्रतिभा कुंठित हो गई। उसके उज्ज्वल भविष्य की कल्पनाएँ नष्ट हो गई। अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए उसे कारखानों और फैक्ट्रियों के चक्कर लगाने पड़े। उसे कोई काम नहीं मिल सका।

प्रश्न 4 . मास्टर त्रिलोक सिंह के किस कथन को लेखक ने ज़बान के चाबुक कहा है और क्यों?

उत्तर:- जब धनराम तेरह का पहाड़ा नहीं सुना सका तो मास्टर त्रिलोक सिंह ने व्यंग्य वचन कहे- 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?' लेखक ने इन व्यंग्य वचनों को 'जबान के चाबुक' कहा है। चमड़े की चाबुक शरीर पर चोट करती है, परंतु ज़बान की चाबुक मन पर चोट करती है। यह चोट कभी ठीक नहीं होती। इस चोट के कारण धनराम आगे नहीं पढ़ पाया और वह पढ़ाई छोड़कर पुश्तैनी काम में लग गया।

प्रश्न 5 वंशीधर को धनराम के शब्द क्यों कचोटते रहे?

उत्तर- वंशीधर को अपने पुत्र से बड़ी आशाएँ थी। वे उसके अफसर बनकर आने के सपने देखते थे। एक दिन धनराम ने उनसे मोहन के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि उसकी सफ्रेटोरियट में नियुक्ति हो गई है। शीघ्र ही वह बड़े पद पर पहुँच जाएगा। धनराम ने उन्हें कहा कि मोहन लला बचपन से ही बड़े बुद्धिमान थे। ये शब्द वंशीधर को कचोटते रहे, क्योंकि उन्हें मोहन की वास्तविक स्थिति का पता चल चुका था। लोगों से प्रशंसा सुनकर उन्हें दुःख होता था।

प्रश्न 6. गाँव और शहर, दोनों जगहों पर चलने वाले मोहन के जीवन-संघर्ष में क्या फर्क है?

उत्तर- गाँव में मोहन अपने लिए संघर्ष कर रहा था। दूसरे गाँव की पाठशाला में जाने के लिए प्रतिदिन नदी पार करना, मन लगाकर पढ़ना, हर अध्यापक के मन में अपनी जगह बनाना-ये सारे संघर्ष वह अपना भविष्य बनाने और अपने माता-पिता के सपने पूरे करने के लिए कर रहा था। लखनऊ शहर में जाकर रमेश के घर में आलू लाना, दही लाना, धोबी को कपड़े देकर आना-ये सब काम वह रमेश के परिवार के लिए कर रहा था। इससे उसका अपना भविष्य धूमिल हो गया और माता-पिता के सपने टूट गए। गाँव का होनहार बालक शहर में घरेलू नौकर बनकर रह गया था।

प्रश्न 7 “ उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक थी” -कहानी का यह वाक्य- किस प्रसंग में कहा गया है?

उत्तर - मोहन धनराम की दुकान पर हँसुवे में धार लगवाने आता है। काम पूरा हो जाने के बाद भी वह वहीं बैठा रहता है। धनराम एक मोटी लोहे की छड़ को गरम करके उसका गोल घेरा बनाने का प्रयास कर रहा होता है, परंतु सफल नहीं हो पा रहा है। मोहन ने अपनी जाति की परवाह न करके हथौड़े से नपी-तुली चोट मारकर उसे सुघड़ गोले का रूप दे दिया। अपने सधे हुए अभ्यस्त हाथों के कमाल के उपरांत उसकी आँखों में सर्जक की चमक थी।

प्रश्न 8 एक अध्यापक के रूप में मास्टर त्रिलोक सिंह का व्यक्तित्व आपको कैसा लगता है ? उनकी खूबियों और कमियों की चर्चा करें ।

उत्तर :- एक आदर्श अध्यापक के रूप में मास्टर त्रिलोक सिंह का व्यक्तित्व हमको निराशा ही करता है । यह सही है कि वे अनुशासन प्रिय हैं और प्रतिभा संपन्न छात्रों की प्रतिभा का सम्मान करते हैं लेकिन उनके द्वारा अनुशासन दंड और भय के आधार पर कायम किया जाता है जो कि गलत है । वे छात्रों को छात्रों के द्वारा लाई गई डंडियों से पीटते हैं, छात्रों को छात्रों से पीटवाते हैं । उनके द्वारा जातिगत भेदभाव को मानना और जातिगत टिप्पणी करना किसी भी तरह स्वीकार्य नहीं है ।

6. रजनी (मन्नू भंडारी)

श्रीमती मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल 1931, ई० को भानपुरा, मध्यप्रदेश में हुआ था। मन्नू भंडारी 'नई कहानी' आंदोलन की एक प्रमुख स्तंभ रही हैं। उनकी कहानियों और उपन्यासों में नारी-जीवन, पारिवारिक विसंगतियों और सामाजिक समस्याओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण मिलता है। वे आक्रोश और संवेदना को रचनात्मक आधार देने में निपुण हैं।

• प्रमुख रचनाएँ

आपका बंटी, महाभोज) उपन्यास; (एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, यही सच है) कहानी संग्रह; (रजनी) पटकथा।

मन्नू भंडारी द्वारा रचित प्रस्तुत पाठ 'रजनी' मूलतः एक धारावाहिक (पटकथा) का अंश है। यह व्यावसायिक होती जा रही शिक्षा पद्धति और ट्यूशन के धंधे पर एक करारा प्रहार है। 'रजनी' पटकथा का मूल भाव शिक्षा के व्यवसायीकरण और समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना है। यह नाटक दिखाता है कि कैसे निजी स्कूल ट्यूशन के लिए छात्रों पर दबाव डालते हैं, और यह एक निडर महिला रजनी के संघर्ष की कहानी है जो व्यवस्था के खिलाफ लड़कर बदलाव लाती है।

शब्द-छवि

कांग्रेचुलेशंस - बधाई हो, मुबारक हो
हाफ़-ईयरली - छमाही, अर्द्धवार्षिक
बेगुनाह - जिसका कोई गुनाह न हो, निर्दोष
हिकारत - उपेक्षा
डायरेक्टर ऑफ़ एजुकेशन - शिक्षा निदेशक
रिकगनाइज़ - मान्य
रिसर्च प्रोजेक्ट - शोध परियोजना
कंडक्ट - संचालन
सुनतीच नई - सुनती ही नहीं
दखलअंदाज़ी - हस्तक्षेप

पाठ – रजनी (पटकथा)

लेखिका – मन्नू भंडारी

पाठ का सार

'रजनी' प्रसिद्ध साहित्यकार मन्नू भंडारी द्वारा लिखित एक लोकप्रिय धारावाहिक की पटकथा है। यह धारावाहिक पिछली सदी के नवें दशक में अत्यंत लोकप्रिय था। इसकी प्रत्येक कड़ी स्वतंत्र होते हुए भी मुख्य पात्र रजनी के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ी रहती थी। रजनी एक साहसी, जागरूक, जुझारू और न्यायप्रिय महिला है, जो सामाजिक समस्याओं के विरुद्ध आवाज़ उठाती है।

प्रस्तुत पाठ में शिक्षा के व्यवसायीकरण तथा विद्यालयों में अध्यापकों द्वारा जबरन ट्यूशन पढ़ाने की समस्या को उजागर किया गया है।

कहानी की शुरुआत रजनी की पड़ोसन लीला के घर से होती है। रजनी उसे बाज़ार चलने के लिए कहती है, लेकिन लीला अपने बेटे अमित के परीक्षा परिणाम की प्रतीक्षा कर रही होती है। रजनी को विश्वास होता है कि अमित के अच्छे अंक आएंगे, क्योंकि वह एक होनहार छात्र है।

जब अमित घर आता है, तो पता चलता है कि उसे गणित में केवल 72 अंक मिले हैं। कारण पूछने पर अमित बताता है कि उसके गणित के अध्यापक ने कई बार ट्यूशन पढ़ने के लिए कहा था, लेकिन उसने ट्यूशन नहीं ली। इसी कारण अध्यापक ने जानबूझकर उसके अंक कम दिए।

रजनी इस अन्याय के विरुद्ध सबसे पहले विद्यालय के प्रधानाचार्य (हेडमास्टर) से शिकायत करती है, लेकिन वे इसे अध्यापक और छात्र का व्यक्तिगत मामला बताकर टाल देते हैं। रजनी के पति भी उसे इस विवाद से दूर रहने की सलाह देते हैं, परंतु रजनी अन्याय के सामने झुकने वाली नहीं होती।

इसके बाद रजनी शिक्षा निदेशक से शिकायत करती है, लेकिन वहाँ भी उसकी समस्या पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं होती। निराश होने के बजाय वह एक समाचार-पत्र के संपादक से मिलती है। संपादक उसके प्रयासों का समर्थन करता है और अभिभावकों की एक बैठक आयोजित कराने में सहायता करता है।

बैठक में रजनी प्रस्ताव रखती है कि जो अध्यापक विद्यार्थियों को जबरन ट्यूशन लेने के लिए बाध्य करें या ट्यूशन न लेने पर उनके अंक काटें, उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाए। बोर्ड रजनी के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता है।

इस प्रकार रजनी अपने साहस, दृढ़ निश्चय और संघर्ष के बल पर शिक्षा में फैली एक गंभीर समस्या के विरुद्ध सफल आंदोलन चलाती है और शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने का महत्वपूर्ण प्रयास करती है।

मुख्य संदेश

- शिक्षा सेवा का माध्यम है, व्यवसाय का नहीं।
- अन्याय और भ्रष्टाचार के विरुद्ध साहसपूर्वक आवाज़ उठानी चाहिए।
- जागरूक नागरिक समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।
- सत्य, साहस और दृढ़ संकल्प से कठिन से कठिन समस्या का समाधान संभव है।

गद्यांश

रजनी... : पर अमित ,तुम इतना दुखी क्यों हो रहे हो ?तुमने तो सारा पेपर ठीक किया था न?

लीला : पेपर तो इसने बहुत अच्छा किया था ,पर इसके मैक्स वाले सर बार-बार कह रहे थे कि अमित ,तुम मुझसे ट्यूशन लो वरना पछताओगे। और देखो ,वही हुआ। अमित के सिर्फ 72 नंबर आए हैं ,जबकि उसे पूरे 95 मिलने चाहिए थे(रजनी) : गुस्से में (यह तो साफ-साफ धांधली है ! अगर बच्चा काबिल है और वह ट्यूशन नहीं लेता ,तो क्या टीचर उसके नंबर काट लेगा ?मैं इस मामले को ऐसे ही नहीं छोड़ूँगी।"

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उपर्युक्त गद्यांश में ' धांधली 'शब्द का क्या अर्थ है?

- क. ईमानदारी
- ख. अव्यवस्था या बेईमान
- ग. कठिन परिश्रम
- घ. अनुशासन

उत्तर :ख. अव्यवस्था या बेईमानी

2.अमित के गणित में कम नंबर आने का मुख्य कारण क्या था?

- क. उसने पढ़ाई नहीं की थी।
- ख. बहुत कठिन था।
- ग. उसने टीचर से ट्यूशन नहीं ली थी।
- घ. उसकी तबियत खराब थी।

उत्तर ग उसने टीचर से ट्यूशन नहीं ली थी।

3 अमित को कितने अंक मिलने की उम्मीद थी) ?

- क. 72 ख. 80 ग. 95 घ. 100

उत्तर - ग. 95

4 .रजनी का चरित्र इस गद्यांश में कैसा उभर कर आता है?

- क. डरी हुई महिला
- ख. संघर्षशील और न्यायप्रिय
- ग. लापरवाह पड़ोस (
- घ. स्वार्थी स्वभाव वाली

उत्तर - ख - संघर्षशील और न्यायप्रिय

"5. इस मामले को ऐसे ही नहीं छोड़ूँगी -"रजनी के इस कथन से उसकी किस भावना का पता चलता है?

- क. बदला लेने की भावना
- ख. हार मान लेने की भावना
- ग. अन्याय के विरुद्ध लड़ने का संकल्प
- घ. मजाक करने की आदत

उत्तर :ग अन्याय के विरुद्ध लड़ने का संकल्प

बोधात्मक और विश्लेषणात्मक प्रश्न: -

प्रश्न.1 गलती करने वाला तो है ही गुनहगार ,पर उसे बर्दाश्त करने वाला भी कम गुनहगार नहीं होता-इस संवाद के संदर्भ में आप सबसे ज्यादा किसे और क्यों गुनहगार मानते हैं?

उत्तर:मेरी दृष्टि में दोनों ही दोषी हैं-ट्यूशन के लिए जबरदस्ती करने वाला अध्यापक भी और उस जबरदस्ती को सहने वाला व्यक्ति भी। जबरदस्ती सहन करने वाला व्यक्ति कुछ अधिक दोषी है क्योंकि वह अन्याय का विरोध करने की शक्ति नहीं जुटा पाता। वह अन्याय को अन्याय करने की छूट देता है। इससे अन्याय का साहस बढ़ता है।

प्रश्न.2 स्त्री के बारे में बनी धारणा से रजनी का चेहरा किन मायनों में अलग है?

उत्तर:रजनी का चेहरा स्त्री के चरित्र की धारणा से बिल्कुल भिन्न है। भारतीय स्त्री सहनशील , कोमल और त्यागमयी मानी जाती है , जबकि रजनी संघर्षशील , असहिष्णु , जुझारू और शक्तिशाली है। वह अन्याय को सहन नहीं करती बल्कि उसके विरुद्ध संघर्ष करती है और लोगों को भी जागरूक करती है।

प्रश्न.3 रजनी के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:रजनी इस पाठ की नायिका है। उसके चरित्र का सबसे बड़ा गुण है-संघर्षशीलता। वह अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने में सक्षम है। वह निडर , जागरूक तथा आत्मविश्वास से भरपूर महिला है। वह दूसरों को भी अन्याय के विरुद्ध खड़ा होने के लिए प्रेरित करती है। वह सच्चे अर्थों में नायिका है।

प्रश्न.4 वार्षिक परीक्षा की कॉपियों में दिखाने के पीछे क्या तर्क है ?क्या आप उससे सहमत हैं?

उत्तर:हेडमास्टर महोदय वार्षिक परीक्षा की कॉपियों में दिखाने के पीछे केवल यही तर्क देते हैं कि ऐसा करने से छात्रों तथा उनके अभिभावकों की भीड़ लग जाएगी। उन्हें निपटाना एक झंझट हो जाएगा।

मैं हेडमास्टर जी के इस तर्क से सहमत नहीं हूँ क्योंकि छात्रों के भविष्य के साथ इस प्रकार का व्यवहार उचित नहीं है।

प्रश्न.5 ट्यूशन पढ़ाने वाले पाठक जी किस युक्ति से अमित को ट्यूशन पढ़ने के लिए बाध्य करते हैं?

उत्तर:वे अमित को डराते हैं कि अच्छे अंक लाने के लिए ट्यूशन जरूरी है।वे यह धमकी देते हैं कि ट्यूशन न लेने पर उसे नुकसान होगा।वे अन्य बच्चों का उदाहरण देकर उसे मानसिक दबाव में डालते हैं।

प्रश्न.6 रजनी , पाठ का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर:यह पाठ शिक्षा के व्यावसायीकरण , ट्यूशन के बढ़ते प्रभाव और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की आवश्यकता को दर्शाता है। यह हमें सिखाता है कि अन्याय का विरोध करना जरूरी है , क्योंकि चुप रहने से अन्याय बढ़ता है। समाज में बदलाव लाने के लिए जनसहभागिता आवश्यक है।

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास - प्रश्न

प्रश्न 1 – रजनी ने अमित के मुद्दे को गंभीरता से लिया, क्योंकि –

(क) वह अमित से बहुत स्नेह करती थी।

(ख) अमित उसकी मित्र लीला का बेटा था।

(ग) वह अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने की सामर्थ्य रखती थी।

(घ) उसे अखबार की सुर्खियों में आने का शौक था।

उत्तर – (ग) वह अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने की सामर्थ्य रखती थी।

प्रश्न – 2 जब किसी का बच्चा कमज़ोर होता है ,तभी उसके माँ-बाप ट्यूशन लगवाते हैं। अगर लगे कि कोई टीचर लूट रहा है ,तो उस टीचर से न ले ट्यूशन ,किसी और के पास चले जाएँ ...यह कोई मज़बूरी तो है नहीं – प्रसंग का उल्लेख करते हुए बताएँ कि यह संवाद आपको किस सीमा तक सही या गलत लगता है ,तर्क दीजिए।

उत्तर – प्रसंग – रजनी शिक्षा निदेशक के पास ट्यूशन के रैकेट के बारे में बताती है। वह कहती है कि बच्चों को जबरदस्ती ट्यूशन करने के लिए कहा जाता है। ऐसे लोगों के खिलाफ बोर्ड क्या कर रहा है ?निदेशक इस बात को गंभीरता से नहीं लेकर यह बात कहता है। निदेशक का उपरोक्त वक्तव्य गैरजिम्मेदाराना है। वह ट्यूशन को गलत नहीं मानता। वह इसके जरिए बच्चों के शोषण को नहीं रोकना चाहता। जबकि वह अपने अधिकारों का इस्तेमाल करके इस व्यवस्था को ठीक कर सकता है। परन्तु इस तरह का व्यवहार बिल्कुल गलत है।

प्रश्न 3 – "तो एक और आंदोलन का मसला मिल गया।" – फुसफुसाकर कही गई यह बात

(क) किसने किस प्रसंग में कही?

(ख) इससे कहने वाले की किस मानसिकता का पता चलता है?

उत्तर –

(क) यह बात रजनी के पति रवि ने पेरेण्ट्स मीटिंग के दौरान कही। रजनी ने अपने भाषण में प्राइवेट स्कूलों के शिक्षकों की समस्याओं का उल्लेख किया। उसने बताया कि उन्हें बहुत कम वेतन मिलता है और इस अन्याय के विरुद्ध संगठित होकर आंदोलन करने की आवश्यकता है। इसी प्रसंग में रवि ने यह बात फुसफुसाकर कही।

(ख) रवि की इस बात से उसकी उदासीन और स्वार्थी मानसिकता का पता चलता है। वह समाज में होने वाले अन्याय के प्रति गंभीर नहीं है तथा ऐसे आंदोलनों को अनावश्यक समझता है। वह केवल अपने तक सीमित रहना चाहता है।

प्रश्न 4 – रजनी धारावाहिक की इस कड़ी की मुख्य समस्या क्या है? क्या होता अगर –

(क) अमित का पर्चा सचमुच खराब होता।

(ख) संपादक रजनी का साथ न देता।

उत्तर –

इस कड़ी की मुख्य समस्या है – ट्यूशन न पढ़ने वाले छात्र के साथ अध्यापक द्वारा पक्षपात करना तथा उसे जानबूझकर कम अंक देना। इससे विद्यार्थी की मेहनत और योग्यता का उचित मूल्यांकन नहीं हो पाता।

(क) यदि अमित का पर्चा सचमुच खराब होता, तो उसे कम अंक मिलना स्वाभाविक होता। वह, उसकी माँ और रजनी इतनी चिंतित नहीं होते तथा इस विषय पर आंदोलन की आवश्यकता भी नहीं पड़ती।

(ख) यदि संपादक रजनी का साथ न देता, तो यह समस्या सीमित लोगों तक ही रह जाती। जनसमर्थन और मीडिया का सहयोग न मिलने से आंदोलन प्रभावी नहीं बन पाता और संभवतः रजनी की माँगें पूरी नहीं हो पातीं।

7. जामुन का पेड़

लेखक परिचय

प्रेमचंद के बाद जिन कहानीकारों ने कहानी विद्या को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया उनमें उर्दू कथाकार कृष्णचंदर का नाम महत्वपूर्ण है। उनका जन्म सन 1914 ईस्वी में पंजाब के वजीराबाद गाँव जिला गुजरात कला में हुआ था तथा उनकी मृत्यु सन 1977 ईस्वी में हुई। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- एक गिरजा-ए-खंदक, यूकेलिप्टस की डाली (कहानी संग्रह), सड़क वापस जाती है, आसमान रौशन है, एक गधे की आत्मकथा, अन्नदाता, हम वहशी हैं।, जब खेत जागे, बावन पत्ते, कागज की नाव, मेरी यादों के किनारे (उपन्यास) आदि।

कहानी का सारांश

कहानी की शुरुआत एक साधारण लेकिन दुखद घटना से होती है—एक आदमी जामुन के पेड़ के नीचे दब जाता है। आसपास के लोग इकट्ठा हो जाते हैं और उसकी मदद करने की सोचते हैं, लेकिन समस्या यह होती है कि पेड़ को हटाने के लिए सरकारी अनुमति चाहिए। सबसे पहले मामला स्थानीय प्रशासन तक पहुँचता है। वहाँ से यह सोचकर कि पेड़ को काटना उनका काम नहीं है, मामला दूसरे विभाग को भेज दिया जाता है। इस तरह फाइल एक दफ्तर से दूसरे दफ्तर घूमती रहती है—वन विभाग, नगर निगम, पुलिस विभाग, और न जाने कितने कार्यालय।

हर विभाग अपने-अपने नियमों और जिम्मेदारियों का हवाला देकर काम टालता रहता है। कोई कहता है कि पेड़ काटने की अनुमति चाहिए, कोई कहता है कि यह जमीन उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं आती। इस पूरे समय में, वह आदमी पेड़ के नीचे फंसा हुआ तड़पता रहता है और मदद की गुहार लगाता है।

धीरे-धीरे मामला इतना जटिल हो जाता है कि उसे “फाइल” बना दिया जाता है। अधिकारी उस पर नोटिंग करते हैं, हस्ताक्षर करते हैं, और उसे आगे बढ़ा देते हैं—लेकिन कोई भी तुरंत निर्णय लेने की हिम्मत नहीं करता।

इस बीच, उस आदमी की हालत लगातार बिगड़ती जाती है। लोग उसकी मदद करना चाहते हैं, लेकिन “नियमों” के डर से कोई कदम नहीं उठाते। अंततः, जब तक सभी औपचारिकताएँ पूरी होती हैं और पेड़ हटाने की अनुमति मिलती है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है—वह आदमी दम तोड़ देता है।

कहानी का मुख्य व्यंग्य और संदेश

1. सरकारी तंत्र पर कटाक्ष

कहानी दिखाती है कि कैसे सरकारी व्यवस्था में काम करने के बजाय जिम्मेदारी टालने की प्रवृत्ति अधिक होती है।

2. फाइलों की संस्कृति

यह “फाइल घुमाने” की प्रक्रिया पर व्यंग्य है, जहाँ असली समस्या पीछे छूट जाती है और कागजी कार्रवाई आगे बढ़ती रहती है।

3. मानवीय संवेदनाओं की कमी

सबसे बड़ा दुखद पहलू यह है कि एक इंसान की जान से ज्यादा महत्व नियमों और प्रक्रियाओं को दिया जाता है।

4. समय का महत्व

कहानी यह संदेश देती है कि सही समय पर निर्णय न लेने से गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

गद्यांश आधारित प्रश्न:-

प्रश्न:- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

गद्यांश . 1 :- "दूसरे दिन जब फॉरेस्ट डिपार्टमेंट के आदमी आरी-कुल्हाड़ी लेकर पहुँचे तो उनको पेड़ काटने से रोक दिया गया। मालूम हुआ कि विदेश विभाग से हुक्म आया था कि इस पेड़ को ना काटा जाए। कारण यह था कि इस पेड़ को दस साल पहले पीटोनिया राज्य के प्रधानमंत्री ने सेक्रेटेरिएट के लॉन में लगाया था। अब अगर यह पेड़ काटा गया तो इस बात का काफी अंदेशा था कि पीटोनिया सरकार से हमारे संबंध सदा के लिए बिगड़ जाएंगे।

"मगर एक आदमी की जान का सवाल है," एक क्लर्क चिल्लाया।

"दूसरी ओर दो राज्यों के संबंधों का सवाल है।"

दूसरे क्लर्क ने पहले क्लर्क को समझाया- "और यह भी तो समझो कि पीटोनिया सरकार हमारे राज्य को कितनी सहायता देती है - क्या हम उनकी मित्रता की खातिर एक आदमी के जीवन का भी बलिदान नहीं कर सकते? निसंदेह ! कवि को मर जाना चाहिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1: फॉरेस्ट डिपार्टमेंट के आदमियों को पेड़ काटने से किसने रोका?

- (क) विदेश विभाग के हुक्म ने
- (ख) कृषि विभाग ने
- (ग) सांस्कृतिक विभाग ने
- (घ) उद्यान विभाग ने

उत्तर: (क) विदेश विभाग के हुक्म ने।

प्रश्न 2: जामुन का पेड़ किसने लगाया था?

- (क) पीटोनिया राज्य के प्रधानमंत्री ने।
- (ख) पीटोनिया राज्य के सेक्रेटरी ने।
- (ग) पीटोनिया राज्य के विदेश सचिव ने।
- (घ) पीटोनिया राज्य के राष्ट्रपति ने।

उत्तर: (क) पीटोनिया राज्य के प्रधानमंत्री ने।

प्रश्न 3: पेड़ काटने से किस बात का अंदेशा था?

1. कवि के मर जाने का।
2. दो राज्यों के संबंध सदा के लिए खराब होने का।
3. पीटोनिया सरकार से संबंध सदा के लिए बिगड़ जाने का।
4. पेड़ के फल कभी खाने को नहीं मिलेंगे।

(क) विकल्प 1 सही है।

(ख) विकल्प 2 व 3 सही हैं।

(ग) विकल्प 3 सही है।

(घ) विकल्प 4 सही है।

उत्तर: (ख) विकल्प 2 व 3 सही हैं।

प्रश्न 4: पहले क्लर्क ने किस बात पर जोर दिया?

उत्तर: एक आदमी की जान बचाने पर।

प्रश्न 5: दूसरे क्लर्क के अनुसार कवि को क्यों मर जाना चाहिए?

उत्तर: पीटोनिया सरकार की मित्रता और सहायता की खातिर, क्योंकि दो राज्यों के संबंध एक जान से बड़े हैं।

उत्तर 1. क 2. क 3. ख

गद्यांश.2:- "हार्तिकल्चर डिपार्टमेंट का सेक्रेटरी साहित्य प्रेमी आदमी जान पड़ता था। उसने लिखा था 'आश्चर्य है, इस समय जब हम 'पेड़ लगाओ स्कीम' ऊँचे स्तर पर चला रहे हैं, हमारे देश में ऐसे सरकारी अफसर मौजूद हैं जो पेड़ों को काटने का सुझाव देते हैं, और वह भी एक फलदार पेड़ को, और वह भी जामुन के पेड़ को, जिसके फल जनता बड़े चाव से खाती है। हमारा विभाग किसी हालत में इस फलदार वृक्ष को काटने की इजाजत नहीं दे सकता।"

प्रश्न 1: हार्तिकल्चर डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी ने पेड़ काटने से मना क्यों किया?

- (क) क्योंकि पेड़ बहुत पुराना था ।
- (ख) क्योंकि 'पेड़ लगाओ स्कीम' चल रही थी और वह फलदार पेड़ था ।
- (ग) क्योंकि कवि को पेड़ से प्यार था।
- (घ) क्योंकि विदेश विभाग ने मना किया था ।

उत्तर: (ख) क्योंकि 'पेड़ लगाओ स्कीम' चल रही थी और वह फलदार पेड़ था।

प्रश्न 2:- सेक्रेटरी को किस बात पर 'आश्चर्य' हुआ?

- (क) कवि के पेड़ के नीचे दबने पर
- (ख) पेड़ लगाओ स्कीम के दौरान पेड़ काटने का सुझाव देने वाले अफसरों पर
- (ग) जनता के जामुन खाने पर
- (घ) विदेश विभाग के आदेश पर

उत्तर: (ख) पेड़ लगाओ स्कीम के दौरान पेड़ काटने का सुझाव देने वाले अफसरों पर।

प्रश्न 3:- गद्यांश के अनुसार जनता किस पेड़ के फल 'बड़े चाव से' खाती है?

- (क) आम के पेड़
- (ख) नीम के पेड़
- (ग) जामुन के पेड़
- (घ) पीपल के पेड़

उत्तर: (ख) जामुन के पेड़

प्रश्न 4:- हार्तिकल्चर डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी को कैसा आदमी बताया गया है?

उत्तर:- हार्तिकल्चर डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी को साहित्य-प्रेमी आदमी बताया गया है।

प्रश्न 5:- इस गद्यांश से हार्तिकल्चर विभाग की किस मानसिकता का पता चलता है?

उत्तर: इससे हार्तिकल्चर विभाग की संवेदना शून्यता का पता चलता है।, उनके लिए नियम और स्कीम इंसान की जान से ज्यादा जरूरी हैं।

बोधात्मक और विश्लेषणात्मक प्रश्न:-

प्रश्न 1: "जामुन का पेड़" शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। यह कहानी की किस विडंबना को उजागर करता है?

उत्तर:- शीर्षक प्रतीकात्मक और व्यंग्यपूर्ण है। पूरी कहानी में जामुन का पेड़ केंद्र में है, पर विवाद का कारण वहीं पेड़ बन जाता है। विडंबना यह है कि एक आदमी की जान से ज्यादा महत्वपूर्ण वह पेड़ और उससे जुड़ी फाइल बन जाती है। सभी विभाग पेड़ को बचाने की बात करते हैं, इंसान को नहीं। इसलिए 'जामुन का पेड़' शीर्षक नौकरशाही की संवेदनहीनता को पूरी तरह सार्थक करता है।

प्रश्न 2: कहानी 'लाल फीताशाही' पर कैसे व्यंग्य करती है? दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर: लाल फीताशाही यानी काम को नियम-कानून के जाल में उलझाकर टालना। कहानी इस पर तीखा व्यंग्य करती है: -

विदेश विभाग कहता है कि पेड़ इसलिए नहीं काट सकते क्योंकि इसे 'पीटोनिया' के प्रधानमंत्री ने लगाया था। इससे अंतर्राष्ट्रीय संबंध खराब हो जाएंगे। तथा एक विभाग से दूसरे विभाग तक फाइल चलती रहती है और हर विभाग अपनी जिम्मेदारी से बचता है। जब तक फाइल पूरी होकर आदेश आता है, कवि मर जाता है। यह दिखाता है कि व्यवस्था में इंसान से ज्यादा कागज़ जरूरी है।

प्रश्न 3: कहानी का अंत त्रासद होते हुए भी हास्यपूर्ण क्यों लगता है? लेखक का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: -अंत त्रासद है क्योंकि एक जिंदा इंसान व्यवस्था की वजह से मर जाता है। पर हास्यपूर्ण इसलिए लगता है क्योंकि पूरी प्रक्रिया बेहद बेतुकी है - एक गिरे हुए आदमी के लिए देश-विदेश तक फाइल घूमती है। लेखक कृष्णचंदर का उद्देश्य 'करुण हास्य' पैदा करना है। वे हँसाते-हँसाते पाठक को सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि हमारी व्यवस्था कितनी अमानवीय हो चुकी है।

प्रश्न 4:- क्या कवि की मृत्यु को टाला जा सकता था? आप सचिवालय में होते तो क्या करते?

उत्तर: - हाँ, कवि की मृत्यु आसानी से टाली जा सकती थी। नियम से पहले मानवता जरूरी है। मैं सचिवालय में होता तो:

1. तुरंत पेड़ कटवाकर कवि को निकालता।
2. फाइल बाद में और औपचारिकता पूरी करता।

प्रश्न 5:-आज के समय में इस कहानी की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

उत्तर:-यह कहानी आज भी पूरी तरह प्रासंगिक है। आज भी सरकारी दफ्तरों में फाइलें महीनों घूमती हैं। उदाहरण: किसी गरीब का इलाज के अभाव में मर जाना क्योंकि 'आयुष्मान कार्ड' में नाम नहीं है, या सड़क पर गड्ढे की वजह से एक्सीडेंट होना क्योंकि PWD और नगर निगम तय नहीं कर पाते कि जिम्मेदारी किसकी है। 'जामुन का पेड़' हर उस जगह जिंदा है जहाँ व्यवस्था इंसान से बड़ी हो जाती है।

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास - प्रश्न

प्रश्न 1. "बेचारा जामुन का पेड़। कितना फलदार था।"

और इसकी जामुनें कितनी रसीली होती थीं।

(क) ये संवाद कहानी के किस प्रसंग में आए हैं?

(ख) इससे लोगों की कैसी मानसिकता का पता चलता है?

उत्तर:- (क) ये संवाद सेक्रेटेरियेट के लॉन में जामुन के पेड़ के गिरने से संबंधित हैं। रात की आँधी में पेड़ के नीचे एक आदमी दब गया। सुबह माली ने उसे देखा और क्लकों को सूचना दे दी। वहाँ सभी इकट्ठे हो जाते हैं। वे सभी जामुन के पेड़ की प्रशंसा में चर्चा करते हैं किंतु उन्हें उसके नीचे दबे व्यक्ति की कोई चिंता नहीं है।

(ख) इससे लोगों की संवेदनशून्यता तथा स्वार्थपरता का पता चलता है। उन्हें दबे हुए जिंदा आदमी की पीड़ा से कुछ लेना-देना नहीं है बल्कि जामुन की चिंता है।

प्रश्न 2:- दबा हुआ आदमी एक कवि है, यह बात कैसे पता चली और इस जानकारी का फाइल की यात्रा पर क्या असर पड़ा?

उत्तर:- जब रात को माली ने दबे हुए आदमी के मुँह में खिचड़ी डाली तो उसे यह भी बताया कि तुम्हारे लिए सेक्रेटारियों की मीटिंग होगी और मामला शीघ्र ही निपट जाएगा। इस पर दबे हुए आदमी ने मिर्जा गालिब का एक शेर सुनाया। शेर सुनकर माली ने पूछा, "क्या तुम शायर हो?"

प्रश्न 3 : कृषि-विभाग वालों ने मामले को हॉर्टिकल्चर विभाग को सौंपने के पीछे क्या तर्क दिया?

उत्तर:- कृषि विभाग वालों ने तर्क दिया कि कृषि विभाग अनाज और खेती-बाड़ी से संबंधित मामलों में फैसले लेने का अधिकार है। जामुन का पेड़ फलदार वृक्ष है, इसलिए यह मामला हॉर्टिकल्चर विभाग के अंतर्गत आता है। अतः उन्होंने फाइल हॉर्टिकल्चर विभाग को सौंप दी।

प्रश्न 4:- इस पाठ में सरकार के किन-किन विभागों की चर्चा की गई है और पाठ से उनके कार्य के बारे में क्या अंदाजा मिलता है?

उत्तर:- इस पाठ में व्यापार विभाग के अलावा अनेक सरकारी कार्यालयों के नामों का उल्लेख किया गया है-

हॉर्टिकल्चर डिपार्टमेंट (उद्यान विभाग) :- उद्यानों की व्यवस्था देखता है।

एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट (कृषि विभाग) :- फ़सल और पैदावार आदि की व्यवस्था देखता है।

फॉरेस्ट डिपार्टमेंट (वन विभाग) :- पेड़ों के रख रखाव से संबंधित विभाग।

मेडिकल डिपार्टमेंट (स्वास्थ्य विभाग) :- जो रोगियों और बीमारों का इलाज करता है।

कल्चरल डिपार्टमेंट (सांस्कृतिक विभाग):- जो कि सांस्कृतिक मामलों से संबंध रखता है; कवि, कलाकार, चित्रकार आदि को प्रोत्साहन देता है।

इस पाठ में इनमें से एक भी विभाग को उस कवि के मरने - जीने से कोई मतलब नहीं है बस वे सब अपनी - अपनी औपचारिकताएँ निभा रहे हैं।

8. भारत माता (जवाहर लाल नेहरू)

लेखक परिचय:- जन्म:- सन 1889, इलाहाबाद (उ. प्र.)

प्रमुख रचनाएँ :- मेरी कहानी, (आत्मकथा), विश्व इतिहास की झलक, हिंदुस्तान की कहानी, पिता के पत्र पुत्री के नाम, , हिंदुस्तान की समस्याएँ, आदि।

मृत्यु:- सन् 1964

भारत माता - संक्षिप्त सारांश

यह लेख नेहरू जी की पुस्तक 'हिंदुस्तान की कहानी' का एक अध्याय है।

- **देश की एकता की चर्चा:** नेहरू जी जब भी देश के अलग-अलग कोनों में जलसों (सभाओं) में जाते थे, तो वे किसानों और आम जनता से 'हिंदुस्तान' या 'भारत' की चर्चा करते थे। वे उन्हें समझाते थे कि उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक पूरा भारत भौगोलिक विविधताओं के बाद भी एक ही देश है।
- **किसानों की साझा समस्याएँ:** वे विशेष रूप से किसानों से बात करते थे क्योंकि पूरे देश के किसानों की समस्याएँ एक जैसी थीं—जैसे गरीबी, कर्ज, जमींदार, पुलिस के अत्याचार और भारी लगान।
- **'भारत माता की जय' का वास्तविक अर्थ:** जब सभाओं में लोग 'भारत माता की जय' का नारा लगाते, तो नेहरू जी उनसे पूछते थे कि इस नारे में 'भारत माता' से उनका क्या मतलब है। लोग अक्सर इसका अर्थ केवल अपने गाँव या जिले की धरती समझते थे।
- **जनता ही भारत माता है:** नेहरू जी उन्हें समझाते थे कि भारत के पहाड़, नदियाँ, जंगल और खेत तो भारत माता हैं ही, लेकिन सबसे बढ़कर यहाँ रहने वाले करोड़ों लोग ही 'भारत माता' हैं। इसलिए, 'भारत माता की जय' का वास्तविक अर्थ यहाँ के लोगों की जय है। जब लोग खुद को भारत माता का अंश समझने लगते, तो उनकी आँखों में एक अनोखी चमक आ जाती थी।

*** निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

कभी ऐसा भी होता कि जब मैं किसी जलसे में पहुँचता तो मेरा स्वागत "भारत माता की जय" इस नारे से जोर के साथ किया जाता। मैं लोगों से अचानक पूछ बैठता कि इस नारे से उनका क्या मतलब है? यह भारत माता कौन है? जिसकी वे जय चाहते हैं। मेरे सवाल से उन्हें कुतूहल और ताज्जुब होता और कुछ जवाब न बन पड़ने पर वे एक दूसरे की तरफ या मेरी तरफ देखने लग जाते। मैं सवाल करता ही रहता आखिर एक हट्टे - कट्टे जाट ने, जो अनगिनत पीढ़ियों से किसानों से किसानों करता आया था, जवाब दिया कि भारत माता से उनका मतलब धरती से है। कौन -सी धरती? खास उसके गाँव की धरती या जिले की या सूबे की या सारे हिंदुस्तान की धरती से इसका मतलब है ? इस तरह से सवाल- जवाब चलते रहते, यहाँ तक कि वे ऊबकर मुझसे ही कहने लगते कि मैं ही बताऊँ। मैं इसकी कोशिश करता और बताता कि हिंदुस्तान वह सब कुछ है, जिसे उन्होंने समझ रखा है, लेकिन वह इससे भी बहुत ज्यादा है। हिंदुस्तान के नदी और पहाड़, जंगल और खेत, जो हमें अन्न देते हैं, ये सभी हमें अजीज हैं। लेकिन आखिरकार जिनकी गिनती है, वे हैं हिंदुस्तान के लोग, उनके और मेरे जैसे लोग, जो इस सारे देश में फैले हुए हैं। भारत माता दरअसल यही करोड़ों लोग हैं, और "भारत माता की जय" से मतलब हुआ इन लोगों की जय का। मैं उनसे कहता कि तुम इस भारत माता के अंश हो, एक तरह से तुम ही भारत माता हो, और जैसे-जैसे यह विचार उनके मन में बैठते, उनकी आँखों में चमक आ जाती, इस तरह, मानो उन्होंने कोई बड़ी खोज कर ली हो।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. नेहरू जब जलसे में पूछते कि "भारत माता कौन है?" तो लोगों की प्रतिक्रिया क्या होती थी?

- (क) वे तुरंत सही उत्तर दे देते थे।
- (ख) उन्हें कुतूहल और ताज्जुब होता और जवाब न बन पड़ता।
- (ग) वे नेहरू पर हँसने लगते थे।
- (घ) वे चुपचाप चले जाते थे।

उत्तर: (ख) उन्हें कुतूहल और ताज्जुब होता और जवाब न बन पड़ता।

प्रश्न 2. एक हट्टे-कट्टे जाट के अनुसार भारत माता का मतलब क्या था?

- (क) हिंदुस्तान के लोग।
- (ख) धरती।
- (ग) सरकार।
- (घ) नदी-पहाड़।

उत्तर: (ख) धरती।

प्रश्न 3. नेहरू ने भारत माता की असली परिभाषा क्या बताई?

- (क) केवल गाँव की धरती।
- (ख) नदी, पहाड़ और जंगल।
- (ग) करोड़ों लोग जो देश में फैले हुए हैं।
- (घ) केवल किसान।

उत्तर: (ग) करोड़ों लोग जो देश में फैले हुए हैं।

प्रश्न 4. नेहरू ने लोगों से कहा कि तुम भारत माता के अंश हो। इसका क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर: - लोगों की आँखों में चमक आ गई

प्रश्न 5. नेहरू लोगों से "भारत माता कौन है"? क्यों पूछते थे ?

उत्तर : - लोगों की सोच को परखने और उन्हें सही अर्थ समझाने के लिए।

***पाठाधारित प्रश्न**

प्रश्न 1. भारत की चर्चा नेहरू जी कब और किससे करते थे?

उत्तर . नेहरू जी देश के विभिन्न जगहों में होने वाले जलसों में जाया करते थे। वे किसानों की सभा में 'भारत' की चर्चा अवश्य करते थे। उन्हें लगता था कि किसानों को संपूर्ण भारत के बारे में जानकारी कम है तथा उनका दृष्टिकोण सीमित है। वे उन्हें बताते थे कि इस देश का एक हिस्सा दूसरे से अलग होते हुए भी देश एक है। वे किसानों को भारत का वास्तविक अर्थ बताते थे।

प्रश्न 2. नेहरू जी भारत के किसानों से कौन-सा प्रश्न बार-बार करते थे ?

उत्तर:- नेहरू जी भारत के किसानों से यह प्रश्न बार-बार करते थे -

भारत माता कौन है? भारत माता की जय से उनका क्या मतलब है? वह धरती कौन सी धरती है जिसे किसान भारत माता कहते हैं? उनके गाँव की धरती, सूबे की धरती, जिले की धरती या पूरे देश की धरती?

प्रश्न 3. दुनिया के बारे में किसानों को बताना नेहरू जी के लिए क्यों आसान था?

उत्तर: नेहरू जी अपने भाषणों में किसानों की दुनिया के बारे में बताते हैं। दुनिया के बारे में उन्हें जानकारी देना आसान था, ऐसा मानने के कई कारण थे जैसे पुराने महाकाव्यों व पुराणों की कथा-कहानियों से किसान पहले से परिचित थे। अनेक लोगों ने बड़े-बड़े तीर्थों की यात्रा कर रखी थी जो देश के चारों कोनों पर हैं। कुछ सिपाहियों ने प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लिया था। कुछ लोग विदेशों में नौकरियाँ करते थे।

प्रश्न 4. किसान सामान्यतः भारत माता का क्या अर्थ लेते थे?

उत्तर: किसान सामान्यतः भारत माता का अर्थ अपने देश की धरती से लेते थे। नेहरू जी ने उन्हें समझाया कि उनके गाँव, जिले, नदियाँ, पहाड़, जंगल, खेत, करोड़ों भारतीय सभी भारत माता हैं।

प्रश्न 5. भारत माता के प्रति नेहरू जी की क्या अवधारणा थी?

उत्तर: भारत माता के प्रति नेहरू जी की अवधारणा यह थी कि यहाँ की धरती, पहाड़, जंगल, नदी, खेत आदि के साथ-साथ यहाँ के करोड़ों निवासी भी भारत माता हैं। भारत को जितना हम समझते हैं वो इससे भी कहीं अधिक और व्यापक है। 'भारत माता की जय' से मतलब यहाँ के लोगों की जय से है।

प्रश्न 6. आजादी से पूर्व किसानों को किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता था?

उत्तर:- आजादी से पहले किसानों को शोषण, जमींदारी, महाजन, कड़े लगान और सूद, पुलिस के जुल्म आदि समस्याओं से जूझना पड़ता था। सिंचाई के पर्याप्त साधन नहीं थे। वर्षा पर निर्भर रहना, कठोर परिश्रम के पश्चात भी मेहनताना न मिलने जैसी अनेक विषम समस्याओं का सामना करना पड़ता था।

आरोह भाग 1

काव्य खंड

अभ्यास

1. कबीर के पद

कविता का सार

पद 1

कबीर कहते हैं कि परमात्मा एक है। जो लोग संसार और परमात्मा को भिन्न मानते हैं, वे अज्ञानी हैं। इस सृष्टि में एक ही जल है, एक ही वायु है और एक ही ज्योति का प्रसार है। इस संसार का रचयिता एक है। जैसे बड़ई लकड़ी को काट सकता है, उसमें निहित अग्नि को नहीं काट सकता, उसी प्रकार समस्त संसार में एक ही परमात्मा का निवास है। कबीर माया में लिप्त मनुष्य को चेताते हैं। उनके अनुसार माया के बंधन से अलग रहकर ही निर्भय रहा जा सकता है।

बहुविकल्पी प्रश्न

हम तौ एक एक करि जानां।

दोइ कहैं तिनहीं कौं दोजग जिन नाहिंन पहिचानां।

जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटै कोई।

सब घटि अंतरि तूही व्यापक धरै सरूपै सोई।

एकै पवन एक ही पानी एकै जोति समांनां।

एकै खाक गढ़े सब भांडै एकै कोहरा सानां।

माया देखि के जगत लुभानां कह रे नर गरबानां।

निरभै भया कछू नहि व्यापै कहै कबीर दिवानां।

बहुविकल्पीय प्रश्न

- (i) कबीर के अनुसार किन्हें नर्क में जाना पड़ेगा?
- (क) जो लोग ईश्वर में आस्था रखते हैं।
- (ख) जो लोग पूजा-पाठ करते हैं।
- (ग) जो आत्मा और परमात्मा को एक मानते हैं।
- (घ) जो ईश्वर को बाँटते और भ्रम फैलाते हैं।

उत्तर: (घ) जो ईश्वर को बाँटते और भ्रम फैलाते हैं।

(ii) बढई क्या कर सकता है?

(क) लोहा काट सकता है।

(ख) आग काट सकता है।

(ग) लकड़ी काट सकता है।

(घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर: (ग) लकड़ी काट सकता है।

(iii) परमात्मा किस रूप में सभी प्राणियों में विद्यमान है?

(क) हवा के रूप में।

(ख) प्रकाश रूप में।

(ग) जल के रूप में।

(घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर: (ख) प्रकाश रूप में।

(iv) 'एकै खाक गढे सब भांडै एकै कोहरा साना।' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) रूपक।

(ख) यमक।

(ग) अनुप्रास।

(घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर: (क) रूपक।

(v) कबीर ने स्वयं को दीवाना क्यों कहा है?

(क) कबीर ने परमात्मा का साक्षात्कार कर लिया, अब उन्हें किसी की परवाह नहीं है।

(ख) वे हिन्दू और मुस्लिम से नहीं डरते थे।

(ग) उन्हें ईश्वर के बारे में कुछ पता नहीं था।

(घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर: (क) कबीर ने परमात्मा का साक्षात्कार कर लिया, अब उन्हें किसी की परवाह नहीं है।

प्रश्न- अभ्यास हेतु

नीचे दिए गए कथन और कारण को पढ़ कर सही विकल्प का चयन करें -

3. कथन-(क): बढ़ई लकड़ी को तो काट सकता है किन्तु उसमें व्याप्त अग्नि को नहीं काट सकता है।

कथन-(ख): मनुष्य की अंतरात्मा में ही परमात्मा का निवास है, जिसका रूप व्यापक है।

- (क)- कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं और एक दूसरे की सही व्याख्या करते हैं।
- (ख)- कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं किन्तु एक दूसरे की सही व्याख्या नहीं करते हैं।
- (ग)- कथन (क) सही है किन्तु कारण (ख) गलत है।
- (घ)- कथन (क) गलत है किन्तु कारण (ख) सही है।

(ii) दिए गए कथन को पढ़ कर सही कूट का चयन करें -

कथन (क): कबीर ने ईश्वर के सगुण रूप की बात कही है।

कथन (ख): कबीर ने ईश्वर के निर्गुण रूप की बात कही है।

कथन (ग): कबीर ने ईश्वर के सगुण और निर्गुण दोनों रूप की बात कही है।

- (क)- केवल कथन (क) सही है।
- (ख)- केवल कथन (ख) सही है।
- (ग)- केवल कथन (ग) सही है।
- (घ)- कथन (क) और कथन (ख) दोनों गलत हैं।

(iii) 'दोइ कहैं तिनहीं कौं दोजग' - से कबीर का क्या अभिप्राय है?

- (क) कण-कण में ईश्वर व्याप्त है।
- (ख) ईश्वर के दो रूप हैं।
- (ग) ईश्वर के भिन्न-भिन्न रूपों के मानने वालों को नरक (बुरे परिणाम) मिलेगा।
- (घ) उपर्युक्त सभी।

(iv) कबीर जी के ईश्वर की एकरूपता के संबंध में दिए गए तर्क के सन्दर्भ में तालिका (क) को तालिका (ख) से मिलान कीजिए -

तालिका क

तालिका ख

i – लकड़ी

क - मनुष्य का शरीर

ii - कुम्हार द्वारा बर्तन का निर्माण

ख - परमात्मा द्वारा एक तत्त्व से आत्मा का निर्माण

iii - लकड़ी में व्याप्त अग्नि

ग - आत्मा की अमरता

सही विकल्प चुनें:

- (क) i-ख, ii-ग, iii-क
- (ख) i-क, ii-ख, iii-ग
- (ग) i-ग, ii-क, iii-ख
- (घ) i-क, ii-ग, iii-ख

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 कबीर की दृष्टि में ईश्वर एक है। इसके समर्थन में उन्होंने क्या तर्क दिए हैं?

उत्तर- कबीर ने एक ही ईश्वर के समर्थन में अनेक तर्क दिए हैं। उनका कहना है कि संसार में सब जगह एक ही पवन व जल है। सभी में एक ही ईश्वरीय ज्योति है। एक ही मिट्टी से सभी बर्तनों का निर्माण होता है। सभी प्राणियों में एक ही परमात्मा का अस्तित्व है। प्रत्येक कण में ईश्वर का वास है।

प्रश्न-2 कबीर ने अपने को दीवाना क्यों कहा है?

उत्तर- यहाँ 'दीवाना' का अर्थ है-पागल। कबीरदास ने परमात्मा का सच्चा रूप पा लिया है। वे उसकी भक्ति में लीन हैं, जबकि संसार बाहरी आडंबरों में उलझकर ईश्वर को खोज रहा है। उन्हें सांसारिक लोगों से कुछ लेना-देना नहीं है और न ही किसी की परवाह है। कबीर की भक्ति आम विचारधारा से बिल्कुल अलग है। इसलिए उन्होंने स्वयं को दीवाना कहा है।

प्रश्न-3 ईश्वर के स्वरूप के विषय में कबीर क्या कहते हैं?

उत्तर- कबीर कहते हैं कि ईश्वर एक है और उसका कोई निश्चित रूप या आकार नहीं है। वह सर्वव्यापी है। अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए उन्होंने कई तर्क दिए हैं। जैसे-संसार में एक ही हवा बहती है, एक ही पानी है तथा एक ही प्रकार का प्रकाश सबके अंदर समाया हुआ है। जैसे बड़ई लकड़ी को काट सकता है परंतु आग को नहीं। वैसे ही शरीर नष्ट हो जाता है किंतु आत्मा सदैव अमर बनी रहती है। वास्तव में आत्मा परमात्मा का ही अंश है जो अलग-अलग रूपों में सबमें समाया हुआ है। अतः ईश्वर एक है।

2. मीराबाई

I. कविता का सार

पद 1

मीरा कहती है कि उसके जीवन में कृष्ण ही उसके सर्वस्व हैं। उसने लोक-लाज छोड़कर और कुल-मर्यादा का बंधन तोड़कर संतों का साथ कर लिया है। उसने अपने आँसुओं से सींच-सींचकर प्रेम की बेल को बढ़ा लिया है। उसे कृष्ण का प्रेम ही माखन जैसा मूल्यवान प्रतीत होता है और शेष सांसारिकता छाछ जैसी व्यर्थ प्रतीत होती है। वह भक्तों को देखकर प्रसन्न होती है और जगत को देखकर रोती है।

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरों न कोई

जा के सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई

छाँड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई?

संतन ढिग बैठि- बैठि, लोक-लाज खोयी

अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोयी

अब त बेलि फैलि गयी, आणद-फल होयी

दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी

दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी

भगत देखि राजी हुयी, जगत देखि रोयी

दासि मीरा लाल गिरधर तारो अब मोही।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न- सही विकल्प को चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) मीरा के आराध्य कौन हैं?

क- श्रीहरि

ख- श्रीकृष्ण

ग- श्रीविष्णु

घ- श्रीदेव

(ii) 'छाँड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई?'- पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क- यमक

ख- रूपक

ग- अनुप्रास

घ- उपमा

(iii) मीरा ने आँसुओं रूपी जल से सींचकर क्या बोया?

क- विरह

ख- वृक्ष

ग- लता

घ- प्रेम-बेलि

(iv) 'घृत काढ़ि लियो'- में क्या अर्थ निहित है?

क- श्रीकृष्ण की भक्ति रूपी मूल्यवान घी

ख- विरह रूपी घी

ग- सांसारिक ज्ञान रूपी छाछ

घ- अज्ञानता रूपी छाछ

(v) मीरा श्रीकृष्ण से क्या प्रार्थना करती हैं?

क- श्रीकृष्ण उन पर कृपा करें

ख- उन्हें धन-वैभव दें

ग- सांसारिक लोगों को दूर रखें

घ- उनका उद्धार करें

उत्तर- (i) ख- श्रीकृष्ण (ii) ग- अनुप्रास (iii) घ- प्रेम-बेलि (iv) क- श्रीकृष्ण की भक्ति रूपी मूल्यवान घी (v) घ- उनका उद्धार करें।

अभ्यास हेतु

.(i) नीचे दिए गए कथन और कारण को पढ़ कर सही विकल्प का चयन करें -

कथन (क) : मीराबाई ने अपने आराध्य के लिए परिवार की मर्यादा भी छोड़ दी थी।

कारण (ख) : मीराबाई के लिए गिरधर गोपाल अर्थात् कृष्ण ही सब कुछ हैं।

(क) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं और एक दूसरे की सही व्याख्या कर रहे हैं।

(ख) कथन (क) और कारण (ख) दोनों सही हैं किन्तु, एक दूसरे की सही व्याख्या नहीं कर रहे हैं।

(ग) कथन (क) सही है किन्तु कारण (ख) गलत है।

(घ) कथन (क) गलत है किन्तु कारण (ख) सही है।

(ii). कविता में कही गई बातों के सन्दर्भ में दिए गए कथन को पढ़ें -

कथन (क) मीराबाई ने तालाब के जल से सींच-सींचकर प्रेम की बेल बोई है।

कथन (ख) इस पर आनंद रूपी फल लगने लगे हैं।

कथन (ग) मीराबाई ने कृष्ण के प्रेम रूपी दूध को भक्ति रूपी मथानी में बड़े प्रेम से बिलोया है।

दिए गए कथन को पढ़ कर सही कूट का चयन करें -

क- केवल कथन (क) और (ग) सही है।

ख- केवल कथन (क) सही है।

ग- केवल कथन (ग) सही है।

घ- कथन (ख) और (ग) सही हैं।

(iii). मीरा किसे देखकर रोती है?

(क) भगत

(ख) सांसारिक मोह-माया में फँसे जगत को

(ग) मेवाड़ के महाराणा

(घ) सेवक

विवरणात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. भाव व शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) असुँवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोयी

अब त बेलि फैलि गई, आनंद-फल होयी

उत्तर- भाव-सौंदर्य- इसमें भाव-भक्ति अपने चरम पर है। मीरा का प्रेम आँसुओं से सींच-सींच कर पल्लवित हुआ है। अब मीरा को इसमें आनंद आने लगा है।

शिल्प-सौंदर्य-

- भाषा कोमल, सुमधुर एवं संगीतमयी है।
- साँगरूपक अलंकार का कुशलतापूर्वक प्रयोग हुआ है। देखिए-
 - आँसू रूपी जल
 - प्रेम रूपी बेल
 - आनंद रूपी फल
- 'सींचि-सींचि' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है

प्रश्न 2. कल्पना करें, प्रेम प्राप्ति के लिए मीरा को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा।

उत्तर— कृष्ण का प्रेम पाने के लिए मीरा को अनेक कष्ट सहने पड़े होंगे। उन दिनों नारी को बहुत पदों में और मर्यादाओं में रहना पड़ता था। राजकुल की महिलाओं पर और भी अधिक बंधन थे। इसलिए मीरा का घर से बाहर निकलना साहसिक कदम था। फिर खुले समाज में मंदिर में नाचना-गाना तो और भी कठिन कार्य था। इसके लिए उन्हें अपने परिवार-जनों की यातनाएँ सहनी पड़ी होंगी। समाज के लोगों ने भी अवश्य उन पर फट्टियाँ कसी होंगी। राणा ने तो उन्हें जान से मार डालने के लिए जहर का प्याला ही भेज दिया था।

प्रश्न 3. 'लोक लाज' खोने का अभिप्राय क्या है?

उत्तर— 'लोक-लाज' खोने का अभिप्राय है—लोगों के सामने खुलकर आना। समाज की टीका-टिप्पणी से न घबराना। समाज ने सद् व्यवहार के नाम पर जो बंधन लागू किए हुए हैं, उन्हें तोड़ देना। 'भगत देखि राजी हुयी, जगत देखि रोयी'-इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस पंक्ति का आशय है—मीरा भक्तों को देखकर प्रसन्न होती है किंतु सामान्य सांसारिक लोगों को देखकर उदास होती है। आशय यह है कि वह जीवन की सार्थकता भक्ति में मानती है। उसे सांसारिक मोह-माया एक भटकाव प्रतीत होता है।

प्रश्न 4. मीरा ने किसे अपना पति माना और क्यों?

उत्तर- मीरा ने श्रीकृष्ण को अपना पति माना।

क्योंकि मीरा कृष्ण की परम भक्त थी। वह उनके चरणों में पूरी तरह समर्पित थी। इसलिए उसने स्वयं को कृष्ण की पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया था।

प्रश्न 5. 'कुल की कानि' का क्या आशय है?

उत्तर- 'कुल की कानि' का आशय है—परिवार की मर्यादा का विचार। मीरा राजकुल की नारी थी। तब राजकुल की महिलाओं पर बहुत बंधन थे। वे आम जनता के बीच बेपरदा होकर नहीं चल सकती थीं। उनके मंदिर में नाचने-गाने का तो प्रश्न ही नहीं था। इन्हीं बंधनों को 'कुल की कानि' कहा गया है।

3. कविता - घर की याद (कवि - भवानी प्रसाद मिश्र)

प्रमुख बिंदु-

- भवानी प्रसाद मिश्र की कविता हिंदी की सहज लय की कविता है।
- भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं पर गाँधीवाद के प्रभाव के कारण ही इन्हें 'कविता का गाँधी' कहा जाता है।
- गाँधीवाद पर आस्था रखने के कारण उनके विचारों में अहिंसा और सहनशीलता की रचनात्मक अभिव्यक्ति मिलती है।
- उनकी 'घर की याद' कविता में घर के मर्म का उद्घाटन किया गया है।
- इसमें उन्होंने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में तीन वर्षों के लिए जेल - प्रवास का उल्लेख किया है।
- सावन की गिरती बूँदों के साथ कवि को 'घर की याद' आने लगती है।
- घर में कवि के माता-पिता के अलावा चार भाई और चार बहनें थीं। बहनों में प्यार और भाइयों में पारस्परिक जुड़ाव था।
- कवि की माँ अनपढ़ होते हुए भी कवि के प्रति ममतालु एवं प्रेमपूर्ण भावनाओं से भरी हुई है।
- कवि के पिता सत्तर वर्ष की आयु के बावजूद प्रतिदिन नियमित व्यायाम तथा गीता पाठ करते हैं। वे न केवल बिजली की गति से काम करते हैं बल्कि शेर का सामना करने से भी नहीं डरते।
- कवि सजीले सावन के माध्यम से उन्हें जेल - प्रवास के दौरान अपने आरामदायक रहन - सहन और खान - पान का संदेश देने का आग्रह करता है। वह नहीं चाहता कि उन्हें जेल - जीवन के वास्तविक कष्टों के बारे में पता चले।

कविता का सारांश

'घर की याद' शीर्षक कविता भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा रचित है। कवि ने 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में सक्रिय भाग लिया था, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें तीन वर्ष की जेल-यातना सहनी पड़ी। सावन के महीने में बरसते बादलों को देखकर कवि को घर की याद आने लगती है और वह अपने पिता को संदेश भेजता है कि जेल में उनका पाँचवाँ पुत्र भवानी बिल्कुल ठीक और प्रसन्न है। वे उसके लिए चिन्तित न हो। कवि को अपने पिता के सरल स्वभाव, बलिष्ठ शरीर, निर्भीक व्यक्तित्व की याद आती है। पिताजी थोड़ी-सी बात पर भावुक हो जाते हैं। कवि सावन से तो बरसने को कहता है परन्तु परिजनों के आँसू की एक बूँद भी गिरने नहीं देना चाहता। कवि सावन से जेल -यातनाओं को छिपाने की बजाय अपने मस्त रहने, खेलने-कूदने और पढ़ते -लिखते रहने का संदेश देने की बात करता है। अतः वे पाँचवें बेटे के बारे में सोचकर चिन्तित न हों। कवि सावन से यह भी कहता है कि कहीं तुम्हारे किसी कथन से उनको शक न हो जाय। कवि अपने पिता से सच्चा स्नेह करता है और उन्हें दुख का संदेश देकर दुखी नहीं देखना चाहता। सरलचित्त पिता की आँखों में अश्रु की कल्पना कवि को सहन नहीं है।

पठित काव्यांश-1

पठित काव्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए-

काव्यांश-1

आज पानी गिर रहा है, बहुत पानी गिर रहा है,
रात भर गिरता रहा है, प्राण-मन घिरता रहा है,
बहुत पानी गिर रहा है, घर नज़र में तिर रहा है।

1. काव्यांश में रात भर पानी के गिरते रहने का क्या कारण हो सकता है?

- (क) मौसम की खराबी
- (ख) वर्षा ऋतु
- (ग) आँसुओं का बहना
- (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (ख) वर्षा ऋतु

2. कवि का प्राण-मन कहाँ घिर रहा है?

- (क) पानी में
- (ख) यादों में
- (ग) घर की यादों में
- (घ) जेल की कैद में

उत्तर: (ग) घर की यादों में

3. कथन और कारण को समझते हुए उचित विकल्प चुनिए –

कथन: कवि जेल में कैद है।

कारण: जेल में यातना के कारण उनकी आँखों से निरंतर आँसू बह रहे हैं।

- (क) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
- (ख) कथन सत्य है, किंतु कारण गलत है।
- (ग) कथन गलत है, किंतु कारण सत्य है।
- (घ) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

उत्तर: (ख) कथन सत्य है, किंतु कारण गलत है।

4. किस चीज़ को तैरता हुआ बताया गया है और क्यों?

- (क) घर को, क्योंकि वह नज़र के सामने है।
- (ख) पानी को, क्योंकि वह रात भर गिरता रहा है।
- (ग) घर को, क्योंकि उसमें परिवार है।
- (घ) प्राण-मन को, क्योंकि उससे ही जीवन है।

उत्तर: (क) घर को, क्योंकि वह नज़र के सामने है।

5. खुशियों का पूर किसे कहा गया है और क्यों?

- (क) घर को, क्योंकि वहाँ सब मिल-जुलकर प्रेम से रहते हैं।
- (ख) जेल को, क्योंकि वहाँ भरपेट भोजन मिलता है।
- (ग) घर को, क्योंकि घर खुशियों की कुंजी होती है।
- (घ) जेल को, क्योंकि वह एक निवास-स्थान है।

उत्तर: (क) घर को, क्योंकि वहाँ सब मिल-जुलकर प्रेम से रहते हैं।

काव्यांश-2

और माँ बिन पढ़ी मेरी, दुख में वह गढ़ी मेरी,
माँ कि जिसकी गोद में सिर, रख लिया तो दुख नहीं फिर,
माँ कि जिसकी स्नेह-धारा, का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता, जो कि उसका पत्र पाता।

1. कवि ने माँ की किन विशेषताओं को उजागर किया है?

- (क) माँ पढ़ी-लिखी थीं।
- (ख) माँ कवि के दुख में दुखी रहती थी।
- (ग) क एवं ख दोनों सही हैं।
- (घ) क एवं ख दोनों ही सही नहीं हैं।

उत्तर: (ख) माँ कवि के दुख में दुखी रहती थी।

2. माँ के कारण कवि का दुख दूर कैसे हो जाया करता था?

- (क) माँ की गोद के कारण।
- (ख) सिर में दर्द के कारण।
- (ग) माँ के अनपढ़ होने के कारण।
- (घ) माँ की गोद में सिर रखने के कारण।

उत्तर: (घ) माँ की गोद में सिर रखने के कारण।

3. कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए –

कथन: कवि की माँ पढ़ी-लिखी नहीं थी, नहीं तो वह रोज़ उसे पत्र लिखती।

कारण: माँ का पत्र न मिलने पर कवि उसकी गोद में सिर नहीं रखना चाहता था।

(क) कथन सही है, किंतु कारण सही नहीं है।

(ख) कथन और कारण दोनों ही सही नहीं हैं।

(ग) कथन गलत है, किंतु कारण सही है।

(घ) कथन और कारण दोनों ही सही हैं।

उत्तर: (क) कथन सही है, किंतु कारण सही नहीं है।

4. माँ की स्नेह-धारा का प्रसार कहाँ तक बताया गया है?

(क) अपने घर तक।

(ख) परिवार के सभी सदस्यों तक।

(ग) जेल में कवि के कैदखाने तक।

(घ) ख और ग दोनों सही हैं।

उत्तर: (ग) जेल में कवि के कैदखाने तक।

5. दिए गए विकल्पों में से अनुप्रास अलंकार का उदाहरण चुनिए –

(क) और माँ बिन पढ़ी मेरी।

(ख) जो कि उसका पत्र पाता।

(ग) का यहाँ तक भी पसारा।

(घ) माँ की जिसकी स्नेह-धारा।

उत्तर: (ग) का यहाँ तक भी पसारा।

काव्यांश-3

पिताजी जिनको बुढ़ापा, एक क्षण भी नहीं व्यापा,
जो अभी भी दौड़ जाएँ, जो अभी भी खिलखिलाएँ,
मौत के आगे न हिचकें, शेर के आगे न बिचकें,
बोल में बादल गरजता, काम में झंझा लरजता,
आज गीता पाठ करके, दंड दो सौ साठ करके,
खूब मुद्गर हिला लेकर, मूठ उनकी मिला लेकर,
जब कि नीचे आए होंगे, नैन जल से छाए होंगे,
हाय, पानी गिर रहा है, घर नज़र में तिर रहा है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. इनमें से पिताजी की कौन-सी विशेषता नहीं है?

- (क) उनको बुढ़ापा बहुत अधिक व्यापा है।
- (ख) वे अभी भी दौड़ सकते हैं।
- (ग) वे गीता पाठ करते हैं।
- (घ) वे दंड दो सौ साठ करते हैं।

उत्तर: (क) उनको बुढ़ापा बहुत अधिक व्यापा है।

2. ऐसा क्यों कहा गया है कि "जो अभी भी खिलखिलाएँ"?

- (क) उनको देखकर सब खिल उठते हैं।
- (ख) वे स्वयं फूल की भाँति खिले रहते हैं।
- (ग) वे अभी भी ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगते हैं।
- (घ) वे मौत से भी नहीं डरते हैं।

उत्तर: (ग) वे अभी भी ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगते हैं।

3. कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प चुनिए –

कथन: पिताजी नियमित रूप से व्यायाम करके गीता पाठ भी करते हैं।

कारण: उन्हें बुढ़ापा एक क्षण भी नहीं व्यापा।

- (क) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
- (ख) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (ग) कथन गलत है और कारण बिल्कुल सही है।
- (घ) कथन और कारण दोनों ही गलत हैं।

उत्तर: (ख) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

4. निम्न कथनों पर विचार करके उचित विकल्प का चयन कीजिए –

कथन 1. बुढ़ापा आने पर मौत से डर लगने लगता है।

कथन 2. वे बोलते समय बादलों की गड़गड़ाहट से डरने लगते हैं।

कथन 3. वे बिजली की तेजी और फुर्ती से काम कर सकते हैं।

- (क) कथन 1, 2 और 3 सही हैं।
- (ख) केवल कथन 1 और 3 सही हैं।
- (ग) केवल कथन 2 सही है।
- (घ) केवल कथन 3 सही है।

उत्तर: (घ) केवल कथन 3 सही है।

5. पिताजी के नैन जल से क्यों छाए होंगे?

(क) बहुत पानी गिरने के कारण।

(ख) माँ के अनपढ़ होने के कारण।

(ग) परिवार वालों के इकट्ठा हो जाने के कारण।

(घ) कवि के जेल जाने और परिवार के साथ न होने के कारण।

उत्तर: (घ) कवि के जेल जाने और परिवार के साथ न होने के कारण।

काव्यांश . 4

पाँचवाँ मैं हूँ अभागा, जिसे सोने पर सुहागा,
पिताजी कहते रहे हैं, प्यार में बहते रहे हैं,
आज उनके स्वर्ण बेटे, लगे होंगे उन्हें हेटे,
क्योंकि मैं उन पर सुहागा, बंधा बैठा हूँ अभागा,

1. कवि के कितने भाई और कितनी बहनें थीं ?

(क) चार भाई, चार बहनें

(ख) पाँच भाई, चार बहनें

(ग) पाँच भाई, पाँच बहनें

(घ) चार भाई, तीन बहनें

2. कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प चुनिए-

कथन - कवि के पिताजी कवि से सर्वाधिक प्यार करते थे ।

कारण - वह उनका सबसे छोटा बेटा था जो सोने की खान में था ।

(क) कथन और कारण दोनों ही सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है ।

(ख) कथन सही है किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता ।

(ग) कथन गलत है किंतु कारण बिल्कुल सही है ।

(घ) कथन और कारण दोनों ही गलत हैं ।

3. काव्यांश में ऐसा क्यों कहा गया है कि- 'स्वर्ण बेटे लगे होंगे उन्हें हेटे' ?

(क) कवि को स्वर्ण बेटा कहा गया क्योंकि वह सबसे छोटा है ।

(ख) पिता के सभी बेटे स्वर्ण के समान हैं ।

(ग) कवि के भाई स्वर्ण के समान गुणवान होते हुए भी पिता के लिए महत्वहीन हैं

(घ) कवि के भाई कवि की तुलना में पिता के लिए अधिक महत्वपूर्ण हैं ।

4. काव्यांश के आधार पर बताइए कि कवि ने 'अभागा' किसे कहा है और क्यों ?

(क) स्वयं को, क्योंकि जेल में होने के कारण परिवार से अलग है ।

(ख) बहनों को क्योंकि बंधा होने के कारण जेल में नहीं आ सकीं।

(ग) पिताजी को, क्योंकि बेटे के जेल में होने पर भी वह सुहागा हैं ।

(घ) स्वयं को, क्योंकि वह पिताजी का पाँचवाँ बेटा है ।

5. निम्नलिखित कथनों को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए-

कथन .1 पिता का प्रिय होने के बाद भी जेल में बंद होने के कारण वह स्वयं को अभागा मानता है।

कथन .2 पिताजी को कवि पर स्वर्ण के समान गुणों वाले बेटों से भी अधिक गर्व है ।

कथन .3 पिताजी कवि की तुलना में अन्य स्वर्ण बेटों से अधिक प्यार करते हैं

(क) कथन1 , 2 और 3 सही है ।

(ख) केवल कथन 1 और 2 सही है ।

(ग) केवल कथन 1 और 3 सही है ।

(घ) केवल कथन 2 सही है ।

काव्यांश . 5

हे सजीले हरे सावन, हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसें, पाँचवें को वे न तरसें,
मैं मजे में हूँ सही है, घर नहीं हूँ बस यही है ,
किंतु यह बस बड़ा बस है, इसी बस से सब विरस हैं ,
किंतु उनसे यह न कहना, उन्हें देते धीर रहना,
उन्हें कहना लिख रहा हूँ, उन्हें कहना पढ़ रहा हूँ ,
काम करता हूँ कि कहना, नाम करता हूँ कि कहना,
चाहते हैं लोग कहना, मत करो कुछ शोक कहना,
और कहना मस्त हूँ मैं, कातने में व्यस्त हूँ मैं ,
वजन सत्तर सेर मेरा, और भोजन ढेर मेरा,
कूदता हूँ, खेलता हूँ, दुख डटकर ठेलता हूँ,
और कहना मस्त हूँ मैं, यह न कहना अस्त हूँ मैं

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कवि पुण्य-पावन किसे बताता है?

(क) सजीले सावन को।

(ख) माता-पिता को।

(ग) अपने समस्त परिवार को।

(घ) सजीले हरे सावन को।

उत्तर: (घ) सजीले हरे सावन को।

2. "तुम बरस लो, वे न बरसें" से क्या आशय है?

(क) तुम अपना क्रोध उन पर मत बरसाओ।

(ख) तुम यहाँ खूब वर्षा करो, लेकिन वहाँ सूखा पड़ जाए।

(ग) क और ख दोनों सही हैं।

(घ) क और ख दोनों गलत हैं।

उत्तर: (क) तुम अपना क्रोध उन पर मत बरसाओ।

3. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सही विकल्प की पहचान कीजिए—

कथन 1. घर पर कवि खूब मजे में है।

कथन 2. कवि को जेल जीवन बहुत बड़ा लगता है।

कथन 3. सावन में कवि के जेल में रहने पर परिजन दुखी हैं।

(क) केवल कथन 1 सही है।

(ख) केवल कथन 1 और 2 सही हैं।

(ग) केवल कथन 2 और 3 सही हैं।

(घ) सभी कथन सही हैं।

उत्तर: (ग) केवल कथन 2 और 3 सही हैं।

4. कथन और कारण के आधार पर सही विकल्प का चयन कीजिए—

कथन: कवि जेल में रहने के कारण परिजनों से शोक न करने का संदेश देना चाहता है।

कारण: कवि जानता है कि परिजन सावन में उसे याद करके उसकी चिंता में दुखी हो सकते हैं।

(क) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।

(ख) कारण सही है, किंतु कथन गलत है।

(ग) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

(घ) कथन और कारण दोनों सही हैं।

उत्तर: (घ) कथन और कारण दोनों सही हैं।

5. कवि द्वारा सावन से कहा गया कौन-सा कथन सही नहीं है?

(क) जेल में कवि का वजन सत्तर सेर तक हो गया है।

(ख) कवि को जेल में ढेर सारा भोजन खाने को मिलता है।

(ग) कवि जेल में खेलता-कूदता है और बहुत अधिक दुख झेलता है।

(घ) कवि जेल में सूत कातने में व्यस्त रहता है।

उत्तर: (ख) कवि को जेल में ढेर सारा भोजन खाने को मिलता है।

प्र.1 . कविता पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए-

प्रश्न -काव्यांश में ऐसा क्यों कहा गया होगा कि 'घर नजर में तिर रहा है'?

उत्तर -काव्यांश के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि 'भारत छोड़ो आंदोलन' में भाग लेने के कारण वह जेल में कैद है। सावन का महीना है जिसके कारण बहुत बरसात हो रही है। बरसात के कारण इकट्ठा हुए पानी में कवि को अपना घर तैरता हुआ नजर आ रहा है, जिसमें घर के सभी सदस्यों का चित्र उसके सामने साकार होने लगता है।

प्र.2. 'भुजा भाई, प्यार बहनें' में निहित सांकेतिक अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -जिस प्रकार भुजाएँ मिलकर शक्तिपूर्ण कार्य कर सकती हैं, वैसे ही कवि के चार भाई हमेशा मिलजुलकर एकतापूर्वक साथ रहते हैं तथा उनकी चार विवाहित बहनें भी अपने परिवार और भाइयों के प्रति अगाध प्रेम और स्नेह का भाव रखती हैं।

प्र.3. कवि की माँ के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ उजागर कीजिए ?

उत्तर - कवि की माँ के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

1. कवि की माँ दृढ़ और साहसी महिला थी। अपने बेटे के जेल जाने पर उसे दुख की बजाय गर्व होता है। वह कहती है- 'पाँव जो पीछे हटाता, कोंख को मेरी लजाता'।
2. कवि की माँ इतनी ममतामयी हैं कि कवि को उनके प्रेम का प्रसार जेल तक भी महसूस होता है।

प्र.4. कवि के पिता की किन विशेषताओं ने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया है ?

उत्तर -कवि के पिता की निम्नलिखित विशेषताओं ने हमें सर्वाधिक प्रभावित किया है-

1. उन्होंने कवि में देश प्रेम की ऐसी लीक दी जिसके फलस्वरूप कवि ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' में सक्रिय रूप से भाग लिया और जेल की यातना सही।
2. वे धार्मिक, निर्भीक और साहसी थे। वे नियमित रूप से दंड लगाते,, व्यायाम करते और गीता पाठ करते थे।

प्र.5. कवि ने स्वयं को 'अभागा' क्यों कहा है?

उत्तर - सावन के महीने में विवाहिता बहनें मायके आती हैं और इस प्रकार परिवार एकजुट होकर खुशियों का स्थान बन जाता है। कवि के चार भाई और चार बहनें घर में हैं किंतु कवि जेल में होने के कारण उनकी खुशियों में शामिल न हो पाने के कारण स्वयं को 'अभागा' बताता है।

प्र.6. आपकी दृष्टि में 'सोने पे सुहागा' किसे कहा गया होगा और क्यों ?

उत्तर - हमारी दृष्टि में कवि को ही 'सोने पे सुहागा' कहा गया होगा क्योंकि पाँच बेटों में से यों तो शेष चार बेटे स्वर्ण के समान गुणवान हैं, परंतु कवि ने देश के लिए जेल की कठोर यातनाएँ भी सही। अतः कवि स्वर्ण बेटों में भी विशेष महत्त्व रखते हैं।

प्र 7. कवि की माँ किस तर्क द्वारा कवि के पिता को ढाढस बंधाती है ?

उत्तर - जेल में कैद कवि पिता के स्वभाव और दिनचर्या से अवगत है। कवि के अनुमान के अनुसार वे भावुक हुए होंगे और भावुकतावश उनकी आँखों से आँसू आ गए होंगे। ऐसे में माँ धीरज बंधाते हुए तर्क देती है कि वह तुम्हारी सीख और देश के प्रति परिवार की परंपरा और कर्तव्य का पालन करने के लिए ही जेल में है।

प्र 8. कवि ने सावन के लिए 'सजीले' और 'पुण्य -पावन' विशेषणों का प्रयोग क्यों किया है ?

उत्तर - सावन में निरंतर होने वाली बरसात के कारण प्रकृति हरी - भरी और सुंदर लगने लगती है। इस कारण सावन को 'सजीले' विशेषण दिया गया है। सावन में वर्षा के कारण प्रकृति की शोभा के कारण उसे शुभ और पुण्य पावन विशेषण दिया गया है।

प्र 9. कवि संदेशवाहक के रूप में सावन को कौन - सा संदेश कहने से मना करता है ?

उत्तर - कवि संदेशवाहक के रूप में सावन को निम्नलिखित बातें कहने से मना करता है -

1. जेल के जीवन की वास्तविकताएँ उसके परिजनों को न बताए।
2. वह अपनी पहचान भूल गया है उसके भीतर का उत्साह समाप्त हो गया है।
3. अब वह स्वयं को ही नहीं पहचानते और किसी का सामना करने की उनमें हिम्मत नहीं।
4. वे जेल- जीवन की यातनाओं से तंग आ चुके हैं।

प्र 10 .कवि द्वारा संदेशवाहक सावन को सावधान किए जाने के आधार पर अनुमान लगाइए कि स्वतंत्रता सेनानियों को जेल जीवन ने किस प्रकार की यातनाएँ दी जाती होंगी ?

उत्तर - कवि द्वारा संदेशवाहक को सावधान किए जाने के आधार पर स्वतंत्रता सेनानियों के जेल जीवन की यातनाओं का निम्नलिखित अनुमान लगाया जा सकता है -

1. उन्हें जेल में कठोर कारावास दिया जाता होगा।
2. उन्हें भूख, शारीरिक यातनाओं और अकेलेपन के कारण मानसिक तनाव और निराशा का सामना करना पड़ता होगा।
3. उन्हें अपने परिजनों से मिलने भी नहीं दिया जाता होगा।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-

1. 'घर की याद' कविता में पानी के रात भर गिरने और प्राण-मन के घिरने में परस्पर क्या संबंध है?

उत्तर - कवि अपने घर से बहुत दूर जेल में कैद है। उसे घर से दूर रहने की पीड़ा है। आकाश में बादल घिरकर बारिश करने लगते हैं। ऐसे में कवि के मन को स्मृतियाँ घेर रही हैं। जैसे-जैसे पानी गिर रहा है, वैसे-वैसे कवि के हृदय में प्रियजनों की स्मृतियाँ चलचित्र की तरह उभरती जा रही हैं। पानी के बरसने के कारण ही उसके प्राण व मन घर की याद में व्याकुल हो जाते हैं।

लघु उत्तरीय / दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'घर की याद' कविता में मायके आई बहन के लिए कवि ने घर को परिताप का घर क्यों कहा है?

उत्तर-

सावन का महीना उत्तर भारत में बहन-बेटियों के मायके आने का महीना है। आज पानी गिरने से कवि को बहनों के आने पर हँसी-खुशी से भर जाने वाले घर की याद आती है और वह जानता है कि इस वर्ष बहनों को केवल चार भाई मिलेंगे और पाँचवें (कवि स्वयं) का अभाव घर भर को दुख से भर देगा। भाई जेल में यातना झेल रहा है और उन सबसे दूर है। इसलिए भुजाओं के समान सहयोग देने वाले चारों भाई और प्यार का प्रतीक बहनें और माता-पिता सभी दुखी हैं। यह बात दूर जेल में कैद कवि जानता है। इसीलिए वह घर को परिताप (दुख) का घर कह रहा है।

प्रश्न 2. 'घर की याद' कविता में पिता के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं को उजागर किया गया है?

उत्तर-

कविता में पिता के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताओं को उजागर किया गया है—

- पिताजी पूर्णतः स्वस्थ हैं। बुढ़ापे ने उन्हें छुआ तक नहीं है।
- वे खिलखिलाकर हँसते हैं।
- सत्तर वर्ष की आयु पार कर लेने पर भी दौड़ लगाते हैं।
- वे मौत के सामने आने पर भी नहीं डरते।
- वे बिजली की तेजी से काम करने की क्षमता रखते हैं।
- वे प्रतिदिन गीता का पाठ करते हैं।
- वे निडर और साहसी होने के साथ ही भावुक प्रवृत्ति के भी हैं।
- वे देप्रेमी हैं। उनकी प्रेरणा पर ही कवि ने स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया।-

प्रश्न 3. 'घर की याद' कविता के आधार पर कल्पना कीजिए कि कवि अपनी किस स्थिति व मनःस्थिति को अपने परिजनों से छिपाना चाहता है?

उत्तर-

'घर की याद' कविता में कवि अपने परिजनों को अपने मन के दुख के विषय में बताना नहीं चाहता है। यदि उसकी स्थिति परिजनों को पता चल जाएगी, तो वे दुखी हो जाएँगे। माता-पिता के लिए बच्चों के कष्ट से बड़ा दुख कोई नहीं होता। अतः कवि उनसे अपना दुख छिपाकर उन्हें उस पीड़ा से बचाना चाहता है।

प्रश्न 4. घर से अलग होकर आप घर को किस तरह से याद करते हैं?

उत्तर-

जब हम घर से अलग होते हैं, तो हमें घर बहुत याद आता है। वह ऐसा सुखद स्वप्न लगता है, जहाँ हमारा जीवन बहुत अच्छा व्यतीत होता है। ऐसा लगता है कि जीवन का प्रत्येक सुख वहीं विद्यमान है। माता-पिता का दुलार, भाई-बहन का प्यार तथा आपसी लड़ाई-झगड़े तक याद आने लगते हैं। वहाँ की हर बात मन को बार-बार स्मरण होने लगती है।

प्रश्न 5. 'देखना, कुछ बक न देना' के स्थान पर 'देखना, कुछ कह न देना' कहा जाता तो कविता के सौंदर्य में क्या अंतर आ जाता?

उत्तर-

यदि 'देखना, कुछ बक न देना' के स्थान पर 'देखना, कुछ कह न देना' कहा जाता, तो कविता के भाव-सौंदर्य तथा भाषिक-सौंदर्य में कमी आ जाती। 'कुछ कह न देना' से कथन सामान्य हो जाता, जबकि 'बक न देना' में चेतावनी, अपनापन और भावनात्मक आग्रह अधिक प्रभावशाली ढंग से व्यक्त होता है। यहाँ कवि सावन को मानो समझा रहा है कि वह भावुक होकर कुछ उलटा-सीधा न कह दे। 'बकना' शब्द मुहावरेदार और अधिक प्रभावपूर्ण है, इसलिए उसका प्रयोग कविता को अधिक स्वाभाविक और सजीव बनाता है।

प्रश्न 6. कवि अपनी वास्तविक स्थिति को पिता से क्यों छिपाना चाहता है?

उत्तर-

कवि भवानी प्रसाद मिश्र 'भारत छोड़ो' आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण कारावास में हैं। उस समय स्वतंत्रता सेनानियों को अत्यधिक शारीरिक एवं मानसिक यातनाएँ दी जाती थीं। कवि के पिताजी सरल और भावुक स्वभाव के थे। परिवार के किसी सदस्य की पीड़ा से वे अत्यंत

व्यथित हो जाते थे। कवि नहीं चाहता कि उसकी वास्तविक स्थिति का पता चलने पर पिता दुखी हों। इसलिए वह अपनी वास्तविक स्थिति उनसे छिपाना चाहता है।

प्रश्न 7. कवि सावन से अपने बारे में पिताजी को क्या-क्या बताने का अनुरोध करता है?

उत्तर-

कवि सावन से अपनी वास्तविक स्थिति छिपाकर पिता को सांत्वना देने का अनुरोध करता है। वह चाहता है कि सावन उसके पिताजी से कहे कि उनका पुत्र जेल में रहते हुए भी प्रसन्न और स्वस्थ है। वह कारावास में पढ़ता-लिखता है, खेलता-कूदता है और दुखों को अपने पास नहीं आने देता। वह हर प्रकार से सुखी और निश्चित है। कवि सावन से अपने पिता को अपनी वास्तविक कठिनाइयों से परिचित न कराने का अनुरोध करता है।

प्रश्न 8. पिता की याद आने का तात्कालिक कारण क्या है?

उत्तर-

कवि भवानी प्रसाद मिश्र 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भाग लेने के कारण कारावास में थे। उसी समय सावन मास में वर्षा होने लगती है। बरसते बादलों को देखकर कवि को अपने घर और विशेष रूप से अपने पिताजी की याद आने लगती है। उसे लगता है कि उसकी याद में पिताजी की आँखों से आँसू बह रहे होंगे। इसलिए बरसता हुआ सावन ही पिता की याद आने का तात्कालिक कारण है।

उत्तरमाला

काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

काव्यांश 1

4. ख, 2. ग, 3. ख, 4. क, 5. क

काव्यांश 2

1. ख, 2. घ, 3. क, 4. ग, 5. क

काव्यांश 3

1. क, 2. ग, 3. क, 4. घ, 5. घ

काव्यांश 4

1. क, 2. क, 3. ग, 4. क, 5. ख

काव्यांश 5

1. घ, 2. क, 3. ग, 4. घ, 5. ग

4. "चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती"

त्रिलोचन

चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती नामक कविता 'धरती' संग्रह में संकलित है। कविता में 'अक्षरों' के लिए 'काले काले' विशेषण का प्रयोग किया गया है, जो एक ओर शिक्षा-व्यवस्था के अंतर्विरोधों को उजागर करता है तो दूसरी ओर उस दारुण यथार्थ से भी हमारा परिचय कराता है जहाँ आर्थिक मजबूरियों के चलते घर टूटते हैं। काव्य नायिका चंपा अनजाने ही उस शोषक व्यवस्था के प्रतिपक्ष में खड़ी हो जाती है जहाँ भविष्य को लेकर उसके मन में अनजान खतरा है।

कवि ने गाँव में रहने वाली लड़की चंपा के माध्यम से उन अनपढ़ लड़कियों की स्थिति का वर्णन किया है जो अभी तक पढ़ाई-लिखाई के महत्व को नहीं समझतीं। कागजों पर लिखे काले अक्षरों से निकलते स्वर को देखकर चंपा को हैरानी होती है। चंपा के पिता सुंदर एक ग्वाला है और चंपा स्वयं चरवाहा का काम करती है। उसे पढ़ने-लिखने से कोई मतलब नहीं है।

कवि जब पढ़ने बैठते हैं तब चंपा पठन सामग्री चुराकर उन्हें परेशान करती है। कवि को कागज पर लिखता देख चंपा उनसे प्रश्न करती है कि क्या यह अच्छा काम है। इस प्रश्न पर कवि को हँसी आ जाती है और चंपा चुप हो जाती है। कवि उन्हें पढ़ाई का महत्व समझाते हैं। इसके लिए वे गाँधीजी का उदाहरण देते हैं क्योंकि अन्य गाँववालों की तरह चंपा के मन में गाँधीजी के लिए बहुत सम्मान है। लेकिन चंपा यह मानने को तैयार ही नहीं होती कि गाँधी जी को पढ़ना-लिखना अच्छा लगता होगा। उसके अनुसार अच्छे लोगों को पढ़ना-लिखना अच्छा नहीं लगता है।

कवि उसे समझाते हैं कि यदि वह पढ़ लेगी तो शादी के बाद जब उसका पति पैसे कमाने कलकत्ता चला जाएगा तब वह उसके संदेश भेज सकेगी और उसके भेजे संदेश को पढ़ सकेगी। लेकिन चंपा कहती है कि वह अपने पति को बाहर नहीं जाने देगी और हमेशा अपने पास रखेगी। वह ऐसे कलकत्ता का विनाश चाहती है जहाँ जाने के बाद कोई वापस नहीं आना चाहता।

मुख्य बिंदु -

1. **निरक्षरता और चंचलता-** चंपा अनपढ़ है और जब कवि को लिखते हुए देखती है तो आश्चर्यचकित होती है कि इन काले अक्षरों से आवाज़ कैसे निकलती है। वह चंचल और शरारती है, जो कवि की कलम-कागज छुपा देती है।
2. **शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण-** चंपा पढ़ना नहीं चाहती और शिक्षा को महत्वहीन समझती है। वह कवि के पढ़ने को 'गोदना' (व्यर्थ की चीजें लिखना) कहती है।
3. **कलकत्ता का भय -** चंपा का मानना है कि पढ़ाई-लिखाई से लोग अपने परिवार से दूर हो जाते हैं। इसलिए वह "कलकत्ते पर बजर गिरे" "कोलकाता नष्ट हो जाए (की कामना करती है, क्योंकि कलकत्ता उसके प्रियजनों को उससे दूर ले जाता है।
4. **गांधी बाबा का प्रसंग-** जब कवि कहते हैं कि गाँधी बाबा की इच्छा है कि सभी पढ़ें, तो चंपा सवाल उठाती है कि गाँधीजी तो अच्छे थे, फिर वे पढ़ने-लिखने की बात क्यों कहेंगे?

कविता के पद्यांशों पर आधारित प्रश्न

पद्यांश- 1 -

चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती
में जज पढ़ने लगता हैं वह आ जाती है।
खड़ी खड़ी चुपचाप सुना करती है।
उसे बड़ा अचरज होता हैं।
इन काले चीन्ही से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं।
चंपा सुंदर की लड़की है।
सुंदर ग्वाला है गाँव भैंसे रखता है।
चंपा चौपायों को लेकर
घरवाही करने जाती है।
चंपा अच्छी हैं।
चंचल हैं।
नटखट है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1 – चंपा कौन है?

(क) गाँव की लड़की

(ख) गाँव की गोरी

(ग) गाँव की अनपढ़ लड़की

(घ) कवि की सखी

उत्तर – (ग) गाँव की अनपढ़ लड़की।

प्रश्न 2 – चंपा को किस चीज़ का ज्ञान नहीं है?

(क) अक्षरों का

(ख) कविताओं का

(ग) दुनिया का

(घ) गाँव के लोगों की सोच का

उत्तर – (क) अक्षरों का।

प्रश्न 3 – चंपा चुपचाप क्या करती है?

(क) चुपचाप खड़ी-खड़ी सोच में डूबी रहती है।

(ख) चुपचाप खड़ी-खड़ी कवि को पढ़ते हुए सुनती रहती है।

(ग) चुपचाप खड़ी-खड़ी गाँव की सुंदरता को निहारती रहती है।

(घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर – (ख) चुपचाप खड़ी-खड़ी कवि को पढ़ते हुए सुनती रहती है।

प्रश्न 4 – चंपा की हैरानी का क्या कारण है?

(क) कवि द्वारा अक्षरों को पढ़ना।

(ख) उसे आश्चर्य होता है कि इन काले अक्षरों से कवि ध्वनियाँ कैसे बोल लेता है।

(ग) वह ध्वनियों व अक्षरों के संबंध को नहीं समझ पाती।

(घ) उपरोक्त सभी।

उत्तर – (घ) उपरोक्त सभी।

प्रश्न 5 – चंपा का व्यवहार कैसा है?

(क) वह चंचल है।

(ख) नटखट है।

(ग) वह बहुत शरारतें करती है।

(घ) उपरोक्त सभी।

उत्तर – (घ) उपरोक्त सभी।

पद्यांश - 2-

कभी कभी ऊधम करती हैं।
कभी-कभी वह कलम चुरा देती है।
जैसे तैसे उसे ढूँढ कर जब लाता है
पाता है-अब कागज़ गायब
परेशान फिर हो जाता है।
चंपा कहती है।
तुम कागद ही गोदा करते ही दिन भर
क्या यह काम बहुत अच्छा है।
यह सुनकर मैं हँस देता हूँ।
फिर थंपा चुप हो जाती है।
चंपा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पहुँगी
तुम तो कहते थे गाँधी बाबा अच्छे हैं।
उस दिन चंपा आई मैंने कहा कि
चंपा तुम भी पढ़ लो
हारे गाढ़े काम सरेगा
गाँध बाबा की इच्छा है।
सब जन पढ़ना-लिखना सीखें
पढ़ने लिखने की कैसे बात करेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूँगी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1 – कवि की परेशानी का क्या कारण है?

- (क) चंपा कवि की कलम चुरा लेती है, जिससे कवि परेशान होता है।
- (ख) चंपा कवि के कागज़ गायब कर देती है।
- (ग) चंपा कवि की कलम चुरा लेती है। किसी तरह कवि उसे ढूँढकर लाता है, तो उसके कागज़ गायब मिलते हैं। इन हरकतों से कवि परेशान होता है।
- (घ) उपरोक्त सभी।

उत्तर – (ग) चंपा कवि की कलम चुरा लेती है। किसी तरह कवि उसे ढूँढकर लाता है, तो उसके कागज़ गायब मिलते हैं। इन हरकतों से कवि परेशान होता है।

प्रश्न 2 – चंपा कवि से क्या प्रश्न करती है?

- (क) कि वह दिनभर कागज़ को काला करते हैं। क्या उन्हें यह कार्य बहुत अच्छा लगता है?
- (ख) कि वह दिनभर क्या पढ़ाई करता रहता है।
- (ग) कि वह दिनभर क्या सोचता रहता है।
- (घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर – (क) कि वह दिनभर कागज़ को काला करते हैं। क्या उन्हें यह कार्य बहुत अच्छा लगता है?

प्रश्न 3 – कवि ने चंपा को क्या सीख दी?

- (क) पढ़ने-लिखने की।
- (ख) कविता-लिखने की।
- (ग) स्कूल जाने की।
- (घ) उपरोक्त सभी।

उत्तर – (क) पढ़ने-लिखने की।

प्रश्न 4 – कवि ने गाँधी का नाम क्यों लिया?

- (क) ग्रामीण गाँधी जी का बहुत सम्मान करते हैं।
- (ख) ग्रामीण गाँधी जी की बात मानते हैं।
- (ग) कवि को लगा कि शिक्षा के बारे में गाँधी जी की इच्छा जानने के बाद चंपा पढ़ना सीखेगी।
- (घ) (क) और (ख) दोनों।

उत्तर – (ग) कवि को लगा कि शिक्षा के बारे में गाँधी जी की इच्छा जानने के बाद चंपा पढ़ना सीखेगी।

प्रश्न 5 – चंपा कवि से गाँधी जी के बारे में क्या तर्क देती है?

- (क) अगर गाँधी जी अच्छे हैं, तो वे कभी पढ़ने-लिखने के लिए कहेंगे।
- (ख) अगर गाँधी जी अच्छे हैं, तो वे कभी पढ़ने-लिखने के लिए नहीं कहेंगे।
- (ग) अगर गाँधी जी अच्छे हैं, तो वे कभी कविता लिखने के लिए नहीं कहेंगे।
- (घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर – (ख) अगर गाँधी जी अच्छे हैं, तो वे कभी पढ़ने-लिखने के लिए नहीं कहेंगे।

पद्यांश-3

मैंने कहा कि चंपा, पढ़ लेना अच्छा है।
ब्याह तुम्हारा होगा, तुम गौने जाओगी।
कुछ दिन बालम संग-साथ रह चंपा, जाएगा जब कलकत्ता,
बड़ी दूर है वह कलकत्ता।
कैसे उसे संदेश दोगी?
कैसे उसके पत्र पढ़ोगी?
चंपा, पढ़ लेना अच्छा है।

चंपा बोली – तुम कितने झूठे हो, देखा!
हाय राम! तुम पढ़-लिखकर इतने झूठे हो।
मैं तो ब्याह कभी न करूँ।
और कहीं जो ब्याह हो गया,
तो मैं अपने बालम को संग-साथ रखूँगी।
कलकत्ता मैं कभी न जाने दूँगी।
कलकत्ते पर बजर गिरे।

प्रश्न 1 – कवि ने चंपा को पढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए क्या तर्क दिया?

- (क) कि शादी के बाद जब तुम्हारा पति कलकत्ता काम के लिए जाएगा, तो तुम उसके पास कैसे अपना संदेश भेजोगी तथा कैसे उसके पत्र पढ़ोगी।
(ख) कि शादी के बाद जब वह कलकत्ता जाएगी, तो वह कवि को कैसे संदेश भेजेगी तथा उसके पत्र कैसे पढ़ेगी।
(ग) कि शादी के बाद जब तुम्हारा पति कलकत्ता काम के लिए जाएगा, तो तुम उसके पास कैसे जाओगी।
(घ) कि शादी के बाद जब वह कलकत्ता जाएगी, तो तुम अपने माँ-पिता को कैसे अपना संदेश भेजोगी।

उत्तर – (क) कि शादी के बाद जब तुम्हारा पति कलकत्ता काम के लिए जाएगा, तो तुम उसके पास कैसे अपना संदेश भेजोगी तथा कैसे उसके पत्र पढ़ोगी।

प्रश्न 2 – "बड़ी दूर है वह कलकत्ता", फिर भी लोग कलकत्ता क्यों जाते हैं?

- (क) कलकत्ता बहुत दूर तो है, किंतु महानगर है जहाँ रोजगार के अनेक साधन उपलब्ध हैं।
(ख) कलकत्ता बहुत दूर तो है, किंतु वहाँ रोज़ी-रोटी के साधन सुलभ हैं।
(ग) कलकत्ता बहुत दूर तो है, किंतु रोजगार पाने की आशा में ही लोग कलकत्ता जाते होंगे।
(घ) उपरोक्त सभी।

उत्तर – (घ) उपरोक्त सभी।

प्रश्न 3 – चंपा कवि पर क्या आरोप लगाती है तथा क्यों?

- (क) चंपा कवि पर झूठ बोलने का आरोप लगाती है।
- (ख) चंपा कवि पर सच बोलने का आरोप लगाती है।
- (ग) चंपा कवि पर मज़ाक करने का आरोप लगाती है।
- (घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर – (क) चंपा कवि पर झूठ बोलने का आरोप लगाती है।

प्रश्न 4 – चंपा की अपने पति के बारे में क्या कल्पना है?

- (क) कि वह उसे अपने साथ रखेगी।
- (ख) कि वह उसे कलकत्ता नहीं जाने देगी।
- (ग) कि वह उसे अपने साथ रखेगी तथा कलकत्ता नहीं जाने देगी, अर्थात् उसका शोषण नहीं होने देगी।
- (घ) कि वह उसका शोषण नहीं होने देगी।

उत्तर – (ग) कि वह उसे अपने साथ रखेगी तथा कलकत्ता नहीं जाने देगी, अर्थात् उसका शोषण नहीं होने देगी।

प्रश्न 5 – चंपा कलकत्ते के बारे में क्या कहती है?

- (क) कि उस पर वज्रपात हो जाए ताकि वह नष्ट हो जाए।
- (ख) कि वहाँ बाढ़ आ जाए ताकि वह नष्ट हो जाए।
- (ग) कि उस पर संकट आ जाए ताकि वह नष्ट हो जाए।
- (घ) उपरोक्त सभी।

उत्तर – (क) कि उस पर वज्रपात हो जाए ताकि वह नष्ट हो जाए।

कविता पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1 – चंपा 'काले-काले अच्छर' को क्यों नहीं पहचानती?

उत्तर – चंपा अनपढ़ है, वह कभी स्कूल नहीं गई और उसे अक्षर ज्ञान नहीं है, इसलिए वह काले अक्षरों/किताबों/कागजों को नहीं पहचानती।

प्रश्न 2 – चंपा ने "कलकत्ते पर बजर गिरे" क्यों कहा है?

उत्तर: चंपा की नजर में कलकत्ता एक ऐसा शहर है जो उसके प्रियजनों को परिवार से दूर ले जाता है और घर तोड़ता है। इसलिए, अपनों से दूर होने के डर से वह कलकत्ते के विनाश की कामना करती है।

प्रश्न 3 - चंपा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?

उत्तर: चंपा एक भोली-भाली, चंचल, नटखट और स्वतंत्र विचारों वाली ग्रामीण लड़की है। वह सुंदर ग्वाले की बेटी है, जो गाय-भैंसों चराती है और स्पष्ट बोलने वाली है।

प्रश्न 4 - कवि ने चंपा को पढ़ने के लिए क्यों कहा?

उत्तर: कवि ने चंपा को पढ़ने की सलाह इसलिए दी ताकि वह भविष्य में अपने पति के संदेश पढ़ सके और खुद भी लिख सके, क्योंकि अनपढ़ होने के कारण उसे बिछड़ने का दर्द सहना पड़ सकता है।

प्रश्न 5 - इस कविता में शिक्षा के प्रति क्या दृष्टिकोण है?

उत्तर: कविता में ग्रामीण क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में साक्षरता के प्रति उदासीनता और निरक्षरता को दिखाया गया है, लेकिन साथ ही चंपा के माध्यम से यह भी दिखाया गया है कि कैसे अनपढ़ लोग भी अपने जीवन और व्यवस्था के प्रति संवेदनशील होते हैं।

5. गजल (दुष्यंत कुमार)

गजल का मूल भाव

- **व्यवस्था पर चोट:** कवि मौजूदा राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था पर तीखा प्रहार करते हैं, जो आम आदमी की जरूरतों को पूरा करने में विफल है।
- **बदलाव की आकांक्षा:** गजल का मूल स्वर 'बदलाव' है। कवि चाहते हैं कि व्यवस्था में बदलाव केवल ऊपरी न हो, बल्कि व्यवस्था की नींव ही बदल दी जाए।
- **आम आदमी का संघर्ष:** गजल में आम आदमी के दुख-दर्द और संघर्ष को चित्रित किया गया है, जो कुव्यवस्था के कारण घुटन भरा जीवन जीने को मजबूर है।
- **भविष्य की उम्मीद:** कवि निराशा के माहौल में भी आशा की किरण जगाते हैं और एक बेहतर कल का विश्वास दिलाते हैं।
- **सामाजिक कुरीतियों का विरोध:** ये गजलें अन्याय और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाती हैं और पाठकों को जागरूक करती हैं।

संक्षेप में, यह गजल सामाजिक और राजनीतिक सुधार की मांग करती है और आम नागरिकों को उनके अधिकारों के लिए मुखर होने के लिए प्रेरित करती है।

अभ्यास प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 - आखिरी शेर में गुलमोहर की चर्चा हुई है। क्या उसका आशय एक खास तरह के फूलदार वृक्ष से है या उसमें कोई सांकेतिक अर्थ निहित है? समझा कर लिखें?

उत्तर - "साये में धूप" गजल के आखिरी शेर में "गुलमोहर" शब्द का प्रयोग किया गया है। सामान्यतः गुलमोहर चटक लाल फूलों वाला एक धना व छायादार पेड़ होता है। इस पेड़ के नीचे बैठकर लोग सुकून व आनंद महसूस करते हैं। यह शांति प्रदान करने वाला है। लेकिन दुष्यंत कुमारजी की इस गजल में "गुलमोहर" शब्द का प्रयोग सांकेतिक रूप से किया गया है जिसका अर्थ व्यक्ति के स्वाभिमान या आत्मसम्मान, परोपकारी भाव से है। कवि कहते हैं कि व्यक्ति को सदैव अपने आत्मसम्मान व स्वाभिमान के साथ इस दुनिया में जीना चाहिए और अपने आत्मसम्मान के लिए अगर मरना भी पड़े तो कोई बात नहीं, खुशी-खुशी अपने प्राण न्यौछावर करने चाहिए।

प्रश्न 2 - पहले शेर में "चिराग" शब्द एक बार बहुवचन में आया है और दूसरी बार एकवचन में। अर्थ और काव्य सौंदर्य की दृष्टि से इसका क्या महत्व है?

उत्तर - पहले शेर में "चिराग" शब्द एकवचन और बहुवचन दोनों रूपों में प्रयोग हुआ है। शेर की पहली पंक्ति के "चिरागाँ" शब्द का अर्थ है "भारत के प्रत्येक शहर व प्रत्येक घर में खुशियों से है"। जबकि दूसरी पंक्ति में "चिराग" शब्द का अर्थ है "सिर्फ एक शहर के लिए खुशियों से है"।

दरअसल अपने पहले शेर में कवि ने तत्कालीन सामाजिक व राजनैतिक व्यवस्था पर करारी चोट की है। आजादी के बाद जिस खुशहाल भारत का सपना भारतीयों ने देखा था, वह भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गया। कवि कहते हैं कि सत्ताधारी लोग तो सभी सुख सुविधाएँ भोग रहे हैं मगर आम आदमी अपनी मूलभूत सुख सुविधाओं के लिए भी तरस रहा है। काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से चिरागाँ के बदले चिराग का न मिलना एक चमत्कारी प्रयोग है जो शाब्दिक कम और अर्थपूर्ण सौंदर्य अधिक बिखेर रहा है।

प्रश्न 3 - गजल के तीसरे शेर को गौर से पढ़िए। यहाँ दुष्यंत का इशारा किस तरह के लोगों की ओर है?

उत्तर - गजल के तीसरे शेर में कवि दुष्यंत कुमार ने उन उत्साहहीन, दीन-हीन, बेबस और मजबूर लोगों की ओर इशारा किया है जिन्होंने भ्रष्ट शासन व्यवस्था के खिलाफ लड़ना व बोलना छोड़ दिया है। और वर्तमान परिस्थितियों को अपना भाग्य समझकर उसके अनुसार अपने आप को ढाल लिया है। जो हर स्थिति को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। वे अन्याय का विरोध नहीं करते। उनकी प्रतिरोधशक्ति समाप्त प्रायः हो चुकी है। राजनेता व अफसरशाही जनता की इसी उदासीनता का लाभ उठाकर उसका शोषण करते रहते हैं। हर परिस्थिति से समझौता कर उन्होंने जीवन में अपनी जरूरतों को बहुत ही सीमित कर दिया है। अपने अधिकारों व भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने के बजाय उन्होंने उसी के साथ समझौता कर जीना सीख लिया है।

प्रश्न 4 - आशय स्पष्ट करें?
तेरा निजाम है सिल दे जुबान शायर की,
ये एहतियात जरूरी है इस बहर के लिए।

उत्तर - उपरोक्त पंक्तियों में कवि दुष्यंत ने वर्तमान शासन-व्यवस्था के चलते बुद्धिजीवी वर्ग की भयभीत विवशता पर प्रकाश डाला है। शासन अपनी कमी सुनने के लिए तैयार नहीं है। अतः वह शायरों और कवियों के मुँह सिल सकता है। कवि स्पष्ट करता है कि मुँह बंद कर लेना वह सावधानी भरा कदम है जो एक शायर द्वारा अपनी गज़ल के लिए उठाया गया है। मूक रहकर रचना को अंजाम देना शायर की विवशता और समय की माँग दोनों ही है। कवि कहते हैं कि जब भी कोई कवि या लेखक शासन की भ्रष्ट नीतियों के खिलाफ लोगो को जागरूक करने के लिए अपनी आवाज बुलंद करता है तो शासन वर्ग उस कवि की जुबान बंद करने की कोशिश करता है। उसकी अभिव्यक्ति पर रोक लगा देता है। इसीलिए कवि कहते हैं कि यह संभव है कि सत्ताधारी लोग अपनी सत्ता बचाये रखने के लिए मेरी जुबान बंद कर सकते हैं या मेरी अभिव्यक्ति की आजादी को छीन सकते हैं। कवि खुद मानते हैं कि इस सिस्टम को चलाए रखने के लिए ऐसी सावधानी करनी भी ठीक उसी प्रकार जरूरी है जैसे गजल के छंद (बहर) के लिए बंधन या मीटर की सावधानी करनी बहुत जरूरी होती है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1 - गज़ल में कवि कैसे व्यक्तियों का वर्णन करते हैं?

उत्तर - गज़ल में कवि ऐसे व्यक्तियों का वर्णन करते हैं जो गरीब है। वह आम व्यक्ति जो सत्ता के शासन के कारण शोषित हो रहा है। जो परेशानियों में भी खुद को सहेज रख रहा है। जिनके पास वस्त्र भी नहीं हैं। इनमें अब उस लड़ने की क्षमता खत्म हो चुकी है व विरोध करने का भाव समाप्त हो चुका है। इनके चुप रहने के कारण ही अब सत्ता का राज एकदम शांति से चल रहा है उनकी शासन में कोई बाधा नहीं आ रही है। यह लोग अब कुछ बोलना नहीं चाहते, यह भ्रष्टाचारी नेताओं से अब थक चुके हैं।

प्रश्न 2 - कविता में चिराग शब्द का प्रयोग क्या दर्शाता है?

उत्तर - गज़ल में कवि ने चिराग शब्द का प्रयोग दो बार किया है। जब पहली बार किया तो चिराग शब्द का प्रयोग बहुवचन (चिरागाँ) के रूप में किया गया जिसका अर्थ समाज के सभी लोगों तक सुख सुविधाएँ पहुँचाने से है। गज़ल में जब दूसरी बार चिराग शब्द का प्रयोग किया गया तब एकवचन के रूप में किया गया। जिसका अर्थ केवल एक शहर या व्यक्ति तक न्यूनतम सुख सुविधाओं के न पहुँचने से है। एक ही शब्द का अलग अलग तरीके से दो बार प्रयोग किया जिससे भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ा।

प्रश्न 3 - एक शायर की जुबान पर कौन पाबंदी लगा सकता है?

उत्तर - एक शायर की जुबान पर पाबंदी सत्ता में होने वाला शासक वर्ग लगा सकता है। एक शायर भ्रष्टाचारी सत्ता के विरुद्ध रहता है। सत्ता के विरुद्ध जाकर वह लोगो को जागरूक करता है। लोगों को उनके अधिकार याद दिलाता है। लोगो को क्रांति के लिए बढ़ावा देता है। इससे शासक वर्ग को सत्ता की क्रांति को खतरा रहता है। शासक शायर की जुबान पर पाबंदी लगाने का प्रयास करता है क्योंकि शासक की शक्तियों के कम होने का खतरा रहता है। शासक खुद को बचाने के लिए उनकी कविताओं का पाबंदी लगा सकते हैं। शासक को अपनी सत्ता को बरकरार रखने के लिए विरोध को दबाने की ज़रूरत होती है।

प्रश्न 4 - कवि ने गज़ल में गुलमोहर का प्रयोग किसके प्रतीक रूप में किया है?

उत्तर - कवि ने गज़ल में गुलमोहर का प्रयोग सौंदर्य , परोपकार आत्मसम्मान के प्रतीक के रूप में किया है। हमें गुलमोहर के जरिए यह कहना चाहते हैं कि हम जहाँ भी, जैसे भी जिँएँ गुलमोहर के साथ जिए। इसका अर्थ है हम हमेशा अपने आत्मसम्मान के साथ जीवन जिए।

प्रश्न 5 - कवि के अनुसार शासक वर्ग उनकी आवाज क्यों दबाना चाहता है?

उत्तर - कवि के अनुसार शासक वर्ग उनकी आवाज इसलिए दबाना चाहता है क्योंकि कवि जनता का शोषण करने वाली सत्ता, भ्रष्टाचार करने वाली सत्ता और अन्याय आदि करने वाली सत्ता के खिलाफ आवाज़ उठा कर आम आदमी की आवाज़ बुलंद करवा रहे हैं और सत्ता के खिलाफ खड़ा होने को कह रहे हैं।

प्रश्न 6 - कवि ने देश की राजनीतिक स्थिति पर क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर - कवि देश की राजनैतिक अव्यवस्था के बारे में वर्णन करता हुआ कहता है कि देश की आज़ादी प्राप्त कर लेने के बाद यह तय हुआ था कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुख-सुविधा रूपी चिराग निश्चित रूप से प्रदान किए जाएंगे। परंतु आज तो स्थिति यह है कि एक को तो क्या पूरे शहर को रोशनी देने के लिए एक भी चिराग उपलब्ध नहीं है। लोगों को विभिन्न प्रकार की सुख-सुविधाएँ उपलब्ध करवाने के आश्वासन दिए गए थे, परंतु वे तो केवल आश्वासन ही सिद्ध हुए। किसी को भी जीने के लिए सुख-सुविधाएँ नहीं मिल पाई हैं। राजनीतिज्ञ बड़े-बड़े सपने तो जनता को दिखाते हैं पर वे जनता को सिवाय भुलावे में रखने और धर्म धारण करने के अतिरिक्त कुछ नहीं देते हैं।

प्रश्न 7- 'साये में धूप' गज़ल का उद्देश्य लिखिए।

उत्तर - दुष्यंत कुमार जी के गज़ल संग्रह 'साये में धूप' से ली गई इस गज़ल का नामकरण भी संग्रह के नाम पर ही किया गया है। यह पूरी गज़ल एक विशेष मनःस्थिति में लिखी गई है। वर्तमान राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है उसे कवि बदलना चाहता है। कवि किसी अच्छे विकल्प को मान्यता देना चाहता है। वर्तमान व्यवस्था चाहे वह सामाजिक हो या राजनैतिक, उससे कवि खिन्न है। इस स्वार्थ भरी व्यवस्था के स्थान पर कवि निस्स्वार्थ, त्याग और समर्पण लाना चाहता है। कवि पत्थरों और अँधेरों के स्थान पर रोशनी और नमी को स्थापित करना चाहता है।

6. अक्क महादेवी

परिचय

अक्क महादेवी का जन्म 12 वीं सदी कर्नाटक के उडुतरी गाँव, जिला शिवमोगा में हुआ था। अक्क महादेवी शैव आंदोलन से जुड़ी एक महत्वपूर्ण कवयित्री थी। अक्क महादेवी प्रसिद्ध कन्नड़ संत-कवयित्री और शिवभक्त थीं। वे वीर शैव (लिंगायत) भक्ति आंदोलन की प्रमुख हस्तियों में गिनी जाती हैं। उन्होंने कन्नड़ भाषा में वचन (छोटे, गहन आध्यात्मिक पद) लिखे। उनके वचनों में भक्ति, वैराग्य, आत्मिक स्वतंत्रता और सामाजिक बंधनों से मुक्ति की बात मिलती है। वे भगवान चन्नमल्लिकार्जुन (शिव) को अपना आराध्य मानती थीं। चन्नमल्लिकार्जुन देव अर्थात् शिव उनके आराध्य थे। कन्नड़ भाषा में 'अक्क' शब्द का अर्थ बहिन होता है।

कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता में कन्नड़ की मीरा के नाम से प्रसिद्ध अक्क महादेवी के दो वचन लिए गए हैं, इन दोनों वचनों का अंग्रेजी से अनुवाद केदारनाथ सिंह ने किया है।

हे भूख! मत मचल वचन में कवयित्री ने मनुष्य को अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण का संदेश दिया है, वह चाहती है कि मनुष्य को अपनी भूख, प्यास, नींद, लोभ, मोह, क्रोध, अहम, ईर्ष्या आदि पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

दूसरे वचन, हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर में एक भक्त का ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव दिखाया गया है। कविता में कवयित्री ने ईश्वर से ऐसी स्थिति की कामना की है जिसमें उसे चरम दीनता और असहायता का अनुभव हो। यह भक्ति की पराकाष्ठा और आत्मसमर्पण का भाव दर्शाती है।

पद्यांश आधारित प्रश्न

प्रश्न निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

पद्यांश -1

हे भूख! मत मचल

प्यास, तड़प मत

हे नींद! मत सता

क्रोध, मचा मत उथल-पुथल

हे मोह! पाश अपने ढील

लोभ, मत ललचा

हे मद! मत कर मदहोश

ईर्ष्या, जला मत

ओ चराचर! मत चूक अवसर

आई हूँ संदेश लेकर चन्नमल्लिकार्जुन का

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. कवयित्री ने 'भूख' और 'प्यास' को क्या न करने के लिए कहा है?

(क) बढ़ने के लिए।

(ख) मचलने और तड़पने के लिए।

(ग) मचलने और तड़पने से मना किया है।

(घ) शांत होने के लिए।

उत्तर – (ग) मचलने और तड़पने से मना किया है।

प्रश्न 2. कविता में 'मद' को क्या न करने के लिए कहा गया है?

(क) मदहोश न करने के लिए।

(ख) बढ़ने के लिए।

(ग) कम होने के लिए।

(घ) गर्व करने के लिए।

उत्तर – (क) मदहोश न करने के लिए।

प्रश्न 3. "हे मोह! पाश अपने ढील" – यहाँ 'पाश' का क्या अर्थ है?

(क) कपड़ा।

(ख) बंधन / जाल।

(ग) रास्ता।

(घ) डोरी।

उत्तर – (ख) बंधन / जाल।

प्रश्न 4. कवयित्री किसे 'अवसर मत चूक' कहकर संबोधित करती है?

(क) मनुष्य को।

(ख) चराचर को।

(ग) ईश्वर को।

(घ) कवयित्री स्वयं को।

उत्तर – (ख) चराचर को।

प्रश्न 5. निम्नलिखित कथन और कारण को पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए—

कथन: इंद्रियों और विकारों पर संयम रखकर जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है।

कारण: इंद्रियाँ और उनके विकार लक्ष्य प्राप्ति में बाधक होते हैं।

(क) कथन सही है और कारण गलत है।

(ख) कारण सही है, किंतु कथन गलत है।

(ग) कथन और कारण दोनों सही हैं।

(घ) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

उत्तर – (ग) कथन और कारण दोनों सही हैं।

पद्यांश -2

हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर

मंगवाओ मुझे भीख

और कुछ ऐसा करो

कि भूल जाऊँ अपना घर पूरी तरह

झोली फैलाऊँ और ना मिले भीख

कोई हाथ बढ़ाए कुछ देने को

तो वह गिर जाए नीचे

और यदि मैं झुकूँ उसे उठाने

तो कोई कुत्ता आ जाए

और उसे झपटकर छीन ले मुझसे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. कवयित्री ने ईश्वर को किसके फूल जैसा बताया है?

(क) गुलाब के।

(ख) कमल के।

(ग) जूही के।

(घ) चंपा के।

उत्तर – (ग) जूही के।

प्रश्न 2. कवयित्री ईश्वर से क्या माँगना चाहती है?

(क) धन।

(ख) भीख।

(ग) सुख।

(घ) मोक्ष।

उत्तर – (घ) मोक्ष।

प्रश्न 3. निम्नलिखित कथन एवं कारण पर विचार कर सही विकल्प का चयन कीजिए—

कथन: कवयित्री संसार के दुःख, मोह और लोभ से मुक्त होना चाहती है।

कारण: कवयित्री अपना घर और इस संसार को भूल जाना चाहती है।

(क) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।

(ख) कारण सही है, किंतु कथन गलत है।

(ग) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(घ) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

उत्तर – (ग) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 4. "झोली फैलाऊँ और न मिले भीख" – इस पंक्ति से कवयित्री की किस मनोदशा का पता चलता है?

उत्तर – इस पंक्ति से कवयित्री की असहाय, दीन और विनम्र मनोदशा का पता चलता है।

प्रश्न 5. यदि कोई हाथ बढ़ाकर कुछ दे और वह गिर जाए, तो कवयित्री के अनुसार उठाने पर उसे कौन छीन लेगा?

उत्तर – यदि कोई हाथ बढ़ाकर कुछ दे और वह गिर जाए, तो कवयित्री के अनुसार उसे उठाने पर कोई कुत्ता छीन लेगा।

बोधोद्गात्मक प्रश्न :-

प्रश्न 1: कवयित्री ईश्वर से कैसी भीख माँगती है?

उत्तर: कवयित्री ऐसी भीख माँगती है जो मिले ही नहीं। वह चाहती है कि वह भूख से व्याकुल हो, झोली फैलाए पर उसे भीख न मिले। वह चरम दीनता और असहायता की स्थिति चाहती है।

प्रश्न 2: कवयित्री 'बेघर' होने की कामना क्यों करती है?

उत्तर: कवयित्री इतना बेघर होना चाहती है कि अपना घर ही पूरी तरह भूल जाए। यह अहंकार और ममता के त्याग का प्रतीक है। वह सांसारिक मोह से मुक्त होना चाहती है।

प्रश्न 3: "कोई हाथ बढ़ाए कुछ देने को तो वह गिर जाए नीचे" – इस पंक्ति का क्या आशय है?

उत्तर: इसका आशय है कि कवयित्री ऐसी दीनता चाहती है कि कोई दया करके कुछ देना भी चाहे तो वह वस्तु उस तक न पहुँचे। उसकी असहायता पूर्ण हो।

प्रश्न 4: कविता में कुत्ते का प्रतीक क्या दर्शाता है?

उत्तर: कुत्ता यहाँ भाग्य की क्रूरता और चरम दुर्दशा का प्रतीक है। कवि कहता है कि यदि वह गिरी वस्तु उठाने झुके तो कुत्ता भी उससे छीन ले। यानी उसे जीने का आधार भी न मिले।

प्रश्न 5: इस कविता का मूल भाव/केंद्रीय भाव क्या है?

उत्तर: इस कविता का मूल भाव 'पूर्ण आत्मसमर्पण' और 'अहंकार का विसर्जन' है। कवयित्री दुःख, दीनता और अभाव को वरदान मानकर ईश्वर से माँगती है ताकि उसका 'मैं' पूरी तरह मिट जाए।

विशेष: यहाँ 'विपरीत कामना' का प्रयोग है। सामान्यतः मनुष्य सुख माँगता है, पर कवयित्री दुःख माँग रही है। यह भक्ति की पराकाष्ठा है।

कविता के साथ

प्रश्न 1. लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियाँ बाधक होती हैं-इसके संदर्भ में अपने तर्क दीजिए।

उत्तर: लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियाँ बाधक होती हैं। मनुष्य की पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा। जिनका कार्य है-स्वयं को तृप्त करना। इनकी तृप्ति के चक्कर में मनुष्य जीवन भर भटकता रहता है। इंद्रियाँ मनुष्य को भ्रमित करती हैं तथा उसे लक्ष्य से भटकाती हैं। इसके लिए इंद्रियों पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। किसी लक्ष्य को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब मन में एकाग्रता हो तथा इंद्रियों पर नियंत्रण हो।

प्रश्न 2. ओ चराचर! मत चूक अवसर-इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इन पंक्तियों का आशय है कि इंद्रियों के सुख के लिए भाग-दौड़ बंद करने के पश्चात् ईश्वर प्राप्ति का मार्ग सरल हो जाता है। अतः चराचर (जड़-चेतन) को संबोधित कर कहती हैं कि तू इस मौके को मत खोना। इंद्रियों के विकारों की शांति के पश्चात् ही ईश्वर की प्राप्ति संभव है, अतः कवयित्री संपूर्ण चर - अचर को इस अवसर का लाभ उठाने के लिए कह रही है।

प्रश्न 3. ईश्वर के लिए किस दृष्टांत का उपयोग किया गया है। ईश्वर और उसके साम्य का आधार बताइए।

उत्तर: ईश्वर के लिए जूही के फूल का दृष्टांत दिया गया है। जूही का फूल कोमल, सात्विक, सुगंधित व श्वेत होता है। यह लोगों का मन मोह लेता है। वह बिना किसी भेदभाव के सबको खुशबू बाँटता है। इसी प्रकार ईश्वर भी सभी प्राणियों को समान रूप से अपनी कृपा दिखाते हैं। वह कोई भेदभाव नहीं करते तथा सबका कल्याण करते हैं।

प्रश्न 4. अपना घर से क्या तात्पर्य है? इसे भूलने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर: अपना घर से तात्पर्य सांसारिक मोह-माया से है। संसार की वह चीजें जो हमें अपने-आप में उलझा लेती हैं, जिनसे हम प्रेम करते हैं वे हमारे ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में बाधक होती हैं। यदि हम उन्हें भूल जाएँ तो ईश्वर की ओर हमारा मन पूरी एकाग्रता के साथ लगता है। इसीलिए उन्हें भूल जाने की बात कही गई है।

प्रश्न 5. दूसरे वचन में ईश्वर से क्या कामना की गई है और क्यों ?

उत्तर - दूसरे वचन में ईश्वर से सब कुछ छीन लेने की कामना की गई है। कवयित्री ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह उससे सभी तरह के भौतिक साधन, घर परिवार, प्रेम संबंध छीन ले। वह ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करे कि वह भीख माँगने के लिए मजबूर हो जाए। इससे उसका अहम भाव नष्ट हो जाएगा और , भूख मिटाने के लिए जब वह झोली फैलाए तो उसे भीख न मिले। यदि कोई देने के लिए आगे आए तो वह भीख नीचे गिर जाए। जमीन पर गिरी भीख को भी कुत्ता झपटकर ले जाए अर्थात् मेरे अंदर लेशमात्र भी अहम भाव न रहे और मेरा सांसारिक मोह समाप्त होकर ईश्वर के प्रति मेरा मन एकाग्र हो जाए।

7. सबसे खतरनाक - 'पाश'

कवि परिचय-

मूल नाम-अवतार सिंह संधू

जन्म-सन 1950, तलवंडी सलेम गाँव, ज़िला जालंधर (पंजाब)

प्रमुख रचनाएँ-लौह कथा, उड़दें बाजां मगर, लड़ेंगे साथी, बीच का रास्ता नहीं होता, लहू है कि तब भी गाता है (हिंदी अनुवाद)

मृत्यु-सन 1988

पाठ का सारांश:

कवि पाश बताते हैं कि दुनिया में खतरनाक चीजें सिर्फ बाहरी नहीं होतीं, बल्कि सबसे बड़ा खतरा हमारे अंदर पैदा होता है। वे कहते हैं कि अत्याचार, हिंसा या बुरे हालात खतरनाक हैं, लेकिन उससे भी ज्यादा खतरनाक है हमारा डर जाना, चुप हो जाना, और अन्याय के खिलाफ आवाज न उठाना।

कवि के अनुसार -जब इंसान अपने सपनों को छोड़ देता है, अपने अधिकारों के लिए लड़ना बंद कर देता है और सच्चाई के लिए खड़े होने की हिम्मत खो देता है। वह स्थिति सबसे खतरनाक है।

यह कविता हमें साहसी, जागरूक और संवेदनशील बनने के लिए प्रेरित करती है, ताकि हम समाज में गलत चीजों के खिलाफ आवाज़ उठा सकें।

व्याख्या एवं अर्थ ग्रहण संबंधी प्रश्न

1. मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती

पुलिस की मार सबसे खतरनाक नहीं होती

गद्दारी-लोभ की मुट्ठी सबसे खतरनाक नहीं होती

बैठे-बिठाए पकड़े जाना—बुरा तो है

सहमी-सी चुप में जकड़े जाना—बुरा तो है

सबसे खतरनाक नहीं होता

कपट के शोर में

सही होते हुए भी दब जाना—बुरा तो है

किसी जुगनू की लौ में पढ़ना—बुरा तो है

मुट्ठियाँ भींचकर बस वक्त निकाल लेना—बुरा तो है

सबसे खतरनाक नहीं होता।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता कवि पाश हैं। इस कविता में, कवि ने दिनोंदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही स्थितियों को उसको विद्रूपताओं के साथ चित्रित किया है।

इस अंश में कवि कुछ खतरनाक स्थितियों के विषय में बता रहा है।

व्याख्या-कवि यहाँ उन स्थितियों का वर्णन करता है जो मानव को दुख तो देती है, परंतु सबसे खतरनाक नहीं होतीं। यह बताता है कि किसी की मेहनत की कमाई को लूटने की स्थिति सबसे खतरनाक नहीं है, क्योंकि उसे फिर पाया जा सकता है। पुलिस की मार पड़ना भी इतनी खतरनाक नहीं है। किसी के साथ गद्दारी करना अथवा लोभवश रिश्ता देना भी खतरनाक है, परंतु अन्य बातों जितना नहीं।

कवि कहता है कि किसी दोष के बिना पुलिस द्वारा पकड़े जाने से बुरा लगता है तथा अन्याय को डरकर चुपचाप सहन करना भी बुरी बात है, परंतु यह सबसे खतरनाक स्थिति नहीं है। छल-कपट के महौल में सच्ची बातें छिप जाती है। कोई जुगनू की लौ में पढ़ता है अर्थात् साधनहीनता में गुजारा करता है, विवशतावश अन्याय को सहन कर समय गुजार देना आदि बुरा

तो है, परंतु सबसे खतरनाक नहीं है। कई बातें ऐसी हैं जो बहुत खतरनाक है और उनके परिणाम दूरगामी होते हैं।

विशेष-

1. 'सबसे खतरनाक नहीं होती' तथा 'बुरा तो है' की आवृत्ति से परिस्थितियों की भयावहता का पता चलता है।
2. 'सहमी सी चुप' और बैठे बिठाए' में उपमा अलंकार है।
3. साधनाहीनता के लिए 'जुगनू की लौ' नया प्रयोग है।
4. 'मुट्ठियाँ भीचकर बस वक्त निकाल लेने' का बिंब प्रभावशाली है।
5. सहज सरल खड़ी बोली है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

5. 'सबसे खतरनाक नहीं होती' वाक्यांश की आवृत्ति से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर- इस वाक्यांश की आवृत्ति से कवि कहना चाहता है कि समाज में अनेक स्थितियाँ खतरनाक हैं, परंतु इनसे भी खतरनाक स्थिति जड़ता, प्रतिक्रियाहीनता की है।

6. कवि ने किन-किन खतरनाक स्थितियों का उल्लेख किया है?

उत्तर-कवि ने निम्नलिखित खतरनाक स्थितियों के बारे में बताया है-मेहनत की कमाई लूटना, पुलिस की मार, शासन के प्रति गद्दारी, लोभ करना।

3. मुट्ठियाँ भींचकर वक्त निकालने को बुरा क्यों कहा गया है?

उत्तर-कवि ने अपने आक्रोश को दबाकर टालते रहने की प्रवृत्ति को बुरा बताया है, इससे मनुष्य अपनी इच्छानुसार कार्य नहीं कर सकता।

2. सबसे खतरनाक होता है

मुर्दा शांति से भर जाना

न होना तड़प का सब सहन कर जाना

घर से निकलना काम पर

और काम से लौटकर घर जाना

सबसे खतरनाक होता है

हमारे सपनों का मर जाना

सबसे खतरनाक वह घड़ी होती है

आपकी कलाई पर चलती हुई भी जो

आपकी निगाह में रुकी होती है

शब्दार्थ-मुर्दा शांति-निष्क्रियता, प्रतिरोध-विहीनता की स्थिति। तड़प-बेचैनी। सपनों का मरना-इच्छाओं का नष्ट होना। घड़ी-समय बताने का यंत्र, वक्त। निगाह-दृष्टि।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता पाश हैं। कवि ने दिनोंदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही स्थितियों को उसकी विद्रूपताओं के साथ चित्रित किया है।

व्याख्या-कवि कहता है कि सबसे खतरनाक स्थिति वह है जब व्यक्ति जीवन के उल्लास व उमंग से मुँह मोड़कर निराशा व अवसाद से घिरकर सन्नाटे में जीने का अभ्यस्त हो जाता है। उसके अंदर कभी न समाप्त होनेवाली शांति छा जाती है। यह मूक दर्शक बनकर सब कुछ चुपचाप सहन करता जाता है। वह घर से काम पर चला जाता है और काम समाप्त करके घर लौट आता है। उसके जीवन का मशीनीकरण हो जाता है। उसके सभी सपने मर जाते हैं, उसकी सारी इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं। ये परिस्थितियाँ अत्यंत खतरनाक होती हैं। कवि कहता है कि सबसे खतरनाक दृष्टि वह है जो अपनी कलाई पर बंधी घड़ी को सामने चलता देखकर सोचे कि जीवन स्थिर है; दूसरे शब्दों में, मनुष्य नित्य हो रहे परिवर्तनों के अनुसार स्वयं को नहीं बदलता और न ही स्वयं को बदलना चाहता है।

विशेष-

1. कवि जीवन में आशा व समयानुसार परिवर्तन की माँग करता है।
2. 'घड़ी' में श्लेष अलंकार है।
3. 'सपनों का मर जाना' में लाक्षणिकता है।
4. भाषा व्यंजना प्रधान है।
5. खड़ी बोली है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. 'मुर्दा शांति' से कवि का क्या अभिप्राय है?
2. सपनों के मर जाने से क्या होता है?
3. घड़ी के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर 1. 'मुर्दा शांति' में अभिप्राय है, मानव जीवन में जड़ता और निष्क्रियता का भाव होना अर्थात् अत्याचारों को मूक बनकर सहते जाना और कोई प्रतिक्रिया न व्यक्त करना।

2. सपनों के मरने से मनुष्य की कामनाएँ, इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं। यह वर्तमान से संतुष्ट रहता है। इस प्रवृत्ति में समाज में नए विचार व आविष्कार नहीं हो पाते।

3. घड़ी समय बताती है। वह समय की गतिशीलता दर्शाती है तथा मनुष्य को समय के अनुसार बदलने की प्रेरणा देती है। मनुष्य द्वारा स्वयं को न बदल पाने की स्थिति खतरनाक होती है।

3. सबसे खतरनाक यह आँख होती है

जो सब कुछ देखती हुई भी जमी बर्फ होती है

जिसकी नजर दुनिया को मुहब्बत से घूमना भूल जाती है

जो चीजों से उठतों अंधेपन की भाप पर बुलक जाती है

जो रोजमर्रा के क्रम को पीती हुई

एक लक्ष्यहीन दुहराव के उलटफेर में खो जाती है

शब्दार्थ: जमी बर्फ-संवेदनशून्यता । दुनिया-संसार। मुहब्बत-प्रेम। रोजमर्रा-दैनिक कार्य।
उलटफेर-चक्कर। दुहराव-दोहराना।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इसके रचयिता कवि पाश हैं। इस कविता में कवि ने दिनों दिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही स्थितियों को उसकी विद्रूपताओं के साथ चित्रित किया है।

व्याख्या-कवि सामाजिक विद्रूपताओं का विरोध न करने को खतरनाक मानता है। यह कहता है कि वह आँख बहुत खतरनाक होती है जो अपने सामने हो रहे अन्याय को संवेदनशून्य होकर वैसे देखती रहती है जैसे वह जमी बर्फ हो। जिसको नजर इस संसार को प्यार से घूमना भूल जाती है अर्थात् जिस नजर से प्रेम व सौंदर्य की भावना समाप्त हो जाती है और हर वस्तु को घृणा से देखती है, यह नजर खतरनाक हो जाती है। ऐसी नजर वस्तु के स्वार्थ के लोभमें अंधी हो जाती है तथा उसे पाने के लिए लालायित हो उठती है, वह खतरनाक होती है। वह जिंदगी जो दैनिक क्रियाकलापों में संवेदनहीनता के साथ भटकती रहती है। जिसका कोई लक्ष्य नहीं है, जो लक्ष्यहीन होकर अपनी दिनचर्या को पूरा करती है खतरनाक होती है।

विशेष-

1. कवि संवेदनशून्यता पर गहरा व्यंग्य करता है।
2. 'जमी बर्फ', 'मुहब्बत से चूमना', 'अंधेपन की भाप', 'रोजमर्रा के क्रम को पीती' आदि नए भाषिक प्रयोग हैं।
3. 'जमी बर्फ' संवेदनशून्यता का परिचायक है।
4. भाषा व्यंजना प्रधान है।
5. 'अंधेपन की भाप' में रूपक अलंकार है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवि कैसी आँख को खतरनाक मानता है?
2. दुनिया को मुहब्बत की नजर से न घूमनेवाली आँख को कवि खतरनाक क्यों मानता है?
3. आँख का अंधेपन की भाप पर लुढ़कना क्या कटाक्ष करता है?

उत्तर 1. कवि उस आँख को खतरनाक मानता है जो अन्याय को देखकर भी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करती। इस तरह से कवि मनुष्य की संवेदनशून्यता पर चोट कर रहा है।

2. दुनिया को मुहब्बत की नजर से न घूमनेवाली आँख को कवि इसलिए खतरनाक मानता है; क्योंकि ऐसी नजर से प्रेम एवं सौंदर्य की भावना समाप्त हो जाती है। ऐसी आँख हर वस्तु को घृणा की दृष्टि से देखती है।

3. इसमें कवि कहता है कि मनुष्य वस्तुओं की चाह में गलत सही कार्य करता है। वह उनकी पूर्ति की चाह में हरमूल्य को दाँव पर लगा देता है।

4. सबसे खतरनाक वह चाँद होता है

जो हर हत्याकांड के बाद

वीरान हुए आँगनों में चढ़ता है

पर आपकी आँखों को मिर्चों की तरह नहीं गड़ता है।

शब्दार्थ-हत्याकांड-हत्या की घटना, वीरान-सुनसान। गड़ता-चुभता।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इस कविता में, कवि ने दिनोदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही स्थितियों को उसकी विद्रूपताओं के साथ चित्रित किया है।

व्याख्या-कवि अपराधीकरण के बारे में बताता है कि वह चाँद सबसे खतरनाक है, जो हत्याकांड के बाद उन आँगनों में चढ़ता है जो वीरान हो गए हैं। चाँद सौंदर्य और शांति का परिचायक है, परंतु हत्याकांडों का चश्मदीद गवाह भी है। ऐसे चाँद की चाँदनी लोगों की आँखों में मिर्च की तरह नहीं गड़ती। इसके विपरीत लोग शांति महसूस करते हैं।

विशेष-

1. 'चाँद' आस्था व शांति का प्रतीक है।
2. 'मिर्च की तरह गड़ना' सशक्त प्रयोग है।
3. अनुप्रास अलंकार है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. 'चाँद' किसका प्रतीक है? कवि उसे खतरनाक क्यों मानता है?
2. घर-आँगन के वीरान होने का क्या कारण है?
3. अंतिम पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 1. 'चाँद' आस्था व शांति का प्रतीक है। कवि उसे खतरनाक मानता है, क्योंकि वह लोगों में प्रतिकार की भावना को दबा देता है।

2. इस आँगन के वीरान होने के कारण हत्याकांड हैं, जो आतंक के कारण हो रहे हैं।

3. इस पंक्ति का अर्थ है कि लोग हत्याकांड पर भी शांत रहते हैं तथा अपनी खुशियों में मग्न रहते हैं, जबकि उन्हें ऐसे हमलों का प्रतिकार करना चाहिए

5. सबसे खतरनाक वह गीत होता है

आपके कानों तक पहुंचने के लिए जो मरसिए पड़ता है

आतंकित लोगों के दरवाजों पर जो गुंडे की तरह अकड़ता है

सबसे खतरनाक वह रात होती है

जो जिंदा रूह के आसमानों पर ढलती है

जिसमें सिर्फ उल्लू बोलते और हुआँ हुआँ करते गीदड़
हमेशा के अंधेरे बंद दरवाजों-चौगाठों पर चिपक जाते हैं

शब्दार्थ-मरसिए-मृत्यु पर गाए जानेवाले करुण गीत। आतंकित-डरे हुए। जिंदा रूह-जीवित आत्मा। चौगाठों-चौखटें।

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इस कविता में कवि ने दिनोंदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही स्थितियों को उसकी विद्रूपताओं के साथ चित्रित किया है।

व्याख्या-कवि कहता है कि वे गीत सबसे खतरनाक हैं जो मनुष्य के हृदय में शोक की लहर दौड़ाते हैं। ये गीत मृत्यु पर गाए जाते हैं तथा भयभीत लोगों को और डराते हैं, उन्हें गुंडों की तरह धमकाते हैं तथा अकड़ते हैं। कवि ऐसे गीतों को निरर्थक मानता है, क्योंकि ये प्रतिरोध के भाव को नहीं जगाते। वह कहता है कि जब किसी जीवित आत्मा के आसमान पर निराशा रूपी रात्रि का घना अंधेरा छा जाता है और उसमें कोई उत्साह नहीं रह जाता, ऐसी रात बहुत खतरनाक होती है। उसके हर कोने-चौखट पर उल्लू व गोदड़ों की तरह शोक व भय चिपक जाते हैं जो कभी निराशा से उबरने नहीं देते।

विशेष-

1. कवि ने संवेदनहीनता व निराशा को खतरनाक बताया है।
2. 'गुंडे की तरह अकड़ता है', उल्लू बोलते और हुआँ हुआँ बिब सार्थक व सजीव है।
3. 'मिचों की तरह', 'गुंडों की तरह' में उपमा अलंकार है।
4. खड़ी बोली का प्रयोग है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवि कैसे गीत को खतरनाक मानता है तथा क्यों?
2. कवि ने किस रात को खतरनाक माना है?
3. 'जिंदा रूह के आसमानों का अर्थ क्या है? कवि इसके द्वारा क्या कहना चाहता है?

उत्तर 1. कवि उन गीतों को खतरनाक मानता है जो शोक गीत गाकर लोगों के मन में प्रतिकार के भाव को समाप्त करके उन्हें और अधिक डराता है।

2. कवि उस रात को खतरनाक मानता है जो जीवित लोगों की आत्मा रूपी आसमान पर अंधकार के समान छाजाती है।

3. इसका अर्थ है-सजग लोग। कवि इसके माध्यम से यह कहना चाहता है कि सजग लोगों को अंधविश्वासों व रूढ़ियों से बचना चाहिए।

6. सबसे खतरनाक वह दिशा होती है
जिसमें आत्मा का सूरज डूब जाए और
उसकी मुर्दा धूप का कोई टुकड़ा
आपके जिस्म के पूरब में चुभ जाए
मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती
पुलिस को मार सबसे खतरनाक नहीं होती
गद्दारी लोभ की मुट्ठी सबसे खतरनाक नहीं होती।
शब्दार्थ-मुर्दा-मृत/मरा हुआ। जिस्म-शरीर । पूरब-पूर्व दिशा

प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कविता 'सबसे खतरनाक' से उद्धृत है। इस कविता में कवि ने दिनोंदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही स्थितियों को उसकी विद्रूपताओं के साथ चित्रित किया है।

व्याख्या-कवि कहता है कि सबसे खतरनाक दिशा वह है, जिसमें आत्मा का सूरज डूब जाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपने अंदर की आबाज को नहीं सुनता। उसकी मुर्दा जैसी स्थिति हमें कहीं कोई प्रभाव छोड़ जाए तो यह स्थिति भी खतरनाक होती है। ऐसे लोगों में धूप की किरणों से आशा उत्पन्न भी हो तो मृतप्राय ही होती है। जो अपने ही शरीर रूपी पूर्व दिशा में चुभकर उसे लहलुहान करती है। कवि कहना चाहता है कि अन्याय को सहना ही लोगों ने अपनी नियति मान लिया है।

कवि कहता है कि किसी को मेहनत की कमाई लुट जाए तो वह खतरनाक नहीं होती। पुलिस को मार या गद्दारी आदि भी इतनी खतरनाक नहीं होती। खतरनाक स्थिति वह है जब व्यक्ति में संघर्ष करने की क्षमता हो खत्म हो जाए।

विशेष-

1. कवि व्यक्ति की संवेदनहीनता को खतरनाक स्थिति बताता है।
2. 'आत्मा का सूरज' और 'जिस्म के पूरब' में रूपक अलंकार है।
3. सांकेतिक भाषा है।
4. काव्य-रचना मुक्त छंद है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कवि किस दिशा को खतरनाक मानता है?
2. 'आत्मा का सूरज डूब जाए' का अर्थ बताइए।
3. मुर्दा धूप का कोई टुकड़ा का व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 1. कवि उस दिशा को खतरनाक मानता है जिस पर चलकर मनुष्य अपनी आत्मा की बात अनसुनी कर देता है।

2. इसका अर्थ है-अंतरात्मा की आवास का क्षीण पड़ना।

3. कवि कहना चाहता है कि आदर्शपरक अच्छी बातें जैसे-त्याग, अहिंसा, बलिदान आदि, मनुष्य को प्रतिक्रियाहीन व जड़ बना देती है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

1. कवि के अनुसार सबसे खतरनाक क्या है?

उत्तर-कवि के अनुसार सबसे खतरनाक है—इंसान का डरकर चुप हो जाना, अपने सपनों का मर जाना और संवेदनहीन हो जाना। यही स्थिति समाज और मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

2. कवि ने किन चीजों को सबसे खतरनाक नहीं माना?

उत्तर: कवि ने मेहनत की लूट, पुलिस का अत्याचार, गरीबी और अन्यायपूर्ण शासन को बुरा तो माना है, लेकिन उन्हें *सबसे खतरनाक* नहीं कहा है।

3. “सपनों का मर जाना” से कवि का क्या आशय है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि जब व्यक्ति अपने जीवन के लक्ष्य, उम्मीदें और बेहतर भविष्य की कल्पना करना छोड़ देता है, तो उसका जीवन निष्क्रिय और निरर्थक हो जाता है।

4. कवि ने संवेदनहीनता को खतरनाक क्यों कहा है?

उत्तर: संवेदनहीनता के कारण व्यक्ति दूसरों के दुख-दर्द को महसूस नहीं करता, जिससे समाज में मानवता और सहानुभूति खत्म हो जाती है। यह स्थिति समाज को अमानवीय बना देती है।

5. “डरकर चुप हो जाना” क्यों खतरनाक है?

उत्तर: जब लोग अन्याय के खिलाफ आवाज़ नहीं उठाते, तो बुराई और अत्याचार बढ़ते जाते हैं। इसलिए चुप रहना समाज के लिए हानिकारक है।

6. कविता का मुख्य संदेश क्या है?

उत्तर: कविता का मुख्य संदेश है कि हमें साहसी, जागरूक और संवेदनशील बनना चाहिए, अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठानी चाहिए और अपने सपनों को जीवित रखना चाहिए।

7. कवि समाज को क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर: कवि समाज को यह संदेश देते हैं कि-अन्याय का विरोध करें, डर से मुक्त रहें, अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करें और संवेदनशील बने रहें।

8. “सबसे खतरनाक” शीर्षक का औचित्य बताइए।

उत्तर: यह शीर्षक उचित है क्योंकि कविता में कवि ने बताया है कि असली खतरा बाहरी नहीं, बल्कि भीतर की कमजोरी—डर, चुप्पी, और सपनों का खत्म होना है। यही सबसे खतरनाक स्थिति है।

9. कवि के अनुसार सही जीवन जीने का तरीका क्या है?

उत्तर: सही जीवन वही है जिसमें व्यक्ति अपने सपनों को बनाए रखे, अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाए, संवेदनशील और जागरूक रहे।

10. कविता हमें किस प्रकार प्रेरित करती है?

उत्तर: यह कविता हमें साहस, जागरूकता और मानवता के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देती है तथा अन्याय के खिलाफ खड़े होने के लिए प्रेरित करती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. “सबसे खतरनाक” कविता के रचयिता कौन हैं?

- (क) कबीर
- (ख) रामधारी सिंह दिनकर
- (ग) अवतार सिंह पाश
- (घ) महादेवी वर्मा

उत्तर – (ग) अवतार सिंह पाश।

प्रश्न 2. कवि के अनुसार सबसे खतरनाक क्या है?

- (क) गरीबी।
- (ख) पुलिस का अत्याचार।
- (ग) सपनों का मर जाना।
- (घ) युद्ध।

उत्तर – (ग) सपनों का मर जाना।

प्रश्न 3. कवि ने किन चीज़ों को सबसे खतरनाक नहीं माना है?

- (क) मेहनत की लूट और अत्याचार।
- (ख) प्रेम और मित्रता।
- (ग) शिक्षा और ज्ञान।
- (घ) प्रकृति और पर्यावरण।

उत्तर – (क) मेहनत की लूट और अत्याचार।

प्रश्न 4. “डरकर चुप हो जाना” क्या दर्शाता है?

- (क) बहादुरी।
- (ख) कायरता और निष्क्रियता।
- (ग) बुद्धिमानी।
- (घ) खुशी।

उत्तर – (ख) कायरता और निष्क्रियता।

प्रश्न 5. “सपनों का मर जाना” का क्या अर्थ है?

- (क) सो जाना।
- (ख) कल्पना करना।
- (ग) जीवन में उद्देश्य समाप्त हो जाना।
- (घ) काम करना।

उत्तर – (ग) जीवन में उद्देश्य समाप्त हो जाना।

प्रश्न 6. कवि के अनुसार संवेदनहीनता का क्या परिणाम होता है?

- (क) समाज मजबूत बनता है।
- (ख) मानवता समाप्त हो जाती है।
- (ग) लोग खुश रहते हैं।
- (घ) विकास होता है।

उत्तर – (ख) मानवता समाप्त हो जाती है।

प्रश्न 7. कविता का मुख्य उद्देश्य क्या है?

- (क) मनोरंजन करना।
- (ख) प्रकृति का वर्णन करना।
- (ग) समाज को जागरूक करना।
- (घ) इतिहास बताना।

उत्तर – (ग) समाज को जागरूक करना।

प्रश्न 8. “सबसे खतरनाक” शीर्षक का क्या अर्थ है?

- (क) बाहरी खतरे सबसे बड़े हैं।
- (ख) आंतरिक कमजोरी सबसे बड़ा खतरा है।
- (ग) युद्ध सबसे बड़ा खतरा है।
- (घ) बीमारी सबसे बड़ा खतरा है।

उत्तर – (ख) आंतरिक कमजोरी सबसे बड़ा खतरा है।

प्रश्न 9. कवि किसके खिलाफ आवाज़ उठाने की प्रेरणा देते हैं?

- (क) प्रकृति के।
- (ख) अन्याय और अत्याचार के।
- (ग) मित्रों के।
- (घ) परिवार के।

उत्तर – (ख) अन्याय और अत्याचार के।

क्षमता-आधारित प्रश्नोत्तर (Competency-Based Q&A)

प्रश्न 1. कवि “सबसे खतरनाक” किसे कहते हैं और क्यों?

उत्तर: कवि के अनुसार सबसे खतरनाक है—डरकर चुप रहना, सपनों का मर जाना और संवेदनहीन हो जाना। क्योंकि ये स्थितियाँ व्यक्ति को अंदर से कमजोर बना देती हैं और समाज में अन्याय को बढ़ावा देती हैं।

प्रश्न 2. कवि ने बाहरी खतरों (जैसे अत्याचार, गरीबी) को सबसे खतरनाक क्यों नहीं माना?

उत्तर: क्योंकि बाहरी खतरे दिखते हैं और उनसे संघर्ष किया जा सकता है, लेकिन आंतरिक कमजोरी (डर, चुप्पी, संवेदनहीनता) अदृश्य होती है और यह व्यक्ति को अंदर से नष्ट कर देती है।

प्रश्न 3 यदि आप अपने आसपास अन्याय होते देखें, तो कविता के संदेश के आधार पर आप क्या करेंगे?

उत्तर: मैं चुप नहीं रहूँगा, बल्कि साहस के साथ अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाऊँगा, दूसरों को जागरूक करूँगा और सही का समर्थन करूँगा।

प्रश्न: 4 “सपनों का मर जाना सबसे खतरनाक है”—इस कथन का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर: यह कथन सही है क्योंकि सपने ही व्यक्ति को आगे बढ़ने और संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं। बिना सपनों के जीवन निरर्थक हो जाता है और व्यक्ति निष्क्रिय बन जाता है।

प्रश्न: 5 कविता के संदेश के आधार पर 2-3 पंक्तियों में अपना विचार लिखिए।

उत्तर (उदाहरण) :

“सबसे बड़ा खतरा बाहर नहीं, भीतर होता है।

जब हम डरकर चुप हो जाते हैं,

तभी अन्याय सबसे ज्यादा मजबूत हो जाता है।”

प्रश्न: 6 बाहरी खतरे और आंतरिक खतरे में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: बाहरी खतरे जैसे अत्याचार और गरीबी दिखाई देते हैं और उनसे लड़ा जा सकता है, जबकि आंतरिक खतरे (डर, संवेदनहीनता) अदृश्य होते हैं और व्यक्ति को भीतर से कमजोर कर देते हैं।

प्रश्न: 7 समाज में संवेदनहीनता बढ़ रही है। कविता के आधार पर इसका समाधान सुझाइए।

उत्तर: लोगों को जागरूक बनाना, सहानुभूति सिखाना, और अन्याय के खिलाफ खड़े होने के लिए प्रेरित करना—ये उपाय संवेदनहीनता को कम कर सकते हैं।

प्रश्न: 8 “डरकर चुप रहना समाज के लिए हानिकारक है”—तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर: जब लोग चुप रहते हैं, तो गलत काम करने वालों का मनोबल बढ़ता है। इससे अन्याय और अत्याचार बढ़ते हैं, इसलिए चुप रहना समाज के लिए नुकसानदायक है।

प्रश्न: 9 इस कविता का आपके जीवन में क्या महत्व है?

उत्तर: यह कविता मुझे सिखाती है कि मुझे साहसी, जागरूक और संवेदनशील बनना चाहिए और किसी भी गलत बात के खिलाफ आवाज़ उठानी चाहिए।

प्रश्न: 10 कविता का संक्षिप्त निष्कर्ष अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: कविता का निष्कर्ष है कि सबसे बड़ा खतरा बाहरी नहीं, बल्कि अंदर की कमजोरी है। इसलिए हमें अपने सपनों, साहस और संवेदनाओं को बनाए रखना चाहिए।

8. आओ मिलकर बचाएँ

पाठ का सारांश

प्रस्तुत कविता 'आओ मिलकर बचाएँ' में कवयित्री 'निर्मला पुतुल जी' ने अपनी संस्कृति, अपने झारखंड के सभ्यता को बचाने का आह्वान किया है। शहरी सभ्यता के कारण झारखंड के लोग अपने निजी संस्कृति को भूलते चले जा रहे हैं। जिस कारण कवयित्री निर्मला पुतुल जी अपने झारखंड को फिर से वापस लाने के लिए, लोगों से आग्रह करती हैं कि लोग शहरी सभ्यता की आड़ में ना पले। झारखंड की संस्कृति में बहुत कुछ व्याप्त है और जब अपनी संस्कृति खूबसूरत हो, तो फिर शहरी संस्कृति को अपनाने की क्या जरूरत है। इन्हीं सब बातों की चर्चा इस संपूर्ण कविता में की गई है। कवयित्री निर्मला पुतुल, इस कविता के माध्यम से अपनी अनोखी संथाली सभ्यता व संस्कृति से हमारा परिचय कराती हैं। वो अपने लोगों से अपने क्षेत्र के प्राकृतिक परिवेश, शुद्ध हवा, पानी, पेड़ पौधों, लोकगीतों व अपनी सभ्यता व संस्कृति को सहेजकर व बचाकर रखने का आग्रह करती हैं। वो संथाली समाज के सकारात्मक व नकारात्मक, दोनों पहलुओं को बड़ी बेबाकी से हमारे सामने रखती हैं। 'आओ, मिलकर बचाएँ' कविता का संथाली भाषा से हिंदी रूपांतरण/ अनुवाद अशोक सिंह जी ने किया है।

प्रश्न 1 - माटी का रंग प्रयोग करते हुए किस बात की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर - कवयित्री ने 'माटी का रंग' प्रयोग करके स्थानीय विशेषताओं को उजागर करना चाहा है। संथाल परगने के लोगों में जुझारूपन, अक्खड़ता, नाच-गान, सरलता आदि विशेषताएँ जमीन से जुड़ी हैं। कवयित्री चाहती है कि आधुनिकता के चक्कर में हम अपनी संस्कृति को हीन न समझे। हमें अपनी पहचान बनाए रखनी चाहिए। इस कविता में कवयित्री क्षेत्रीय संथालों के लोक जीवन की महत्ता को बताती है। वे उनकी स्वाभाविक सम्वेदनाओं को सादगी, मासूमियत, प्रकृति के प्रति लगाव, शहरीकरण के आवरण से दूर रखने की ओर इशारा करती हैं। जिस प्रकार शहरी संस्कृति ने अनेक संस्कृतियों की कब्रों के ऊपर, अपनी इमारत खड़ी की है। वे नहीं चाहती हैं, कि जो वर्तमान में संस्कृति शेष है, वो भी कब्र में बंद हो जाए।

प्रश्न 2 - भाषा में झारखंडीपन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर - झारखंडी' का अभिप्राय है - झारखंड के लोगों की स्वाभाविक बोली। कवयित्री का भाषा में झारखंडीपन से अभिप्राय उन आदिवासी समूह की मातृभाषा से हैं। प्रत्येक आदिवासी समूह की अस्मिता और पहचान का मूल स्रोत, उसकी भाषा होती है। इसी प्रकार संथालियों की भाषा संथाल है। इस भाषा में झारखंड की पहचान झलकती है। उनकी भाषा से यह पता लगता है, कि वे झारखंड के रहने वाले हैं। कवयित्री भाषा के इसी स्थानीय प्रयोग और स्वाभाविक विशेषताओं को नष्ट होने से बचाना चाहती है।

प्रश्न 3 - दिल के भोलेपन के साथ-साथ अक्खड़पन और जुझारूपन को भी बचाने की आवश्यकता पर क्यों बल दिया गया है?

उत्तर - दिल का भोलापन सच्चाई और ईमानदारी के लिए जरूरी है, परंतु हर समय भोलापन ठीक नहीं होता। कवयित्री भोलेपन के साथ अक्खड़पन और जुझारूपन की आवश्यकता से अभिप्राय, अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता, और अपने अधिकार के लिए आवाज़ उठाने से है। भोलेपन का फायदा उठाने वालों के साथ अक्खड़पन दिखाना भी जरूरी है। अपनी बात को मनवाने के लिए अकड़ भी होनी चाहिए। साथ ही कर्म करने की प्रवृत्ति भी आवश्यक है। अतः कवयित्री भोलेपन, अक्खड़पन व जुझारूपन-तीनों गुणों को बचाने की आवश्यकता पर बल देती है।

प्रश्न 4 - प्रस्तुत कविता आदिवासी समाज की किन बुराइयों की ओर संकेत करती है?

उत्तर - कविता में प्रकृति के विनाश एवं विस्थापन के कठिन दौर के साथ-साथ संधाली समाज की अशिक्षा, कुरीतियों और शराब की ओर बढ़ते झुकाव को भी व्यक्त किया गया है जिसमें पूरी-पूरी बस्तियाँ डूबती जा रही हैं। इस कविता में आदिवासी समाज में व्याप्त जड़ता, काम से अरुचि, बाहरी संस्कृति और शहरीकरण का अंधानुकरण, शराबखोरी, अकर्मण्यता, अशिक्षा, अपनी भाषा से अलगाव, परम्पराओं से विद्वेष की भावना आदि बुराइयों का भी जिक्र मिलता है।

प्रश्न 5 - इस दौर में भी बचाने को बहुत कुछ बचा है-से क्या आशय है?

उत्तर - कविता के अनुसार कवयित्री आज के युग की विकास लीला के परिणामस्वरूप, समाज में फैली अस्त-व्यस्तता की ओर संकेत करती हैं। वे कहती हैं, कि आज के युग में मानवीय मूल्यों का हनन और प्राकृतिक संपदाएँ नष्ट हो रही हैं। लेकिन अभी भी बहुत कुछ ऐसा है, जिसकी रक्षा करके उसे सुरक्षित किया जा सकता है। अगर व्यक्ति आदिवासियों की संस्कृतियों के विकास के नाम पर नष्ट करने के बजाए, उसे संजोए तो चीजें सुधार सकती हैं। कवयित्री को आशा है, कि सब ठीक हो सकता है। लोगों का विश्वास, उनकी टूटती उम्मीदों को जीवित करना, सपनों को पूरा करना आदि ऐसे तत्व हैं, जिन्हें सामूहिक प्रयासों से बचाया जा सकता है।

प्रश्न 6 - निम्नलिखित पंक्तियों के काव्य-सौंदर्य को उद्घाटित कीजिए :

(क) ठंडी होती दिनचर्या में,

जीवन की गर्माहट

उत्तर - इस पंक्ति में कवयित्री ने आदिवासी क्षेत्रों में विस्थापन की पीड़ा को व्यक्त किया है। विस्थापन से वहाँ के लोगों की दिनचर्या ठंडी पड़ गई है। हम अपने प्रयासों से उनके जीवन में उत्साह जगा सकते हैं। यह काव्य पंक्ति लाक्षणिक है। इसका अर्थ है-उत्साहहीन जीवन। 'गर्माहट' उमंग, उत्साह और क्रियाशीलता का प्रतीक है। इन प्रतीकों से अर्थ गंभीर्य आया है। शांत रस विद्यमान है। अतुकांत अभिव्यक्ति है।

(ख) थोड़ा-सा विश्वास

थोड़ा-सी उम्मीद

थोड़े-से सपने

आओ, मिलकर बचाएँ।

उत्तर - इस अंश में कवयित्री अपने प्रयासों से लोगों की उम्मीदें, विश्वास व सपनों को जीवित रखना चाहती है। समाज में बढ़ते अविश्वास के कारण व्यक्ति का विकास रुक-सा गया है। वह सभी लोगों से मिलकर प्रयास करने का आह्वान करती है। उसका स्वर आशावादी है। 'थोड़ा-सा'; 'थोड़ी-सी' वे 'थोड़े-से' तीनों प्रयोग एक ही अर्थ के वाहक हैं। अतः अनुप्रास अलंकार है। उर्दू (उम्मीद), संस्कृत (विश्वास) तथा तद्भव (सपने) शब्दों को मिला-जुला प्रयोग किया है। तुक, छंद और संगीत विहीन होते हुए कथ्य में आकर्षण है। खड़ी बोली है।

प्रश्न 7- बस्तियों को शहर की किस आबो-हवा से बचाने की आवश्यकता है?

उत्तर - बस्तियों को शहर की नग्नता व जड़ता से बचाने की जरूरत है। स्वभावगत, वेशभूषा व वनस्पति विहीन नग्नता से बचाने का प्रयास सामूहिक तौर पर हो सकता है। शहरी जिंदगी में उमंग, उत्साह व अपनेपन का अभाव होता है। शहर के लोग अलगाव भरी जिंदगी व्यतीत करते हैं। कविता में कवयित्री बस्तियों को शहर की आबों हवा से बचाने की बात करती है, उनके यह कहने का अर्थ है, कि जिस शहरी परिवेश को ग्रामीण जीवन के लिए आदर्श समझा जाता है। वह न केवल संस्कृतियों के घातक है, बल्कि मानवीय पतन की अध्यक्षा कर रहा है। वे शहर में पर्यावरण व्यवहार से परेशान हैं, एकांकी जीवन, अलगाव, और व्यस्तता आदि समस्याओं से बस्तियों को बचाना चाहती हैं।

प्रश्न 8. 'अक्खड़पन' से कवयित्री क्या संदेश देना चाहती हैं?

उत्तर - 'अक्खड़पन' अर्थात् बोली में सफ़ाई एवं सटीकता का प्रमाण होना। कवयित्री इस गुण को आदिवासियों की बोली में बताती है अर्थात् आदिवासियों के मन में कोई छल, कपट नहीं होता, वे साफ़ एवं सीधी बात करते हैं। कवयित्री इस गुण को शहरी वातावरण के प्रभाव से बचाना चाहती हैं।

प्रश्न 9. कवयित्री ऐसा क्यों कहती है कि " बस्तियों को शहर से रक्षा करने की आवश्यकता है"?

उत्तर - बढ़ती जनसंख्या और शहरी विकास धीरे धीरे बस्तियों के भोलेपन, भावनात्मकता, सादगी, खुले आँगन, शीतल हवा, सुखद वातावरण को ढकती जा रही है। कवयित्री इस ढकाव से बस्तियों को बचाना चाहती हैं। शहर में प्रदूषण भी एक अहम समस्या है जो बस्तियों में न के बराबर है साथ ही साथ कटते हुए जंगल आदिवासियों के स्थायी निवास छीन रहे हैं जिससे शहरों के वातावरण की और जाते हुए बस्ती के लोग अपने संस्कारों, भोलेपन, भावनात्मकता, सादगी जैसे गुणों को भूलते जा रहे हैं। कवयित्री इन सभी से बस्तियों की रक्षा करना चाहती हैं।

प्रश्न 10. शहरी प्रभाव के कारण प्राकृतिक वातावरण में क्या परिवर्तन हो रहे हैं?

उत्तर – शहरी प्रभाव के कारण संधाल बस्तियों में विस्थापन की समस्या आ रही है। जंगल की ताज़ी हवा , नदियों का स्वच्छ जल , पहाड़ों की मौन शांति , मिट्टी की सुगंध , फ़सलों की लहलहाहट , खुले आँगन , मैदान और चरागाह समाप्त होते जा रहे हैं। इससे बच्चे , बूढ़े और पशु सभी के लिए अभावग्रस्त स्थिति पैदा हो गई है।

વિતાન ભાગ 1

પૂરક પુસ્તક

અભ્યાસ

लता मंगेशकर

लेखकपाठ परिचय

यह पाठ भारत की सुप्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर के जीवन, संघर्ष, साधना और उपलब्धियों पर आधारित है। इसमें बताया गया है कि किस प्रकार उन्होंने अपनी मेहनत, लगन और संगीत के प्रति समर्पण से अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की।

पाठ का उद्देश्य

छात्रों को प्रेरणा देना कि निरंतर अभ्यास और समर्पण से सफलता प्राप्त होती है। संगीत और कला के महत्त्व को समझाना। महान व्यक्तित्वों के जीवन से सीख लेना। मुख्य बिंदु प्रारंभिक जीवन लता मंगेशकर का जन्म :1929 में हुआ। उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे।

संघर्ष: कम उम्र में ही पिता के निधन के बाद परिवार की जिम्मेदारी उठानी पड़ी। संगीत यात्रा : उन्होंने हजारों गीत गाए और हिंदी सहित कई भाषाओं में अपनी आवाज़ दी। सफलताउनकी : मधुर आवाज़ ने उन्हें “भारत की कोकिला” बना दिया। सम्मानउन्हें भारत का सर्वोच्च नागरिक : सम्मान भारत रत्नभी मिला।

लता मंगेशकर के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

- कठोर परिश्रम और अनुशासन
- सरलता और विनम्रता संगीत के प्रति पूर्ण समर्पण
- लगातार सीखने की प्रवृत्ति

निष्कर्ष

यह पाठ हमें सिखाता है कि कठिनाइयाँ सफलता के मार्ग में बाधा नहीं बनतीं, यदि हमारे अंदर दृढ़ निश्चय और मेहनत करने की इच्छा हो। लता मंगेशकर का जीवन विद्यार्थियों के लिए एक आदर्श उदाहरण है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. चित्रपट संगीत की लोकप्रियता का क्या कारण है ?

उत्तर:-शास्त्र-शुद्धता के कर्मकांड को संगीत के राष्ट्रीय गायकों ने आवश्यकता से अधिक महत्त्व दे रखा था, किन्तु चित्रपट संगीत ने संगीत को जनसाधारण के बीच पहुँचा दिया। लोगों को केवल शास्त्र-शुद्ध और नीरस गाना नहीं चाहिए, बल्कि ऐसा संगीत चाहिए, जो सुनने में मधुर लगे, सुरीला व भावपूर्ण लगे और ऐसा संगीत चित्रपट संगीत से ही मिलाता है। चित्रपट संगीत की लचकदारी ने इसे लोकप्रिय बना दिया। इस संगीत की मान्यता, मर्यादा तथा संगीत-तंत्र सब कुछ निराला है। जिसने लोगों के दिल पर अपनी छाप छोड़ी है। इस संगीत के माध्यम से लोग अपने देश की संस्कृति से भी परिचित हो रहे हैं। चित्रपट संगीत को अधिक लोकप्रिय बनाने का सर्वाधिक श्रेय लता मंगेशकर को जाता है। लता मंगेशकर के स्वरों की निर्मलता, कोमलता, लोच सुरीलेपन आदि ने लोगों को गुनगुनाने पर मजबूर कर दिया है। लता के गाने देश में ही नहीं विदेशों में भी लोकप्रिय हैं।

प्रश्न 2:-आप शास्त्रीय संगीत पसंद करते हैं या चित्रपट संगीत ? अपने विचार लिखिए.

उत्तर:-संगीत हमारे जीवन को बहुत गहराई से प्रभावित करता है। संगीत में मानव मन को शान्ति और सकून पहुँचाने की क्षमता है। इससे आनंद की सुखद अनुभूति होती है। यह हमें स्वर्गिक सुख का आनंद प्रदान करता है। जीवन में निराशा को दूर करता है। तथा उसे उमंग से भर देता है। दोनों संगीत अपनी-अपनी विशिष्टताओं के कारण कला के क्षेत्र में अपना महत्त्व रखते हैं। परन्तु मैं चित्रपट संगीत अधिक पसंद करता हूँ। इसका कारण यह है कि शास्त्रीय संगीत शास्त्र-शुद्ध सुर नीरस लगता है। इसमें अधिक मधुरता नहीं होती और यह संगीत की व्यवस्थित जानकारी के बिना समझ से परे होता है, जबकि दूसरी ओर चित्रपट संगीत अधिक सुरीला और भावपूर्ण होता है। अतः कर्णप्रिय लगता है और इसका आनंद उठाने के लिए किसी व्यवस्थित जानकारी की भी आवश्यकता नहीं होती है।

प्रश्न 3. लता मंगेशकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:लता मंगेशकर भारतीय संगीत जगत की एक अनुपम गायिका थीं, जिनकी मधुर, कोमल और भावपूर्ण आवाज़ ने उन्हें विश्वभर में प्रसिद्धि दिलाई। उनका जन्म 1929 में इंदौर में हुआ। उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर स्वयं एक संगीतज्ञ थे, जिनसे लता जी ने संगीत की प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। लता जी ने अत्यंत कम उम्र में ही पारिवारिक जिम्मेदारियाँ संभालते हुए गायन शुरू किया। उन्होंने हिंदी के अलावा मराठी, बंगाली, गुजराती, तमिल आदि कई भाषाओं में हजारों गीत गाए। उनकी गायकी में शुद्धता, भावनात्मक गहराई और स्पष्ट उच्चारण प्रमुख विशेषताएँ थीं। उनकी उपलब्धियों में पद्म भूषण, पद्म विभूषण और भारत रत्न जैसे सर्वोच्च सम्मान शामिल हैं। वे भारतीय संगीत की पहचान बन चुकी हैं।

प्रश्न 4. लेखक ने लता मंगेशकर को “भारतीय गायिकाओं में बेजोड़” क्यों कहा है?

उत्तर: लेखक ने लता मंगेशकर को “बेजोड़” इसलिए कहा है क्योंकि उनकी गायकी में अद्वितीय गुणों का समावेश है। उनकी आवाज़ में स्वाभाविक मिठास, लय की सटीकता, और भावों की अभिव्यक्ति इतनी प्रभावशाली है कि श्रोता सीधे गीत से जुड़ जाते हैं। उनकी विशेषता यह भी है कि वे हर प्रकार के गीत—भक्ति, देशभक्ति, प्रेम, शास्त्रीय—को समान कुशलता से गा सकती थीं। उनकी आवाज़ में न तो कृत्रिमता है और न ही बनावट। इसके अतिरिक्त, उन्होंने दशकों तक संगीत जगत में अपनी श्रेष्ठता बनाए रखी, जो उन्हें अन्य गायिकाओं से अलग बनाता है।

प्रश्न 5. लता मंगेशकर की गायकी की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर: लता मंगेशकर की गायकी की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

स्वर की मधुरता: उनकी आवाज़ अत्यंत मीठी और कोमल थी।

भावाभिव्यक्ति: वे गीत के भावों को पूरी गहराई से प्रस्तुत करती थीं।

शुद्ध उच्चारण: उनके द्वारा गाए गए शब्द स्पष्ट और शुद्ध होते थे।

लय और ताल की समझ: उन्हें संगीत के तकनीकी पक्षों का गहरा ज्ञान था।

बहुभाषिकता: उन्होंने अनेक भाषाओं में समान दक्षता से गायन किया। इन सभी गुणों के कारण उनकी गायकी अद्वितीय मानी जाती है।

प्रश्न 6. लता मंगेशकर के संघर्षमय जीवन का वर्णन कीजिए।

उत्तर: लता मंगेशकर का जीवन प्रारंभ से ही संघर्षपूर्ण रहा। उनके पिता की मृत्यु के बाद परिवार की जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ गई। आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी और संगीत को ही अपना आधार बनाया।

शुरुआत में उन्हें फिल्म उद्योग में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जैसे—उच्चारण पर आलोचना, अवसरों की कमी आदि। लेकिन उन्होंने लगातार अभ्यास और आत्मविश्वास के बल पर अपनी पहचान बनाई।

उनकी मेहनत, लगन और संघर्ष ने उन्हें सफलता के शिखर तक पहुँचाया।

प्रश्न 7. लता मंगेशकर का भारतीय संगीत पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर: लता मंगेशकर का भारतीय संगीत पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा है। उन्होंने फिल्म संगीत को एक नई ऊँचाई दी और गायन को एक सम्मानजनक कला के रूप में स्थापित किया।

उनकी शैली ने आने वाली पीढ़ियों के गायकों को प्रेरित किया। उनकी आवाज़ भारतीय संस्कृति और भावनाओं की प्रतिनिधि बन गई। आज भी उनके गीत लोगों के दिलों में बसे हुए हैं और भारतीय संगीत की पहचान माने जाते हैं।

प्रश्न 8. लेखक के अनुसार लता मंगेशकर की लोकप्रियता के कारण क्या हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार लता मंगेशकर की लोकप्रियता के मुख्य कारण उनकी स्वाभाविक प्रतिभा, कठोर साधना, और संगीत के प्रति समर्पण हैं।

उनकी आवाज़ में ऐसी मधुरता और आत्मीयता है जो हर वर्ग के लोगों को आकर्षित करती है। वे समय के साथ स्वयं को ढालने में सक्षम थीं, जिससे उनकी लोकप्रियता लगातार बनी रही।

इसके अलावा, उनका सादगीपूर्ण जीवन और विनम्र स्वभाव भी लोगों को उनकी ओर आकर्षित करता है।

राजस्थान की रजत बूँदें (अनुपम मिश्र)

पाठ का सारांश- प्रस्तुत पाठ 'राजस्थान की रजत बूँदें' प्रसिद्ध पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र द्वारा राजस्थान में पानी की समस्या के निदान के अनुपम ढंग पर लिखा है। पाठ में लेखक ने राजस्थान के मरुस्थल में पाई जाने वाली कुँई जिसका उपयोग बरसात के पानी के संग्रहण के लिए किया जाता है ; की निर्माण प्रक्रिया की कठिनाई को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया है। यह रचना जल समस्या का समाधान मात्र ही प्रस्तुत नहीं करती बल्कि यह जमीन की अतल गहराइयों में जीवन की पहचान भी कराती है। यह रचना हमें धीरे-धीरे भाषा की ऐसी दुनिया में ले जाती है जहाँ पानी की हर आहट की कलात्मक अभिव्यक्ति है।

राजस्थान में पानी तीन रूपों में पाया जाता है –

1. पालर पानी – सीधे बरसात से मिलने वाला पानी जो जलाशयों में एकत्रित होता है।
2. पाताल पानी – जो भू जल के रूप में कुँएँ या ट्यूबवेल से निकाला जाता है।
3. रेजाणी पानी अर्थात् धरातल से नीचे उतरा परन्तु पाताल में न मिलने वाला पानी जिसे विशिष्ट ढंग से कुँई अपने में समेट लेती है। यही पानी पीने योग्य पानी होता है और इसी हेतु लगभग हर घर में एक कुँई मिल जाती है जो निजी सम्पत्ति होते हुए भी ग्राम पंचायत के नियंत्रण में रहती है। इनका निर्माण चेजारों द्वारा किया जाता है। एक पल की चूक उनके प्राण के लिए घातक हो जाती है। समाज में पहले इनका एक विशिष्ट स्थान था। शादी-विवाहों आदि मांगलिक अवसरों में उन्हें नेग और भेंट देने की परम्परा रही है। फसल आने पर खलिहान में उनके नाम पर अनाज का एक अलग ढेर भी लगता था लेकिन अब यह परम्परा धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न1 :- राजस्थान में कुँई किसे कहते हैं? इसकी गहराई और व्यास तथा सामान्य कुओं की गहराई और व्यास में क्या अंतर होता है?

उत्तर:-राजस्थान में रेत की नमी को पानी के रूप में बदलने के लिए कुँई का निर्माण किया जाता है। चार-पाँच हाथ के व्यास की जगह को तीस से साठ हाथ की गहराई तक खोदा जाता है। खुदाई की जगह को साथ-साथ ईंट, चूने के द्वारा पक्का कर दिया जाता है। नीचे गहराई में पानी के लिए धार लगा दी जाती है। इसी तंग गहरी जगह को कुँई कहा जाता है।

कुआँ और कुँई की गहराई तो समान होती है। मगर व्यास में दोनों असमान होते हैं। जहाँ साधारण कुँएँ का व्यास पन्द्रह से बीस हाथ होता है वहीं कुँई का व्यास चार या पाँच हाथ होता है।

प्रश्न2:- कुँई निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन विस्तार से कीजिए।

उ.- मरुभूमि में कुँई निर्माण का कार्य चेलवांजी यानी चेजारो करते हैं। वे खुदाई व विशेष तरह की चिनाई करने में दक्षतम हैं। कुँई बनाना एक विशिष्ट कला है। चार-पाँच हाथ के व्यास की कुँई को तीस से साठ-पैंसठ हाथ तक की गहराई तक खोदने वाले चेजारो अत्यन्त कुशलता व सावधानी पूर्वक यह कार्य सम्पन्न करते हैं। चिनाई में थोड़ी सी भी चूक चेजारो के प्राण ले सकती है। हर दिन थोड़ी-थोड़ी खुदाई होती है।

डोल से मलवा निकाला जाता है और फिर अब तक खुद चुकी गहराई की चिनाई की जाती है। ताकि मिट्टी धँसे नहीं। बीस-पच्चीस हाथ की गहराई तक जाते-जाते गर्मी काफी बढ़ जाती है और हवा भी कम होने लगती है। इससे चेजारो की कार्यक्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। तब ऊपर से मुट्ठी भर रेत तेजी से नीचे फेंकी जाती है, ताकि ताजी हवा नीचे जा सके और गर्म हवा बाहर आ सके। चेजारो सिर पर कांसे, पीतल या किसी अन्य धातु का एक बर्तन टोप की तरह पहनते हैं ताकि ऊपर से रेत, कंकड़-पत्थर से उनका बचाव हो सके। किसी-किसी स्थान पर ईंट की चिनाई से मिट्टी नहीं रुकती तब कुंई को रस्से से बाँधा जाता है। ऐसे स्थानों पर कुंई खोदने के पूर्व ही खींप नामक घास का ढेर लगाया जाता है। खुदाई शुरू होते ही तीन अंगुल मोटा रस्सा बनाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया जाता है। एक दिन की खुदाई पूरी होने पर इसके तल पर दीवाल के साथ सटाकर रस्से का एक के ऊपर एक गोला बिछाया जाता है और रस्से का आखिरी छोर ऊपर रहता है। अगले दिन फिर कुछ हाथ मिट्टी खोदी जाती है और रस्से की पहले दिन जमाई गई कुंडली दूसरे दिन खोदी गई जगह में सरका दी जाती है। बीच-बीच में जरूरत होने पर ईंट से भी चिनाई की जाती है। जिन स्थानों पर पत्थर और खींप नहीं मिलता वहाँ लकड़ी के लंबे लट्ठों से चिनाई की जाती है। ये लट्ठे, अरणी, बण, बावल या कुंबट के पेड़ों से बनाए जाते हैं। इनके उपलब्ध न होने पर आक तक से भी काम लिया जाता है। खडिया पत्थर की पट्टी आते ही खुदाई का काम रुक जाता है और नीचे बूँद-बूँद करके पानी की धार लग जाती है। यह समय कुंई की सफलता स्वरूप उत्सव का अवसर बन जाता है।

प्रश्न3 :- एक कुंई की चिनाई में लगभग कितना रस्सा लग जाता है ?

उत्तर. - पाँच हाथ व्यास वाली कुंई में रस्से की एक कुंडली का घेरा बनाने में ही लगभग पन्द्रह हाथ रस्सा लग जाता है। एक हाथ की गहराई तक की चिनाई में रस्से के आठ-दस लपेटे लग जाते हैं। यदि कुंई की गहराई तीस हाथ भी मान लें तो उसकी चिनाई में लगभग चार हजार हाथ लंबा रस्सा लगेगा।

प्रश्न4 :- कुंई की खुदाई में काम आने वाले औजार व चिनाई के काम में आने वाली सामग्री का विवरण दीजिए।

उ.- कुंई की खुदाई, व्यास कम होने के कारण फावड़े या कुदाल से नहीं की जाती; उसके लिए 'बसौली' का प्रयोग किया जाता है। यह छोटे हथ्ये वाला फावड़े के आकार जैसा औजार होता है। कुंई की चिनाई के लिए 'खींप' नामक घास से बने, लगभग तीन अंगुल मोटे रस्से-का प्रयोग होता है। जहाँ खींप घास उपलब्ध नहीं होती, वहाँ चिनाई के लिए अरणी, बण(कैर), बावल या कुंबट के पेड़ों की लकड़ी से बने लट्ठों का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न5 :- कुंई का मुँह छोटा क्यों रखा जाता है ?

उ. - कुंई का मुँह छोटा रखने के पीछे तीन प्रमुख कारण हैं -

1. दिनभर में एक कुंई में मुश्किल से दो तीन घड़ा पानी ही एकत्रित हो पाता है। बड़ा व्यास होने पर पानी की गहराई कम हो जाएगी, जिससे उसे निकालना सम्भव नहीं होगा।
2. मुँह चौड़ा होने पर गर्मी से पानी वाष्प बनकर उड़ जाएगा।
3. पानी को साफ रखने व चोरी से बचाने के लिए कुंई को ढँकना जरूरी है, जो सँकरा मुँह होने पर ही संभव है।

प्रश्न 6 - रेगिस्तान की भीषण गर्मी में भी रेत में समय रेजाणी पानी भाप बनकर क्यों नहीं उड़ पाता ?
उ. - मिट्टी के कणों के विपरीत रेत के कण बारीक होते हैं। वे एक दूसरे से चिपकते नहीं अतः मिट्टी की तरह रेत में दरारें नहीं पड़तीं। इस कारण नमी भाप बनकर उड़ नहीं पाती व कुंडियों के माध्यम से शुद्ध मीठे जल के रूप में प्राप्त होती है।

प्रश्न 7 :- भूमि के अंदर भीषण गर्मी में चेजारो के लिए ताजी हवा का प्रबंध कैसे किया जाता है?
उत्तर:- बाहर खड़े लोग थोड़े-थोड़े समय पर मुट्ठी भर रेत को भुत तेज गति से नीचे फेंकते हैं। इससे रेत के भार साथ ऊपर की ताजा हवा नीचे चली जाती है। इस हवा के जोर से नीचे की गर्म हवा बाहर निकलती है। इस ताजा हवा दबाव कुंड के अंदर कामकर रहे चेलवांजी को राहत का अहसास करवाता है।

प्रश्न 8:- चेजारों के साथ समाज के व्यवहार में पहले की तुलना में आज क्या फर्क आया है ? पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर :- चेजारो कुई की चिनाई का काम करते हैं। जरा सी चूक उनके प्राण ले सकती है। पहले चेजारो का विशेष ध्यान रखने की परंपरा थी कुई का काम पूरा होने के बाद विदाई के समय भेंटें एवं उपहार दिए जाते थे। फसल आने पर खलिहान में अनाज का एक ढेर उनके लिए रखा जाता था। अब उन्हें केवल मजदूरी देकर विदा किया जाता है।

प्रश्न 9:- पालरपानी, पातालपानी तथा रेजाणीपानी के बारे में आप क्या जानते हैं?

पालरपानी- बरसात से सीधे मिलने वाला पानी। यह पानी नदियों, तालाबों, बड़े-बड़े गड्ढों में रूक जाता है। खुले में होने के कारण यह पानी जल्दी गंदा होता है। अधिकांश पानी वाष्प बनकर उड़ जाता है। बहुत सारा पानी जमीन के अंदर चला जाता है।

पातालपानी - जो पानी जमीन के अंदर जाकर भू-जल में मिल जाता है उसे पाताल पानी कहते हैं। इस पानी को कुओं, पम्पों तथा ट्यूबवेल द्वारा निकाला जाता है।

रेजाणीपानी -पालरपानी और पातालपानी के बीच का पानी रेजाणी पानी कहलाता है।

धरातल से नीचे जाकर पातालपानी में न मिलकर बीच में ही नमी के रूप में रह जाने वाला पानी रेजाणीपानी कहलाता है। इस पानी को कुंडियों के माध्यम से इकट्ठा किया जाता है।

प्रश्न 10 :- दिनोंदिन बढ़ती पानी की समस्या से निपटने में यह पाठ आपकी कैसे मदद कर सकता है तथा देश के अन्य राज्यों में इसके लिए क्या उपाय हो रहे हैं ? जानें और लिखें।

उत्तर :-प्रतिदिन बढ़तीपानी की समस्या से आने वाले दिनों में भयावह स्थिति का आभास होता है। भूजल स्तर निरंतर गिर रहा है। पर्यावरण में हो रहे परिवर्तनों के कारण मौसम पर प्रतिकूल असर पड़ा है। इस पाठ से हमें पानी के सही स्रोत व उसके उपयोग की जानकारी मिलती है। घरों की छतों पर पानी को इकट्ठा करके उपयोग में लाया जा सकता है। देश के कई राज्यों में यह प्रयोग सफलतापूर्वक किया जा रहा है। वर्षा से इकट्ठा किया गया जल वर्ष भर काम में लाया जा सकता है। भूजल का स्तर भी सुरक्षित रहता है। दक्षिण भारत में बड़े- बड़े पथरीले जलाशय बना कर उनमें पानी का संग्रह किया जाता है। बड़े मुँह वाले स्थान पर पानी एकत्र करने से एक तो पानी दूषित होता है दूसरे भाप बन कर उड़ भी जाता है कुई बनाने की तकनीक का प्रयोग गर्म इलाकों में संकरे मुँह वाले संग्रह स्थान पर जल को सुरक्षित करने के काम आ सकता है।

प्रश्न 11 : यदि आपको राजस्थान जैसे मरुस्थलीय क्षेत्र में जल संरक्षण का अभियान चलाना हो, तो आप किन उपायों को अपनाएँगे? पाठ के संदर्भ में विस्तार से लिखिए।

उत्तर: राजस्थान की भौगोलिक परिस्थितियाँ जल-संकट को जन्म देती हैं, इसलिए वहाँ पारंपरिक जल-संरक्षण विधियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। मैं अभियान में तालाब, बावड़ी, जोहड़ जैसी पारंपरिक प्रणालियों को पुनर्जीवित करने पर जोर दूँगा।

इसके साथ ही वर्षा जल संचयन (Rainwater Harvesting) को प्रत्येक घर और विद्यालय में अनिवार्य बनाने का प्रयास करूँगा। जन-जागरूकता के लिए रैलियाँ, नाटक और पोस्टर प्रतियोगिताएँ आयोजित करूँगा।

पाठ हमें सिखाता है कि छोटी-छोटी बूँदें मिलकर जीवन का आधार बनती हैं, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी आवश्यक है।

प्रश्न 12 : “राजस्थान की रजत बूँदें” में वर्णित पारंपरिक जल-संरक्षण पद्धतियाँ आज के आधुनिक समय में कितनी प्रासंगिक हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर: यह पद्धतियाँ आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं क्योंकि आधुनिक तकनीक के बावजूद जल संकट बढ़ता जा रहा है।

पारंपरिक तरीके स्थानीय पर्यावरण के अनुकूल, कम लागत वाले और टिकाऊ होते हैं। उदाहरण के लिए बावड़ी और जोहड़ वर्षा जल को लंबे समय तक संरक्षित रखते हैं।

हालाँकि, शहरीकरण और उपेक्षा के कारण इनका उपयोग कम हो गया है, परंतु यदि इन्हें आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ा जाए, तो यह जल संकट का स्थायी समाधान बन सकते हैं।

इसलिए इनका संरक्षण और पुनर्जीवन अत्यंत आवश्यक है।

प्रश्न 13: पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि जल संरक्षण केवल पर्यावरणीय मुद्दा नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक उत्तरदायित्व भी है।

उत्तर: “राजस्थान की रजत बूँदें” यह दर्शाता है कि जल केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति का अभिन्न अंग है।

राजस्थान में जल स्रोतों के निर्माण और संरक्षण में सामूहिक भागीदारी होती थी, जिससे सामाजिक एकता बढ़ती थी।

जल के प्रति सम्मान, धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं में भी दिखाई देता है।

इस प्रकार जल संरक्षण पर्यावरणीय आवश्यकता के साथ-साथ सामाजिक कर्तव्य और सांस्कृतिक परंपरा भी है।

प्रश्न 14: राजस्थान की जल-संरक्षण प्रणाली हमें सतत विकास (Sustainable Development) का क्या संदेश देती है? विस्तार से समझाइए।

उत्तर: राजस्थान की जल-संरक्षण प्रणाली सतत विकास का उत्कृष्ट उदाहरण है।

यह प्रणाली प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस प्रकार करती है कि भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताएँ भी प्रभावित न हों।

पारंपरिक जल स्रोत जैसे तालाब, बावड़ी और कुंड वर्षा जल को संरक्षित करके जल चक्र को संतुलित रखते हैं।

यह प्रणाली हमें सिखाती है कि संसाधनों का उपयोग संयम और समझदारी से करना चाहिए।

आज के समय में जब जल संकट गंभीर हो रहा है, तब यह पद्धतियाँ हमें पर्यावरण संतुलन और दीर्घकालिक विकास का मार्ग दिखाती हैं।

प्रश्न 15: लेखक ने 'रजत बूँदें' शब्द का प्रयोग क्यों किया है? इसके प्रतीकात्मक अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 'रजत बूँदें' शब्द अत्यंत प्रभावशाली और प्रतीकात्मक है।

यह पानी की बूँदों को चाँदी (रजत) के समान मूल्यवान दर्शाता है।

मरुस्थल में जल का महत्त्व सोने-चाँदी से भी अधिक होता है, इसलिए लेखक ने इसे 'रजत बूँदें' कहा है।

यह प्रतीक हमें जल के महत्व को समझने और उसे बचाने के लिए प्रेरित करता है।

आलो - आँधारि (बेबी हालदार)

जीवन-परिचय

लेखिका बेबी हालदार का जन्म जम्मू कश्मीर के किसी स्थान पर हुआ, जहाँ सेना की नौकरी में उनके पिता तैनात थे। इनका जन्म संभवतया 1974 ई. में हुआ। परिवार की आर्थिक दशा कमज़ोर होने के कारण तेरह वर्ष की आयु में इनका विवाह दोगुनी उम्र के व्यक्ति से कर दिया गया। इस कारण उन्हें सातवीं कक्षा में पढ़ाई छोड़नी पड़ी। 12-13 वर्षों के बाद पति की ज्यादातियों से परेशान होकर वे तीन बच्चों सहित पति का घर छोड़कर दुर्गापुर से फ़रीदाबाद आ गईं। कुछ समय बाद वे गुड़गाँव चली आयी और घरेलू नौकरानी के रूप में काम कर रही हैं। इनकी एकमात्र रचना है आलो-। यह मूल रूप में बांग्ला भाषा में लिखी गई तथा बाद में इसका हिंदी अनुवाद किया गया।

पाठ का सारांश

आलो-आँधारि लेखिका की आत्मकथा है। यह उन करोड़ों झुगियों की कहानी है जिसमें झाँकना भी भद्रता के तक्राजे से बाहर है। यह साहित्य के उन पहरों के लिए चुनौती है जो साहित्य को साँचे में देखने के आदी हैं, जो समाज के कोने अंतरे में पनपते साहित्य को हाशिये पर रखते हैं और भाषा एवं साहित्य को भी एक ख़ास वर्ग की जागीर मानते हैं।

लेखिका अपने पति से अलग किराए के मकान में अपने तीन छोटे बच्चों के साथ रहती थी। उसे हर समय काम की तलाश रहती थी। वह सभी को उसके लिए काम ढूँढने के लिए कहती थी। शाम को जब घर वापस आती है तो पड़ोस की औरतें काम के बारे में पूछतीं। काम न मिलने पर वे उसे सांत्वना देती थीं। लेखिका की पहचान सुनील नामक युवक से थी। एक दिन उसने किसी मकान मालिक से लेखिका को मिलवाया। मकान मालिक ने आठ सौ रुपये महीने पर उसे रख लिया और घर की सफ़ाई व खाना बनाने का काम दिया। उसने पहले काम कर रही महिला को हटा दिया। उस महिला ने लेखिका से भला - बुरा कहा। लेखिका उस घर में रोज़ सवेरे आती तथा दोपहर तक का सारा काम ख़त्म कर चली जाती। घर जाकर बच्चों को नहलाती व खिलाती। उसे बच्चों के भविष्य की चिंता थी।

जिस मकान में वह रहती थी, उसका किराया अधिक था। उसने कम सुविधाओं वाला नया मकान ले लिया। यहाँ के लोग उसके अकेले रहने पर तरह-तरह की बातें बनाते थे। घर का खर्च चलाने के लिए वह और काम चाहती थी। वह मकान मालिक से काम की नई जगह ढूँढने को कहती है। उसे बच्चों की पढ़ाई, घर के किराये व लोगों की बातों की चिंता थी। मालिक सज्जन थे। एक दिन उन्होंने लेखिका से पूछा कि वह घर जाकर क्या-क्या करती हैं। लेखिका की बात सुनकर उन्हें आश्चर्य हुआ। उन्होंने स्वयं को तातुश कहकर पुकारने को कहा। वे उसे बेबी कहते थे तथा अपनी बेटी की तरह मानते थे। उनका सारा परिवार लेखिका का ख़्याल रखता था। वह पुस्तकों की अलमारियों की सफ़ाई करते समय पुस्तकों को उत्सुकता से देखने लगती। यह देखकर तातुश ने उस एक किताब पढ़ने के लिए दी। तातुश ने उसे लेखकों के बारे में पूछा तो उसने कई बांग्ला लेखकों के नाम बता दिए। एक दिन तातुश ने उसे कॉपी व पेन दिया और कहा कि समय निकालकर वह कुछ ज़रूर लिखें। काम की अधिकता के कारण लिखना बहुत मुश्किल था, परंतु तातुश के प्रोत्साहन से वह रोज़ कुछ पृष्ठ लिखने लगी। यह शौक आदत में बदल गया। उसका अकेले रहना समाज में कुछ लोगों को सहन नहीं हो रहा था। वे उसके साथ छेड़खानी करते थे

और बेमतलब परेशान करते थे। बाथरूम नहोने से भी विशेष दिक्कत थी। मकान मालिक के लड़के के दुर्व्यवहार की वजह से वह नया घर तलाशने की सोचने लगी।

एक लेखिका काम से घर लौटी तो देखा मकान टूटा हुआ है तथा उसका सारा सामान खुले में बाहर पड़ा हुआ है। वह रोने लगी। इतनी जल्दी मकान ढूँढने की भी दिक्कत थी। दूसरे घरों के लोग अपना सामान इकट्ठा करके नए घर की तलाश में चले गए। वह सारी रात बच्चों के साथ खुले आसमान के नीचे बैठी रही। उसे दुख था कि दो भाई नज़दीक रहने के बावजूद उसकी सहायता नहीं करते। तातुश को बेबी का घर टूटने का पता चला तो उन्होंने अपने घर में कमरा दे दिया। इस प्रकार वह तातुश के घर में रहने लगी। उसके बच्चों को ठीक खाना मिलने लगा। तातुश उसका बहुत ख्याल रखते।

बच्चों के बीमार होने पर वे उनकी दवा का प्रबंध करती। उनके सद्भावहार को देखकर बेबी हैरान थी। उसका बड़ा लड़का किसी के घर काम करता था। वह उदास रहती थी। तातुश ने उसके लड़के को खोजा तथा उसे बेबी से मिलवाया। उस लड़के को दूसरी जगह काम दिलवाया। लेखिका सोचती कि तातुश पिछले जन्म में उसके बाबा रहे होंगे। तातुश उसे लिखने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने अपने कई मित्रों के पास बेबी के लेखन के कुछ अंश भेज दिए थे। उन्हें यह लेखन पसंद आया और वे भी लेखिका का उत्साह बढ़ाते रहे। तातुश के छोटे लड़के अर्जुन के दो मित्र वहाँ आकर रहने लगे, परंतु उनके अच्छे व्यवहार से लेखिका बड़े काम को खुशी-खुशी करने लगी। तातुश ने सोचा कि सारा दिन काम करने के बाद बेबी थक जाती होगी। उसने उसे रोज़ाना शाम के समय पार्क में बच्चों को घुमा लाने को कहा इससे बच्चों का दिल बहल जाएगा। अब वह पार्क में जाने लगी।

पार्क में नए-नए लोगों से मुलाकात होती। उसकी पहचान बंगाली लड़की से हुई जो जल्द ही वापस चली गई। लोगों के दुर्व्यवहार के कारण उसने पार्क में जाना छोड़ दिया। लेखिका को किताब, अखबार पढ़ने व लेखन कार्य में आनंद आने लगा। तातुश के ज़ोर देने पर वह अपने जीवन की घटनाएँ लिखने लगी। तातुश के दोस्त उसका उत्साह बढ़ाते रहे। एक मित्र ने उसे आशापूर्णा देवी का उदाहरण दिया। इससे लेखिका का हौसला बढ़ा और उसने उन्हें जेटू कहकर संबोधित किया। एक दिन लेखिका के पिता उससे मिलने पहुँचे। उसकी माँ के निधन के बारे में बताया। लेखिका के भाइयों को पता था, परंतु उन्होंने उसे बताया नहीं। लेखिका काफ़ी देर तक माँ को याद कर रोती रही। बाबा ने बच्चों से माँ का ख्याल रखने के लिए समझाया। लेखिका पत्रों के माध्यम से कोलकाता और दिल्ली के मित्रों से संपर्क रखने लगी। उसे हैरानी थी कि लोग उसके लेखक को पसंद करते हैं। शर्मिला उससे तरह तरह की बातें करती थी। लेखिका सोचती कि अगर तातुश उसे न मिलते तो यह जीवन कहाँ मिलता। लेखिका का जीवन तातुश के घर में आकर बदल गया। उसका बड़ा लड़का काम पर लगा था। दोनों छोटे बच्चे स्कूल में पढ़ रहे थे। वह स्वयं लेखिका बन गई थी। पहले वह सोचती है कि अपनों से बिछड़ कर कैसे जी पाएगी, परंतु अब उसने जीना सीख लिया था। वह तातुश से शब्दों के अर्थ पूछने लगी थी। तातुश के जीवन में भी खुशी आ गई थी। अंत में वह दिन भी आ गया जब लेखिका की लेखन कला को पत्रिका में जगह मिली। पत्रिका में उसकी रचना का शीर्षक था—“आलो-आँधारि ” बेबी हालदार। लेखिका अत्यंत प्रसन्न थी। तातुश के प्रति उसका मन कृतज्ञता से भर आया। उसने तातुश के पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त किया।

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'आलो आँधारि' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 'आलो' शीर्षक अत्यंत अर्थपूर्ण, प्रतीकात्मक और जीवन के गहरे यथार्थ को व्यक्त करने वाला है। 'आलो' का अर्थ प्रकाश तथा 'अँ' का अर्थ अंधकार है। यह शीर्षक लेखिका बेबी हालदार के जीवन के दो विपरीत पक्षों— कठिनाइयों और आशा—को दर्शाता है। उनके जीवन का प्रारंभिक भाग अंधकार से भरा हुआ था, जिसमें गरीबी, पारिवारिक उपेक्षा, बाल विवाह और घरेलू हिंसा जैसी समस्याएँ थीं। ये सभी परिस्थितियाँ उनके जीवन के 'अँ' पक्ष को प्रकट करती हैं।

लेकिन उन्होंने इन कठिनाइयों के आगे हार नहीं मानी। अपने साहस, आत्मविश्वास और संघर्ष के बल पर उन्होंने अपने जीवन को नई दिशा दी। दिल्ली में घरेलू काम करते हुए भी उन्होंने पढ़ने-लिखने की रुचि बनाए रखी और अंततः लेखन के माध्यम से अपनी पहचान स्थापित की। यह उनके जीवन का 'आलो' अर्थात् प्रकाश पक्ष है।

इस प्रकार यह शीर्षक यह संदेश देता है कि जीवन में अंधकार चाहे कितना भी गहरा क्यों न हो, आशा और प्रयास से प्रकाश अवश्य प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए 'आलो आँधारि' शीर्षक पूर्णतः सार्थक है।

2. 'आलो आँधारि' में लेखिका के जीवन-संघर्ष का वर्णन कीजिए।

उत्तर: बेबी हालदार का जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा है, जो इस रचना में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। बचपन में ही उनकी माँ उन्हें छोड़कर चली गईं, जिससे उनका जीवन असुरक्षित और दुखद हो गया। उनके पिता ने कम उम्र में ही उनका विवाह कर दिया, जहाँ उन्हें शारीरिक और मानसिक अत्याचार सहना पड़ा। यह स्थिति उनके जीवन के लिए अत्यंत कठिन थी।

इन परिस्थितियों से तंग आकर उन्होंने अपने बच्चों के साथ उस घर को छोड़ने का साहसिक निर्णय लिया। इसके बाद वे दिल्ली आई और घरेलू कामगार के रूप में काम करने लगीं। यह जीवन भी आसान नहीं था, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। उनके मालिक ने उन्हें पढ़ने और लिखने के लिए प्रेरित किया, जिससे उनके जीवन में नया मोड़ आया।

धीरे-धीरे उन्होंने अपने अनुभवों को शब्दों में व्यक्त करना शुरू किया और एक लेखिका के रूप में अपनी पहचान बनाई। उनका जीवन यह सिद्ध करता है कि दृढ़ निश्चय, साहस और निरंतर प्रयास से व्यक्ति किसी भी कठिनाई को पार कर सकता है।

3. 'आलो आँधारि' में नारी जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: 'आलो आँधारि' में नारी जीवन की अनेक समस्याओं को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। बेबी हालदार के जीवन के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि समाज में महिलाओं को कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। बाल विवाह, घरेलू हिंसा, अशिक्षा और आर्थिक निर्भरता जैसी समस्याएँ उनके जीवन का हिस्सा रही हैं।

कम उम्र में विवाह होने के कारण उनका बचपन और शिक्षा दोनों छिन गए। विवाह के बाद उन्हें अपने पति द्वारा अत्याचार सहना पड़ा, जिससे उनका जीवन और भी कठिन हो गया। इसके अतिरिक्त, समाज में महिलाओं को अक्सर स्वतंत्रता और सम्मान नहीं मिलता, जिससे वे अपनी इच्छाओं और सपनों को पूरा नहीं कर पातीं। हालाँकि, लेखिका ने यह भी दिखाया है कि यदि महिलाओं में आत्मविश्वास और साहस हो, तो वे अपनी परिस्थितियों को बदल सकती हैं। यह रचना न केवल समस्याओं को उजागर करती है, बल्कि महिलाओं को सशक्त बनने की प्रेरणा भी देती है।

4. 'आलो आँधारि' से मिलने वाली प्रेरणा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 'आलो आँधारि' एक प्रेरणादायक रचना है, जो हमें जीवन में संघर्ष करने और कभी हार न मानने की सीख देती है। बेबी हालदार ने अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी अपने आत्मविश्वास और साहस को बनाए रखा। उन्होंने यह सिद्ध किया कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों, दृढ़ निश्चय और मेहनत से सफलता प्राप्त की जा सकती है।

इस रचना से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए, बल्कि उनका सामना करना चाहिए। शिक्षा का महत्व भी इस पाठ में स्पष्ट रूप से बताया गया है, क्योंकि यही व्यक्ति के जीवन को बदलने का माध्यम बनती है।

इसके अतिरिक्त, यह पाठ हमें आत्मनिर्भर बनने और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। यह सिखाता है कि असफलताएँ हमें कमजोर नहीं बनातीं, बल्कि हमें और अधिक मजबूत बनाती हैं।

5. 'आलो आँधारि' में शिक्षा के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 'आलो' 'आलो आँधारि' में शिक्षा को जीवन परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण साधन बताया गया है। बेबी हालदार को बचपन में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला, जिससे उनका जीवन अंधकार में रहा। लेकिन बाद में उन्होंने स्वयं पढ़ना-लिखना सीखा, जिसने उनके जीवन को पूरी तरह बदल दिया।

शिक्षा ने उन्हें आत्मविश्वास दिया और अपनी भावनाओं तथा अनुभवों को व्यक्त करने की शक्ति प्रदान की। लेखन के माध्यम से उन्होंने न केवल अपनी पहचान बनाई, बल्कि समाज में सम्मान भी प्राप्त किया। यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा व्यक्ति के जीवन में प्रकाश का कार्य करती है और उसे अज्ञानता और कठिनाइयों से बाहर निकालती है। इस प्रकार यह पाठ हमें शिक्षा के महत्व को समझने और उसे अपनाने की प्रेरणा देता है, क्योंकि शिक्षा ही सफलता और आत्मनिर्भरता की कुंजी है।

6. पाठ के किन अंशों से समाज की यह सच्चाई उजागर होती है कि पुरुष के बिना स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं है? क्या वर्तमान समय में स्त्रियों की इस सामाजिक स्थिति में कोई परिवर्तन आया है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर: पाठ में ऐसे अनेक अंश हैं जिनसे ज्ञात होता है कि पुरुष के बिना स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं।

- बेबी के प्रति उसके आस-पड़ोस के लोगों का व्यवहार अच्छा नहीं था। वे सदा उससे पूछा करते कि उसका स्वामी कहाँ है? मकान मालकिन उससे पूछती कि वह कहाँ गई थी? क्यों गई थी? आदि।

- मकान मालकिन का बड़ा बेटा उसके द्वार पर आकर बैठ जाता है और इस तरह की बातें कहता है जिनका अर्थ था कि यदि वह चाहे तभी बेबी उस घर में रह सकती है।
- कुछ लोग जानबूझकर उसके स्वामी के विषय में प्रश्न पूछा करते थे, इसी बात पर उसे ताने देते या छेड़ते थे।
- जब झुगियों पर बुलडोजर चलाया गया तो सभी अपना सामान समेटकर दूसरे घरों में चले गए, पर वह अकेली बच्चों के साथ खुले आसमान के नीचे बैठी रही।

उपर्युक्त अंशों से स्पष्ट होता है कि पुरुष स्त्री पर ज्यादाती करे तो भी पूरे समाज की ज्यादातियों से बचने का एक सुरक्षा कवच तो है ही।

वर्तमान समय में स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव आया है। शिक्षा वे कानूनों के कारण स्त्रियों की आमदनी में बढ़ोतरी हुई है। अब वे अकेली रहकर भी जीवन यापन कर सकती हैं।

7. अपने परिवार से तातुश के घर तक के सफ़र में बेबी के सामने रिश्तों की कौन-सी सच्चाई उजागर होती है?

उत्तर: बेबी के अपने परिवार में माता-पिता, भाई-भाभी, बहन आदि सभी थे, पर नाम के ही थे। बिना सोचे-समझे, एक तेरह वर्ष की लड़की को अर्धेड पुरुष के साथ बाँध दिया गया। मुसीबत के समय भी भाइयों ने उसे सहारा नहीं दिया। यहाँ तक कि माँ की मृत्यु की सूचना भी नहीं दी गई। यह खून का रिश्ता रखने वाले लोगों का हाल था। इधर तातुश जैसे सहृदय मनुष्य बेबी के दुख-दर्द को समझकर उसे अपने घर में आश्रय देते हैं। उसके बच्चों की देखरेख, उनके लिए दूध, दवा, स्कूल आदि की व्यवस्था तक करते हैं। बेबी के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं। उसके बड़े बेटे को खोजकर लाते हैं। वास्तव में, उन्होंने जैसा व्यवहार किया ऐसे बहुत कम उदाहरण हैं। ये बताते हैं करुणा, दया और स्नेह के संबंध खून के रिश्तों से कहीं बढ़कर होते हैं।

8. इस पाठ से घरों में काम करने वालों के जीवन की जटिलताओं का पता चलता है। घरेलू नौकरों को और किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है? इस पर विचार करिए।

उत्तर: इस पाठ से घरेलू नौकरों के घरों में काम करने वालों के जीवन की निम्नलिखित जटिलताओं का पता चलता है –

- इन लोगों को आर्थिक सुरक्षा नहीं मिलती।
- इन्हें गंदे व सस्ते मकान किराए पर मिलते हैं क्योंकि ये अधिक किराया नहीं दे सकते।
- इनका शारीरिक शोषण भी किया जाता है।
- इनके काम के घंटे भी अधिक होते हैं।

अन्य समस्याएँ:

- आर्थिक तंगी के कारण इनके बच्चे अशिक्षित रह जाते हैं।
- चिकित्सा सुविधा व खाने के अभाव में ये अशिक्षित रहते हैं।

9. तातुश के घर में रहने के बाद बेबी के बच्चों में क्या परिवर्तन आया और क्यों?

उत्तर: तातुश के घर आने से पूर्व बेबी के बच्चे इधर-उधर भागते रहते थे। वे जरा-जरा-सी बात पर रोने-चिल्लाने लगते थे। बेवजह घूमने की-सी बातें करते थे, लेकिन अब वह सब नहीं करते थे। वे सारी आदतें छूट गई थीं। अब उनकी पढ़ाई भी ठीक चल रही थी। कई प्रकार के प्रश्न और प्रतिक्रियाएँ पहले नहीं होती थीं। इसका कारण यह था कि पहले घर-घर काम की तलाश या काम करती हुई घूमने वाली बेबी को अब अपने बच्चों के लिए समय मिलता था। बच्चों को भी अब अच्छा माहौल मिला था। वे स्कूल जाकर पढ़ाई करते और सभ्य लोगों को देखते और सुनते।

10. बेबी हालदार के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: प्रारम्भिक जीवनी बेबी हालदार के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं –

- बेबी हालदार एक अत्यंत सामान्य लड़की थी। तेरह वर्ष की आयु में जब वह सातवीं कक्षा में पढ़ती थी तो उसका विवाह अपने से दुगुनी उम्र के व्यक्ति से कर दिया गया। जीवन की सबसे संवेदनशील उम्र में वह तीन बच्चों की माँ बन गई। ज्यादातियों की वेदना जब असहनीय हो गई तो वह अपने तीनों बच्चों को लेकर घर से निकल गई।
- कठोर जीवन – परिवार छोड़ने के बाद उसे समाज की ठोकरें और झुगियों में रहकर यातनाएँ मिलीं। वह दुर्गापुर से फरीदाबाद आ गई। कुछ समय बाद वह वहाँ से भी गुड़गाँव आ गई। वह घर-घर काम-काज करती और दुनिया की उलटी-सीधी बातें मुँह और कान बंद कर सुनती रहती थी।
- तातुश का स्नेह – उसे एक ऐसे घर में काम मिला जो लोग बहुत अच्छे थे। घर के मालिक जिन्हें बेबी तातुश कहती हैं, वे देवता के समान थे। उन्होंने बेबी के मन, इच्छा और रुझान को पढ़ने-लिखने की तरफ़ मोड़ दिया। बेबी को सज्जन लोगों का साथ और उनसे जो प्रोत्साहन मिला उसने उसे लेखिका की संज्ञा दिलवाई, जो हमारे सामने एक अनुकरणीय उदाहरण है।
- स्नेहमयी माता – बेबी हालदार को अपने बच्चों के भविष्य की चिंता रहती थी। वह तातुश की मदद से बच्चों को स्कूल भेजती हैं। अपने बड़े लड़के के लिए वह व्याकुल रहती थी जो किसी के घर में घरेलू नौकर था। तातुश उसे घर लाते हैं।

11. बेबी की जिंदगी में तातुश का परिवार न आया होता तो उसका जीवन कैसा होता? कल्पना करें और लिखें।

उत्तर: बेबी के जीवन में तातुश एक सौभाग्य की भाँति हैं। तातुश जैसे लोग सबको नहीं मिलते। यदि वे बेबी के जीवन में न आते तो बेबी स्वयं कभी अपनी क्षमता को पहचान न पाती। उसी गलीच माहौल में बेबी नरक भोगती रहती, घर-घर झाड़-बरतन करती घूमती रहती। जो लोग उसे बुरी नजर से देखते थे उनका शिकार हो जाती। उसके बच्चे कभी स्कूल का मुँह न देख पाते और शायद उससे सदा के लिए बिछुड़ जाते। उसका बड़ा बेटा कहाँ काम कर रहा है, यह तातुश ही तो। खोज लाए थे। वह भी घृणास्पद अज्ञात कुचक्र के-से जीवन में कहीं खोकर रह जाती। हमें उसकी आत्मकथा पढ़ने का अवसर न मिल पाता।

12. तुम दूसरी आशापूर्णा देवी बन सकती हो-जेठू का यह कथन रचना संसार के किस सत्य को उद्घाटित करता है?

उत्तर: रचना संसार और इसमें रहने वाले लोगों की अपनी एक अलग ही जीवन-शैली है। ये लोग लेखन कार्य के लिए सारी सारी रात जाग सकते हैं, जागते हैं। तुम दूसरी आशापूर्णा देवी बन सकती हो'-जेठू का यह कथन बेबी को यही बात समझाने के लिए था। जेठू ने यह भी समझाया था कि आशापूर्णा देवी भी सारा काम-काज निबटाकर रात-रात भर चोरी-चोरी लिखती थी, जब लोग सो जाते थे। यह सच है रचना संसार में लेखन का एक नशा होता है, जैसा मुंशी प्रेमचंद को भी था, जो कई मील पैदल चलकर आते, खाने-पीने का ठिकाना न था, फिर भी डिबरी की रोशनी में कई-कई घंटे बैठकर लेखन कार्य करते थे। ऐसी ही बेबी हालदार ने भी किया। जब सारी झुगगी बस्ती सो जाती तो वह लेखन कार्य करती रहती थी।

13. 'बेबी के लिए तातुश के हृदय में माया है।'—स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: तातुश ने बेबी को काम पर रखा। वे उसके बच्चों के बारे में पूछते हैं तथा उन्हें स्कूल में भेजने के लिए उसे प्रेरित करते हैं। वे बच्चों के स्कूल में प्रवेश के लिए बेबी की मदद करते हैं। जब बेबी उन्हें दूसरे घर में काम तलाशने के लिए कहती तो वे उसे दूसरी कोठी में काम न करने की सलाह देते थे। वे कहते हैं तो कुछ ना थे, परन्तु कुछ ऐसा सोचा करते थे कि बेबी को महसूस होता था कि वे बेबी के प्रति माया रखते हैं, कभी कभी वह बर्तन पोछ रहे होते थे तो कभी जाले ढूँढ रहे होते थे।

आदर्श

प्रश्न पत्र

अभ्यास

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र (सेट 1)

कक्षा 11 हिंदी (कोर)

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 80

सामान्य निर्देश

1. प्रश्न-पत्र तीन खंडों खंड 'क', 'ख' और 'ग' में है।
2. खंड-'क' में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न है। सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
3. खंड-'ख' में अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर प्रश्न है। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प है।
4. खंड-'ग' में आरोह भाग-1 एवं वितान भाग-1 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर प्रश्न है। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प है।

खंड 'क' अपठित बोध

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(10)

महात्मा गाँधी उस महान् व्यक्ति का नाम है, जो हिंसा को अहिंसा से, घृणा को प्रेम से और अविश्वास को विश्वास से जीतने में यकीन रखते थे। आज गाँधीजी तो नहीं है, लेकिन उनके विचार एवं क्रियात्मक योगदान 21 वीं शताब्दी में भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने पहले थे। महात्मा गाँधी ने जनभावना को महत्त्व देकर और परंपरागत राष्ट्रवाद को परिष्कृत कर 21वीं सदी के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया। विभिन्न समुदायों के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए उन्होंने विविध प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। गाँधीजी की विचारधारा परंपरागत राष्ट्रीयता से ऊपर थी। उनका राष्ट्रधर्म वैश्विक था। वे भारतीय संस्कृति से प्रभावित होते हुए भी वेदों में अभिव्यक्त संपूर्ण पृथ्वी के बंदन में विश्वास करते थे- 'माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्याः।' गाँधीजी ने राष्ट्रवाद को भारतीय चिंतन के अनुरूप वैश्विक बनाकर संकटग्रस्त विश्व को एक नई दिशा प्रदान की। गांधीवाद के अंतर्गत सर्वधर्म समभाव की नीति की प्रासंगिकता आज स्पष्ट है। सर्वधर्म समभाव का विचार आज एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक अनिवार्यता बन चुका है। धर्म तो व्यक्तिगत आस्था का विषय है। उसे सामाजिक स्तर पर लाने के लिए 'सर्वधर्म समभाव' तक आना ही होगा। धार्मिक कट्टरता आज हमें आण्विक आतंकवाद की दहलीज पर पहुँचा चुकी है। ऐसी विषम परिस्थिति में ही स्वामी विवेकानंद ने 'विश्व धर्म' एवं गुरुदेव रवींद्रनाथ ने 'मानव धर्म' की संकल्पना की थी। यदि विज्ञान सार्वभौमिक हो सकता है, तो धर्म भी सार्वभौमिक होना चाहिए, क्योंकि किसी भी धर्म को श्रेष्ठ समझने का अर्थ है, दूसरे धर्म को हीन समझना नहीं। गाँधीजी ने इस तथ्य को समझाते हुए धर्म को वैश्विक एवं सार्वभौमिक बनाने की कोशिश की। आज के उत्तर-आधुनिक समाज में भी संकुचित सांप्रदायिक विचारधारा एवं अंध कट्टरतावाद को कैसे स्वीकार किया जा सकता है?

धर्म को सिर्फ नैतिकता का पर्याय मानना चाहिए। आज के वैश्विक संकट का एक प्रमुख कारण सिद्धांतविहीन राजनीति है। मैकियावेली की नीति से असहमत होते हुए गाँधीवाद के अंतर्गत राजनीति में माधन शुद्धि का समावेश कर राजनीति को एक नया आयाम प्रदान किया गया। गाँधीजी ने अन्याय का प्रतिकार करने के लिए शस्त्र के स्थान पर निःशस्त्र वीरता को प्रदर्शित किया। अहिंसक प्रतिकार को सामूहिक रूप प्रदान कर उसे अत्यधिक शक्तिशाली हथियार बना दिया। आज सभी लोकतांत्रिक समाजों में इस शक्तिशाली हथियार का सर्वाधिक उपयोग होता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

- I. विभिन्न समुदायों के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए गाँधीजी ने क्या किया? (1)
- (क) विविध विचारकों के विचार प्रस्तुत किए (ख) भारतीय संस्कृति का महत्व उजागर किया
- (ग) विभिन्न प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किए
- (घ) अहिंसा पर बल दिया

- II. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए (1)

कथन I. गाँधीजी का राष्ट्र धर्म वैश्विक था।

कथन II. गाँधी की विचारधारा परंपरागत राष्ट्रीयता पर आधारित थी।

कथन III. धर्म को सामाजिक स्वरूप प्रदान करने के लिए सर्वधर्म समभाव का विचार अपनाना चाहिए।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (क) केवल I (ख) केवल III
- (ग) I और II (घ) I और III

- III. निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए (1)

कथन (A) गाँधीजी अन्याय का प्रतिकार करने के लिए निःशस्त्र वीरता के पक्षधर थे।

कारण (R) गाँधीजी हिंसा को अहिंसा से जीतने में विश्वास रखते थे।

कूट

- (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है
- (ख) कथन (A) सही नहीं है, परंतु कारण (B) सही है
- (ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं
- (घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, परन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

- IV महात्मा गाँधी ने 21वीं सदी के लिए एक आदर्श कैसे प्रस्तुत किया? (1)

लघु उत्तरीय प्रश्न

- V. 'माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्याः' गाँधीजी द्वारा कहे गए इस कथन का क्या अभिप्राय है? (2)
- VI. आज सभी लोकतांत्रिक समाजों में किस शक्तिशाली हथियार का सर्वाधिक उपयोग होता है? (2)
- VII. गाँधी जी ने विभिन्न समुदायों के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए क्या किया? (2)

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (8)

वो नहीं हो सके पूर्ण काम मैं उनको करता हूँ प्रणाम ! कुछ कुंठित औ' कुछ लक्ष्य-भ्रष्ट जिनके अभिमंत्रित तीर हुए रण की समाप्ति के पहले ही जो बीर रिक्त-तूणीर हुए - उनको प्रणाम ! जो छोटी-सी नैया लेकर उतरे करने को उदधि-पार मन की मन में ही रही, स्वयं हो गए उसी में निराकार - उनको प्रणाम !	जो उच्च शिखर की ओर बढ़े रह-रह नव-नव उत्साह भरे पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि कुछ असफल ही नीचे उतरे - उनको प्रणाम ! कृत-कृत्य नहीं जो हो पाए प्रत्युत फाँसी पर गए झूल कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी यह दुनिया जिनको गई भूल उनको प्रणाम ! थी उम्र साधना, पर जिनका जीवन नाटक दुखांत हुआ:	या जन्म-काल में सिंह लग्न पर कुसमय ही देहांत हुआ। उनको प्रणाम ! दृढ़ व्रत औ' दुर्दम साहस के जो उदाहरण थे मूर्ति-मंत? पर निरवधि बंदी जीवन ने जिनकी धुन का कर दिया अंत ! उनको प्रणाम ! जिनकी सेवाएँ अतुलनीय पर विज्ञापन से रहे दूर प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके कर दिए मनोरथ चूर-चूर! -उनको प्रणाम !
--	---	---

बहुविकल्पीय प्रश्न

I. समाज किन लोगों को भुला चुका है? (1)

1. देश की स्वतंत्रता के लिए समाज की भलाई के लिए प्राणों को दाँव पर लगाने वालों को
2. समाज में खूब धन कमाने वालों को
3. वीर, प्रतापी राजाओं को
4. माता-पिता का आदर सम्मान करने वालों को

सही विकल्प का चयन करें

(क) केवल 1

(ख) 1 और 2

(ग) 2 और 3

(घ) ये सभी

II. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए। (1)

सूची I

- A. लक्ष्य-सष्ट
- B. रिक्त-तुणीर
- C. मूर्ति-मंत

सूची II

- 1. देवतातुल्य
- 2. विचलित व्यक्ति
- 3. अस्त्र-शस्त्र रहित

कूट

	A	B	C
(क)	3	1	2
(ग)	1	2	3

	A	B	C
(ख)	1	3	2
(घ)	2	3	1

III. हिम समाधि से अभिप्राय है (1)

- (क) बर्फ पर बैठकर तपस्या करना
- (ग) अपनी जान गवाना

- (ख) बर्फ में जम जाना
- (घ) ये सभी

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न (1)

IV. कवि किन लोगों को प्रणाम कर रहा है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

V. उच्च शिखर की ओर बढ़ने वालों के भाव कैसे होते थे। (2)

VI. छोटी-सी नौका से सागर पार करने की कोशिश करने वालों का क्या महत्त्व है? (2)

खंड 'ख' अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक

3. निम्न में से किसी एक विषय पर रचनात्मक लेखन कीजिए। (6)

- (क) "पुस्तके मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र
- (ख) मेरा प्रिय टाइम पास
- (ग) मरे संग की औरते

4. दिल्ली विद्युत बोर्ड में कंप्यूटर ऑपरेटर के कुछ पद रिक्त है। अपनी योग्यताओं का उल्लेख करते हुए इस पद पर नियुक्ति के लिए आवेदन-पत्र लिखिए। (5)

अथवा

अपने क्षेत्र में फैली गन्दगी की साफ-सफाई हेतु नगर निगम के अधिकारी को पत्र लिखिए

5. (क) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए। 4 × 2 = (8)

- (क) डायरी लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
- (ख) पटकथा का स्रोत कहाँ से प्राप्त होता है?
- (ग) स्ववृत्त के कितने पक्ष होते हैं?
- (घ) विश्वज्ञान कोश से क्या आशय है?
- (ङ) कार्य सूची या एजेंडा क्या है?

5. (ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए। 3 × 1 = (3)

- (क) आवेदन-पत्र से क्या आशय है?
- (ख) आवेदन-पत्र के उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।

खंड 'ग' आरोह भाग-1 एवं वितान भाग-1

6. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए। (5)

चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती
मैं जब पढ़ने लगता हूँ यह आ जाती है
खड़ी खड़ी चुपचाप सुना करती है
उसे बड़ा अचरज होता है:
इन काले चीन्हों से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं

(i) चंपा कौन है? (1)

- (क) कविता में चंपा कवि की पत्नी है (ख) चंपा एक निरक्षर गाँव की लड़की है
- (ग) चंपा एक पढ़ी-लिखी गाँव की लड़की है (घ) चंपा एक निरक्षर शहर की लड़की है

(ii) कवि के अनुसार, चंपा क्या नहीं जानती? (1)

- (क) वह अक्षरों का महत्व नहीं जानती (ख) वह आदमी का महत्त्व नहीं जानती
- (ग) वह किताबों को नहीं पहचानती (घ) यह गाँधी जी को नहीं जानती

(iii) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए। (1)

कथन (A) चंपा पढ़ना चाहती है।

कारण (R) चंपा को कवि को पढ़ते देख आश्चर्य होता है।

- (क) कथन (A) सही है, किन्तु कारण (R) गलत है
- (ख) कथन (A) गलत है, किन्तु कारण (B) सही है

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, परंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, परंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है

(iv) चंपा को क्या आश्चर्य होता है? (1)

- (क) काले अक्षरों में इतने स्वर कैसे छिपे हैं (ख) कवि कैसे पढ़ता है
(ग) ये अक्षर लिखे कैसे हैं (घ) इनमें से कोई नहीं

(v) 'अच्छर' शब्द है? (1)

- (क) तत्सम शब्द (ख) ग्राम्य शब्द
(ग) शहरी शब्द (घ) विदेशज शब्द

7. काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए। $2 \times 3 = (6)$

- (क) 'सबसे खतरनाक' कविता के आधार पर बताइए कि सपनों का मर जाना क्यों खतरनाक है?
(ख) लेखक, चंपा को क्या कहकर पढ़ने के लिए प्रेरित करता है? 'चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।
(ग) मीरा संसार को देखकर क्यों रोती है?

8. काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए। $2 \times 2 = (4)$

- (क) कबीर की दृष्टि में किन लोगों को आत्मबोध नहीं होता?
(ख) कवि ने स्वयं को अभाजा क्यों कहा है? घर की याद पाठ के आधार पर बताइए।
(ग) हे मोह! पाश अपने ढील पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

9. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए। (5)

हाँ ! कॉपी लौटाते हुए कहा था कि तुमने किया तो अच्छा है पर यह तो हाफ-ईयरली है... बहुत आसान पेपर होता है इसका तो । अब अगर ईयरली में भी पूरे नंबर लेने हैं तो तुरंत ट्यूशन लेना शुरू कर दो । वरना रह जाओगे। सात लड़कों ने तो शुरू भी कर दिया था। पर मैंने जब मम्मी-पापा से कहा, हमेशा बस एक ही जवाब (मम्मी की नकल उतारते हुए) मैथम में तो तू वैसे ही बहुत अच्छा है, क्या करेगा ट्यूशन लेकर? देख लिया अब? सिकस्थ पोजीशन आई है मेरी। जो आज तक कभी नहीं आई थी।

(अमित की आँखों से फिर आँसू टपक पड़ते हैं।)

(i) अमित के अध्यापक उसे क्या कह रहे थे ? (1)

- (क) ट्यूशन लगाने के लिए (ख) और अधिक पढ़ने के लिए
(ग) गणित पर ध्यान देने के लिए (घ) इनमें से कोई नहीं।

(ii) गद्यांश के अनुसार, कितने लड़कों ने ट्यूशन लेना शुरू भी कर दिया था? (1)

- (क) आठ (ख) दस
(ग) बारह (घ) सात

(iii) अमित की मम्मी ने उसे गणित का ट्यूशन लगाने से मना क्यों किया? (1)

(क) घर में ट्यूशन के लिए अधिक पैसे नहीं थे (ख) क्योंकि अमित गणित में होशियार था

(ग) क्योंकि अमित गणित में अच्छे अंक नहीं लाया था (घ) ये सभी

(iv) सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए (1)

सूची I

- A. हाफ ईयरली
B. बहुत आसान पेपर होता
C. सिक्स्थ पोजीशन

सूची II

1. गणित का
2. अर्धवार्षिक
3. छठी श्रेणी

कूट

A B C
(क) 3 1 2

(ग) 1 2 3

A B C
(ख) 1 3 2

(घ) 2 1 3

(v) 'तुरंत' का पर्यायवाची होगा (1)

(क) त्वरित

(ग) कभी

(ख) अत्यंत

(घ) सर्वदा

4. गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए।

2×3=(6)

(क) 'रजनी' पाठ के आधार पर वर्तमान शिक्षा पद्धति पर टिप्पणी कीजिए।

(ख) शिवशंभु की दो गायों की कहानी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

(ग) जवाहरलाल नेहरू अपने गाँवों और शहरों के भाषणों में क्या अंतर रखते थे?

5. गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए।

2×2=(4)

(क) 'नमक का दारोगा' कहानी के आधार पर वंशीधर का चरित्र चित्रण कीजिए।

(ख) मियाँ नसीरुद्दीन शब्द चित्र में निहित संदेश को स्पष्ट कीजिए।

(ग) लॉर्ड कर्जन मूलतः जलन विरांधी व सिद्ध कीजिए।

12. वितान के पाठों पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए।

2×5=(10)

(क) कुई, कुँएँ से किस प्रकार भिन्न होती है तथा कुई कहाँ-कहाँ पाई जाती है?

(ख) एक दिन बेबी अपने घर पर किस समस्या में फँस गई? उसने इस समस्या के समाधान के लिए क्या सोचा?

(ग) लता की लोकप्रियता का मुख्य रहस्य क्या है?

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र (सेट 2)
कक्षा 11 हिंदी (कोर)

समय: 3 घंटे

पूर्णांक: 80

सामान्य निर्देश

1. प्रश्न-पत्र तीन खंडों खंड 'क', 'ख' और 'ग' में है।
2. खंड-क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न है। सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
3. खंड-ख में अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर प्रश्न है। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प है।
4. खंड-ग में आरोह भाग-1 एवं वितान भाग-1 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर प्रश्न है। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प है।

खंड- क (अपठित बोध) – 18 अंक

प्रश्न 1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए - 10 अंक

एक युवा अपने जोश और ताकत से पूरी तरह ओत-प्रोत होता है। युवा पीढ़ी किसी भी समाज और देश की रीढ़ की हड्डी होती है। किसी भी देश के युवा ही उस देश का भविष्य तय करते हैं। इसकी बानगी हम स्वाधीनता संग्राम में देख चुके हैं। युवा की सबसे बड़ी खासियत है कि वह फौलादी जिगर दृढ़ इच्छा शक्ति जोखिम लेने की क्षमता, और कुछ नया करने की ललक रखते हैं। जब युवाओं की बात हो तो भला स्वामी विवेकानंद को कौन भूल सकता है, जो आज भी दुनिया के लाखों युवाओं के प्रेरणास्रोत हैं। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि युवा ही राष्ट्र की वास्तविक शक्ति है। युवाओं को अवसर दिए बिना कोई भी देश प्रगति नहीं कर सकता है। आज भारत को हम सबसे युवा देश कह सकते हैं, वह इसलिए नहीं कि देश अभी-अभी आजाद हुआ है बल्कि इसलिए क्योंकि इस समय भारत में युवा वर्ग की जनसंख्या पूरे विश्व के देशों से अधिक है। युवा की विशेषता यही है कि उसके काम में तेजी, फुरती, और एक नया जोश है, उसमें ऊर्जा की भरमार है। पर हाँ, यह नहीं कि युवाओं से बड़े, जिन्हें हम बुजुर्ग कह सकते हैं, उनकी ज़रूरत नहीं है, ऐसा कहना उचित नहीं है। बुजुर्ग भी देश के विकास के लिए उतने ही ज़रूरी हैं जितने युवा। इन दोनों के ताल-मेल से बड़े-से-बड़े कार्य को जल्द-से-जल्द और एक बेहतर तरीके से कर सकते हैं। बड़े-बुजुर्ग अपने अनुभव और युवा अपनी ऊर्जा का उपयोग कर देश को नई उपलब्धि दिला सकते हैं। पर देश का दुर्भाग्य ही समझो कि युवा और बुजुर्गों के ताल-मेल में कमी आ रही है। हमारी संस्कृति जिसमें इन युवाओं को अपने बुजुर्गों से सीखना चाहिए वे उनसे दूर होते जा रहे हैं। आज का आधुनिकीकरण दोनों वर्गों में जैसे दीवार बन गया हो। अब वक्त आ गया है कि युवा सक्रिय राजनीति में प्रवेश करें क्योंकि हमारी राजनीति बूढ़ी हो गई है और यह हमारे देश की अपेक्षा को पूरा नहीं कर सकती। भ्रष्टाचार को लगाम लगाने के लिए युवाओं को अब तैयार होना होगा। युवाओं को एक ज़िम्मेदार नागरिक बनना होगा। पढ़े-लिखे, ज़्यादातर युवा राजनीति से दूरी बनाए रखते हैं, लेकिन कमल तोड़ना है तो कीचड़ में उतरना ही होगा। ठीक उसी प्रकार राजनीति में आए बिना राजनीति को शुद्ध करना संभव नहीं है। अतः मैं चाहता हूँ कि युवा राजनीति में प्रवेश करें। सभी देश के संसाधनों का सही इस्तेमाल होगा और तब जाकर कहीं शोषित-वंचित वर्ग को उनका हक मिल सकता है।

अतः आज के युवाओं को अपनी ज़िम्मेदारी समझनी चाहिए और कोई भी काम व्यक्तिगत लाभ की बजाय समाज तथा देश हित में करना चाहिए। परिवार से समाज बनता है और समाज से देश बनता है। आज की युवा पीढ़ी की अपने परिवार की ओर उदासीनता देख मेरा मन काफी व्यथित होता है। माँ-बाप सीमित संसाधनों में भी अपने

बच्चों को तमाम सुख-सुविधा देने का भरसक प्रयास करते हैं, परंतु माँ-बाप का बोझ आज की हमारी युवा पीढ़ी नहीं उठा पा रही है। यह बड़े ही शर्म की बात है जिसने हमारी दुनिया को सजाया हो उसे हम युवा वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं। उनकी कुछ बुनियादी ज़रूरतों को भी पूरा नहीं कर पाते। और अगर एक युवा इतना भी नहीं कर सकता तो वह युवा-पीढ़ी के लिए शर्म की बात है। अतः हमारे युवाओं को अपने परिवार के प्रति संवेदनशील और ज़िम्मेदार बनाना ही होगा। मैं तो सोचता हूँ कि युवा पीढ़ी के रहते वृद्धाश्रम बनाना ही बड़े शर्म की बात है। समाज में हो रहे अन्याय के खिलाफ़ आवाज़ उठाना ही सामाजिक ज़िम्मेदारी है। अर्थात् एक स्वस्थ समाज की संकल्पना तभी पूरी हो सकती है, जब हर युवा व्यक्ति ईमानदारी से अपने परिवार, समाज और देश के प्रति छोटी-छोटी ज़िम्मेदारियों को पूरा करेगा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

i) भारत को 'युवा भारत' क्यों कहा जाता है?

1

- क) स्वतंत्रता प्राप्ति को अभी बहुत समय न होने के कारण
- ख) भारत की जनसंख्या विश्व में बहुत अधिक होने के कारण
- ग) भारत में युवाओं की संख्या अधिक होने के कारण
- घ) देश के विकास में युवाओं की सहभागिता अधिक होने के कारण

ii) युवा पीढ़ी को किसी भी देश की 'रीढ़ की हड्डी' क्यों कहा गया है?

1

- क) उसे दृढ़ता प्रदान करने की शक्ति के कारण
- ख) उसका भविष्य निर्माता होने के कारण
- ग) उसकी स्वतंत्रता की रक्षा करने के कारण
- घ) जोश और ताकत से ओत-प्रोत होने के कारण

iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए -

1

- 1- युवाओं को जोश और बुजुर्गों का संयम देश को नई उपलब्धि दिलवा सकता है
 - 2- युवाओं की ऊर्जा और बुजुर्गों का अनुभव देश को नई उपलब्धि दिलवा सकता है
 - 3- युवाओं की गति और बुजुर्गों का प्रबंधन देश को नई उपलब्धि दिलवा सकता है
 - 4- युवाओं की फुरती और बुजुर्गों का धैर्य देश को नई उपलब्धि दिलवा सकता है
- उपरोक्त कथनों में से कौन सा / से सही है / हैं ?

- क) केवल 1
- ख) केवल 2
- ग) 1 और 3
- घ) 3 और 4

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

iv) युवाओं और बुजुर्गों के बीच बढ़ती खाई का क्या कारण है ?

1

लघुत्तरात्मक प्रश्न

v) विवेकानंद जी की दृष्टि में युवाओं के लिए शर्म की बात क्या है?

2

vi) 'कमल तोड़ना है तो कीचड़ में उतरना ही होगा' का आशय है।

2

vii) एक स्वस्थ समाज की संरचना के लिए क्या आवश्यक है।

2

प्रश्न 2. निम्नलिखित अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए – 08 अंक

थकी-हारी लौटी है वो ऑफिस से अभी
टिफिन बॉक्स को रसोई में रखती है
मुँह पर पानी के छीटे मारती है
बाहर निकल आई लट को वापस खोंसती है
बालों में
आँखों को हौले से दबाती है हथेलियों से
उठती है और रसोईघर की ओर जाने को होती है
मैं कहता हूँ, बैठो, तुम, आज मैं चाय बनाता हूँ!
मेरी आवाज़ की नोक मुझी को चुभती है।
गैस जलाकर चाय का पानी चढ़ाता हूँ
दूसरे ही पल आवाज़ लगाता हूँ
सुनो शक्कर किस डिब्बे में रखी है
और चाय की पत्ती कहाँ है?
साड़ी का पल्लू कमर में खोंसती हुई वो आती है
मुझे हटाते हुए कहती है— हटो, तुम्हें नहीं मिलेगी कोई चीज़।
होठों को तिरछा करती अजीब ढंग से मुसकराती है
मुश्किल है कि मुसकराहट का ठीक-ठीक अर्थ
समझ पाना
जैसे कहती हो यह मेरी सृष्टि है
तुम नहीं जान पाओगे कभी
कि किन बादलों में रखी है बारिशें, किनमें रखा है कपास
कोई डिब्बा खोलते हुए कहती है:
यह तो मैं हूँ कि अबेर रखा है सब कुछ
वरना तुम तो ढूँढ़ नहीं पाते अपने आपको
जाओ बाहर जाकर टी•वी•देखो
एक काम पूरा नहीं करोगे और फैला दोगे
मेरी पूरी रसोई !

बहुविकल्पीय प्रश्न

i) प्रस्तुत कविता का वर्ण्य विषय है—

1

- क) भारतीय समाज की पुरुषवादी सोच का वर्णन
- ख) चाँद तक पहुँचने वाली महिला की वास्तविक स्थिति का वर्णन
- ग) भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति का वर्णन
- घ) कामकाजी महिलाओं की स्थिति का वर्णन

ii) 'मेरी आवाज़ की नोक मुझी को चुभती है'— आशय है— 1

क) पति को अपनी आवाज़ नोक जैसी लगती है।

ख) पति को अपनी तीखी आवाज़ अच्छी नहीं लगती।

ग) पति को अपनी ही भारी-भरकम आवाज़ चुभती है।

घ) पति को अपनी ही आवाज़ व्यंग्यपूर्ण लगती है।

iii) 'यह तो मैं हूँ कि अबेर रखा है सब कुछ'— पत्नी ने क्या अबेर रखा है? 1

क) रसोईघर की ज़िम्मेदारी

ख) बच्चों और पति की ज़िम्मेदारी

ग) घर और बाहर की ज़िम्मेदारी

घ) पूरी गृहस्थी की ज़िम्मेदारी

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

iv) 'महिला द्वारा पल्लू कमर में खोंसना'— का अर्थ है- 1

लघुत्तरात्मक प्रश्न

v) 'किन बादलों में रखी बारिशें, किनमें रखा है कपास' का क्या अभिप्राय है? 2

vi) 'तुम तो ढूँढ नहीं पाते अपने आपको' से क्या तात्पर्य है? 2

खंड – ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्य पुस्तक के आधार पर) – 22 अंक

प्रश्न 3. दिए गए तीन अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन कीजिए - 06

क) अकेलेपन के शिकार बुजुर्ग

ख) आधुनिक जीवन शैली और तनाव

ग) समाचार पत्र – ज्ञान का भंडार

प्रश्न 4. नगरों में बढ़ते हुए ध्वनि – प्रदूषण से उत्पन्न समस्याओं का उल्लेख करते हुए किसी हिंदी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। 5

अथवा

अपने मोहल्ले में वर्षा के कारण उत्पन्न हुए जल-भराव की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए नगरपालिका अधिकारी को पत्र लिखिए।

प्रश्न 5 (क). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए- $2 \times 4 = 8$

- i) वाचडाग पत्रकारिता से क्या आशय है ?
- ii) जनसंचार के किन्हीं दो कार्यों पर प्रकाश डालिए।
- iii) फीडबैक से क्या तात्पर्य है, तथा संचार का बाधक तत्व किसे मानते हैं ?
- iv) विद्यालय में हुए हिंदी पखवाडा पुरस्कार वितरण समारोह का कार्यवृत्त तैयार कीजिए।
- v) स्ववृत्त में किन प्रमुख बिन्दुओं को शामिल किया जाता है ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए। 3

- i) डायरी लेखन में किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ?
- ii) शब्दकोश से क्या तात्पर्य है तथा उसका उपयोग बताइए ?

खंड – ग (आरोह भाग – 1 एवं वितान भाग -1 पाठ्य पुस्तकों के आधार पर) 40 अंक

प्रश्न 6. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए – $5 \times 1 = 5$

पाँचवाँ मैं हूँ अभागा,
जिसे सोने पर सुहागा,
पिताजी कहते रहे हैं,
प्यार में बहते रहे हैं,
आज उनके स्वर्ण बेटे,
लगे होंगे उन्हें हेटे,
क्योंकि मैं उन पर सुहागा,
बँधा बैठा हूँ अभागा,

i) कवि के पिता अपने चारों पुत्रों को क्या मानते थे?

क) सोना ख) अभागा ग) सुहागा घ) ताँबा

ii) कवि कारावास में होने के कारण स्वयं को क्या कहता है?

क) भाग्यशाली ख) भाग्यहीन ग) अभागा घ) (ख) और (ग) दोनों

iii) कवि ने इस अवतरण में 'सुहागा' शब्द किसके लिए प्रयोग किया है?

क) भाइयों के लिए ख) स्वयं के लिए

ग) माँ के लिए घ) उपर्युक्त सभी के लिए

iv) किसकी स्मृतियाँ कवि को आहत करती हैं?

क) माँ की ख) पिता की ग) भाइयों की घ) बहन की

v) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन – (A) कवि के पिता उसे सोने पर सुहागा कहते थे ?

कारण – (R) वह कवि को अपने बेटों में सबसे अच्छा मानते थे।

क) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

ख) कथन (A) सही नहीं है, किंतु कारण (R) सही है।

ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं करता।

घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, तथा कारण (R) उसकी सही व्याख्या करता है।

प्रश्न 7. काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए - 2×3=6

क) कबीर की दृष्टि में ईश्वर एक है। इसके लिए उन्होंने क्या तर्क दिया है?

ख) गजल के पहले शेर में चिराग शब्द एक बार बहुवचन में आया है और दूसरी बार एकवचन में। अर्थ की दृष्टि से इसका क्या महत्त्व है?

ग) अक्क महादेवी स्वयं को निरीह और बेचारा क्यों बनाना चाहती हैं?

प्रश्न 8. काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए- 2×2=4

क) प्रेम की प्राप्ति के लिए मीरा ने किन-किन कठिनाइयों का सामना किया होगा? स्पष्ट कीजिए।

ख) चंपा ने ऐसा क्यों कहा कि कलकत्ता पर बजर गिरे?

ग) 'आओ, मिलकर बचाएँ' कविता के आधार पर 'जीवन की गर्माहट' और 'मन का हरापन' का आशय स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 9. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए – 5 × 1 = 5

जब नमक का नया विभाग बना और ईश्वर-प्रदत्त वस्तु के व्यवहार करने का निषेध हो गया तो लोग चोरी-छिपे इसका व्यापार करने लगे। अनेक प्रकार के छल-प्रपंचों का सूत्रपात हुआ, कोई घूस से काम निकालता था, कोई चालाकी से। अधिकारियों के पौ-बारह थे। पटवारीगिरी का सर्वसम्मानित पद छोड़-छोड़कर लोग इस विभाग की बरकंदाजी करते थे। इसके दारोगा पद के लिए तो वकीलों का भी जी ललचाता था। उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे। समझाने लगे-बेटा! घर की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। मैं कगारे का वृक्ष हो रहा हूँ, न मालूम कब गिर पड़ूँ। अब तुम्हीं घर के मालिक-मुख्तार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आए हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है।

(i) पाठ और लेखक का नाम बताइए।

क) मियाँ नसीरुद्दीन और कृष्णा सोबती ख) गलता लोहा और शेखर जोशी

ग) नमक का दारोगा और प्रेमचंद घ) जामुन का पेड़ और कृष्ण नाथ

(ii) ईश्वर-प्रदत्त वस्तु किसे कहा गया है?

क) हवा और पानी ख) छल-प्रपंच ग) नौकरी में ओहदा घ) नमक

(iii) अधिकारियों के पौ-बारह क्यों थे?

क) रिश्वत के कारण ख) सर्वसम्मानित पद के कारण

ग) मालिक-मुख्तार होने के कारण घ) अनुभवी होने के कारण

(iv) नौकरी को पीर का मज़ार क्यों कहा गया है?

क) अच्छा वेतन मिलने के कारण ख) मज़ार पर नौकरी करने के कारण

ग) कगार का वृक्ष होने के कारण घ) ऊपरी आमदनी होने के कारण

(v) सूची i को सूची ii से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए –

सूची i

सूची ii

A ऊपरी आय

1. पूर्णमासी का चाँद

B मासिक वेतन

2. बहता हुआ स्रोत

C. नौकरी में ओहदा

3. पीर का मज़ार

क) 1-3-2 ख) 3-1-2 ग) 1-2-3 घ) 2-1-3

प्रश्न 10. गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए - 2×3=6

क) पाथेर पांचाली फिल्म की शूटिंग करते समय फ़िल्मकार को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा ?

ख) 'रजनी' पाठ में हेडमास्टर के कथन 'ट्यूशन पढ़ना – पढ़ाना छात्र और अध्यापक का मामला है' –आप इस तर्क से कहाँ तक सहमत हैं ?

ग) लार्ड कर्जन को इस्तीफा क्यों देना पड़ा ?

प्रश्न 11. . गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए - 2×2=4

क) मोहन धनराम के पास क्यों गया था और उसने वहाँ मर्यादा के विरुद्ध कौन-सा काम किया था?

ख) मियाँ नसीरुद्दीन को नानबाइयों का मसीहा क्यों कहा गया है?

ग) 'जामुन का पेड़' पाठ में हार्टीकल्चर विभाग के सेक्रेटरी के उत्तर को व्यंग्यपूर्ण क्यों कहा गया है ?

प्रश्न 12. वितान के पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। 5×2= 10

क) लेखक ने लता मंगेशकर की गायकी की किन विशेषताओं को उजागर किया है ?

ख) राजस्थान में पानी के कितने रूप हैं ? उनका वर्णन कीजिए।

ग) 'आलो – आँधारि' पाठ में लेखिका को किराए पर अकेले रहते देखकर लोग उससे कैसा व्यवहार करते हैं ? क्या आप इसे उचित मानते हैं ?

*****समाप्त*****